

NOT FOR SALE

भुवनेश्वरी महाविद्या विशेषांक

जून 2008

मूल्य : 18/-

मंत्र-तंत्र-संग्रह

विज्ञान

नृसिंह लक्ष्मी तंत्र

लक्ष्य प्राप्ति : शुरु कृपा

शुक्र नवरात्रि : तांत्रिक पर्व

त्रैलोक्य मंथल भुवनेश्वरी कवच



मौतिक जीवन की समस्याएँ : निदान शिव प्रयोग





COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

[creator of
hinduism
server]

जो युग-पुरुष हैं, जो चेतनाप्रश्न हैं, जो जीवित हैं, जाग्रत हैं, चैतन्य हैं,

उनकी यही नियति होती है कि
वे विष पीकर भी अमाज को
अपने अमृत वर्चनों से चेतना देते हैं
अमृत वर्चनों से लिंगत,
सद्गुरुलदेव की अमृत वाणी में ये

ऑडियो/वीडियो सी.डी जिन्हें आप सुनिये बार-बार

आँडियो कैसेट/सी.डी

- ◆ गुरु मुख्यी स्तोत्र
- ◆ भजन कुछ कर ले
- ◆ नारायण नारायण
- ◆ सदगुरुदेव
- ◆ भजन सागर
- ◆ तू व्यापक डाली डाली है
- ◆ ध्यान योग
- ◆ गुरु हमारी जाति
- ◆ अब तो जाग
- ◆ कुबेर पति शिव शक्ति साधना
- ◆ पारदेश्वर शिवलिंग पूजन
- ◆ शिवसूत्र
- ◆ महाशिवरात्रि पूजन
- ◆ घोड़श गुरु पूजन
- ◆ विशेष गुरु पूजन
- ◆ गुरु वाणी भाग १-२-३
- ◆ सिद्धाश्रम महात्म्य
- ◆ मंजुल महोत्सव - ९८ भाग १-५
- ◆ महातंत्र साधना शिविर - ९५ भाग १-६
- ◆ महासरस्वती स्वरूप साधना
- ◆ ऐं बीज साधना
- ◆ बसन्त पंचमी साधना



वीडियो सी.डी

- ◆ एकादश रुद्र साधना शिविर वाराणसी-९८ भाग १-६
- ◆ महाशिवरात्रि शिविर - ९७ भाग १-३
- ◆ निखिलेश्वरम् महोत्सव इलाहाबाद-९३ भाग १-३
- ◆ गुरु पूर्णिमा हैदराबाद-९७ भाग १-३
- ◆ निखिलेश्वरम् महोत्सव गोधरा-९२, भाग १-३
- ◆ राज्याभिषेक दीक्षा दिल्ली-९७, भाग १-६
- ◆ निखिलेश्वरम् महोत्सव जोधपुर-९१, भाग १-३
- ◆ सिद्धाश्रम
- ◆ सिद्धाश्रम प्रश्नोत्तर
- ◆ गुरु पादुका पूजन

न्यौछावर प्रति आँडियो कैसेट - 30/-

न्यौछावर प्रति आँडियो सी.डी. - 30/-

न्यौछावर प्रति वीडियो सी.डी. - 60/-

सम्पर्क :

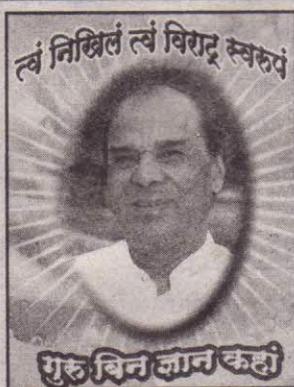
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)

फोन: 0291-2432209, 2433623, फैक्स : 0291-2432010

आनंद ग्रन्थः क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति, प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

श्रीगुरु-प्रकाश

॥ ॐ वस्त्रम् तद्वाय वास्याय थाय गुरुभ्यो दद्वः ॥



सद्गुरुदेव

सद्गुरु प्रवचन

स्तम्भ

शिष्य धर्म

गुरुवाणी

नक्षत्रों की वाणी

मैं समय हूँ

वाराहमिहिर

इस मास जोधपुर में

एक दृष्टि में

साधना

गुरु तत्व आत्मसात्

साधना 27

नृसिंह - लक्ष्मी

तांत्रोक्त साधना 37

आनन्द तांडव

नटराज शिव साधना 50

श्रावण मास विशिष्ट

लघु शिव प्रयोग 55

बाधा नाशक

वाराही साधना 65

मनोकामना पूर्ति बाणेशी

साधना 66

सम्पोहनं सिद्धि कामेशी

साधना 67

पूर्वजन्म कृत पाप शमन

फेतकारिणी साधना 68

भुवनेश्वरी साधना 69

Tripur Bheiravi

Sadhana 82

Annapoorna Sadhana 83

पूजन

गुरु पर्णिमा पूजन 28

श्रावण - मास

शिव पूजन 46

कवच

त्रैलोक्य मंगल

भुवनेश्वरी कवच



विशेष

आत्म घट

आन बसो गुरु 23

हे! गुरुवर मोहे

अपनी शरण में ले लो 28

गुरु-पूर्णिमा आमन्त्रण 30

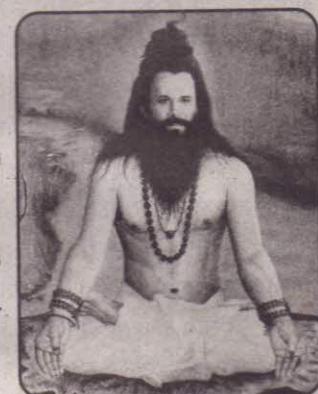
बस गुरु-गुरु-गुरु-गुरु 31

आयुर्वेद सुधा 68

गुप्त नवरात्रि 64

दीक्षा

लक्ष्य भेदन सिद्धि दीक्षा 75



प्रकाशक एवं स्वामित्व

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

द्वारा

सुदर्शन प्रिन्टर्स

487/505, पीरागढ़ी,

रोहतक रोड, नई दिल्ली-८७

से मुद्रित तथा

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान हाईकोर्ट

कॉलेजी जोधपुर से प्रकाशित

मूल्य (भारत में)

एक प्रति:

18/-

वार्षिक:

195/-



:: सम्पर्क ::

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्कलेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन: 011-27352248, टेली फैक्स: 011-27356700

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलेजी, जोधपुर - 342031 (राज.) फोन: 0291-2432209, टेली फैक्स: 0291-2432010

WWW address - <http://www.siddhashram.org>

E-mail add. - mtyv@siddhashram.org

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुराक करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जाय, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमवकड़ साधु-संत होते हैं, अतः उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर-न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर किर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 195/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या संन्यासी लेखकों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (बले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

★ प्रार्थना ★

तन्त्रात्मकं जगदिदं कमनीयकान्तं,
सन्दूषितं परमिदं निजस्वार्थं लुभ्यः
सौम्येन तन्त्रविधिन्। परमार्थं चिन्तयं
तन्त्रेश्वरं च निखिलं सततं प्रणम्यम् ।

इस सुखद और सौन्दर्य पूर्ण संसार की रचना तंत्र के द्वारा ही संभव हो पाई है। स्वार्थ-लोलुप तथाकथित तांत्रिकों ने इसे दूषित कर दिया था। आप ने इसे सौम्य विधि से पूर्ण चन्द्र की तरह निर्मल बनाकर लोकोपकार किया है, आप तन्त्रेश्वर हैं, निखिलेश्वर हैं, आपको सतत प्रणम्य हैं।

क्षणे क्षणे वत्रवताम्...

प्रज्ञा पुरुष, परमकरुणावान भगवान बुद्ध का जीवन चरित् जितना अधिक लिखित उपलब्ध होता है, कदाचित उसका सहस्र गुणा अलिखित ही रह गया होगा, क्योंकि गुरुत्व से परिपूर्ण ऐसे व्यक्तित्व पग-पग पर, क्षण-क्षण में कोई न कोई गाथा ही अलिखित रूप में अंकित करते हुए गतिशील रहते हैं।

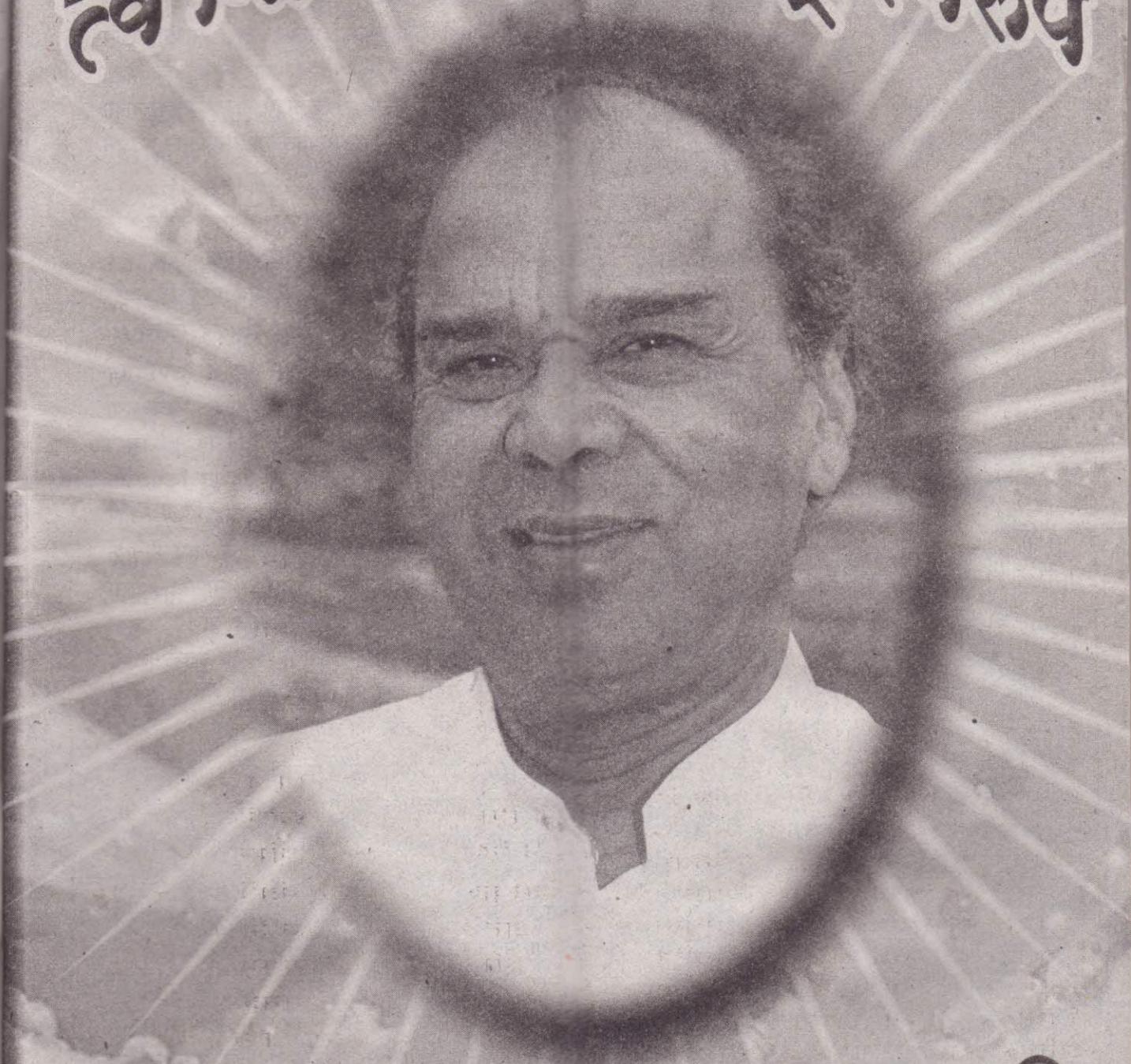
भगवान बुद्ध के जीवन की अनेक ऐसी ही घटनाओं में से एक घटना है, कि सारिपुत्र नामक एक व्यक्ति ने भगवान बुद्ध के पास नित्य ही आकर अध्यात्म विषयक प्रश्न ही पूछना प्रारम्भ कर दिया। भगवान बुद्ध तो नित्य ही सहज भाव से उत्तर देते थे, किन्तु कई दिनों पश्चात् भगवान बुद्ध के एक अन्य शिष्य आनन्द से न रहा गया और उन्होंने भगवान बुद्ध से पूछ ही लिया, कि नित्य एक ही बात से उन्हें ऊब नहीं हो जाती?

भगवान बुद्ध का अत्यंत गृद्ध उत्तर था - 'नित्य वही घटना कहां? नित्य ही तो नूतन हो रहा है, प्रत्येक पल नूतन है। कल उसने जिस बुद्ध से प्रश्न पूछा था वह कोई और बुद्ध था, आज कोई और है, कल कोई और होगा, मैं तो बहती जलधार हूँ जो नित्य नूतन हो रही है।' आनन्द के लिए ज्ञान की यह भावभूमि सर्वथा नूतन थी।

भगवान बुद्ध के उपरोक्त वचनों के संदर्भ में ही फिर कुछ-कुछ समझ में आता है, कि गुरुत्व से आपूरित ऐसे व्यक्ति किस चेतना, किस भावभूमि और सर्वोपरि तो यह कि सम्पूर्ण मानवता के प्रति किस आग्रह को लेकर गतिशील रहते हैं। सदगुरु, स्थिर प्रतीत होते हुए भी अन्तः मन से सदैव बहती जलधार के समान निर्मल, स्वच्छ, शीतल एवं किसी को भी तृप्ति देने वाले ही होते हैं।

हमारे जीवन में भी सदगुरु रूपी ऐसी निर्मल जलधार प्रवाहित हो, जिसमें अवगाहन कर हम पवित्र हो सकें, जिसका 'पान' कर हम पूर्ण तृप्ति का अनुभव कर सकें... प्रभु से ऐसी ही प्रार्थना है।

त्वं निरित्रिलं त्वं विशद् कवलयं



पुक्तविज्ञानकर्ण



सद्गुरुदेव ने अपने प्रवचनों में बार-बार शिष्यों को यह
एहसास दिलाया है कि तुम एक जीवन्त व्यक्तित्व हो
और अपने छोटे से जीवन में भी वह सब कुछ कर
सकते हो जो अब तक नहीं कर पाए अथवा
आपके पूर्वज नहीं कर पाए। जीवन अमूल्य है
और जीवन का प्रत्येक क्षण सार्थकता से
मनुष्यत्व से देवत्व की ओर ले जाने की क्रिया
से जीना है। दिल्ली में राज्याभिषेक दीक्षा
के समय दिया गया उनका यह महान प्रवचन
शिष्यों के लिए एक उद्घोष है -

पूर्णन्दु सहस्र भवतां सदैव
ब्रह्म स्वरूपाय विश्वाट स्फूर्तं
चैतन्य देव भवतां भव पूर्ण चिन्त्यं
सिद्धाश्रमाय परितां भवदेव नित्यं ॥

एक उच्चकोटि के उपनिषद्
श्वेताश्वेतरोपनिषद् में से यह श्लोक लिया गया
है। और इसी श्लोक को, इसी भाव को शंकराचार्य
ने भी अपने शांकर भाष्य में उद्धृत किया है।
शंकराचार्य, एक बहुत बड़ी बात कह रहे हैं और
आज भी आप जो बैठे हैं यहां पर यह अपने आप में एक
सामान्य बात नहीं हैं। इसलिए नहीं कि मुझे आपकी प्रशंसा
करनी है, इसलिए भी नहीं कि आपकी स्तुति या झूठी शान
दिखानी है। आप शिष्य हैं और जिन्दगी में एक अच्छे शिष्य
बन जाएं, यह भी बहुत बड़ी बात नहीं है, मैं तो चाहता हूं
जीवन में आप गुरु बनें, ज्ञान का प्रकाश फैलाएं।

मगर ऐसे गुरु बनें जो अपने आप में सार्थक हों, ऐसे गुरु बनें
जो सूर्य के समान दैवीप्यमान हों, ऐसे गुरु बनें जो चैतन्य हों,
ऐसे गुरु बनें जो अपने आप में पूर्ण सिद्धिप्रद हों, ऐसे व्यक्तित्व
बनें जो अपने आप में सिद्ध पुरुष हों, और उस
श्वेताश्वेतरोपनिषद् में कहा गया है कि मनुष्य या तो देह धारण
करता है या अवतार लेता है, मगर देह धारण करने के बाद भी
वह अवतारी पुरुष बन सकता है। अवतारी और देह धारण में
अन्तर यह है कि गर्भ धारण के समय जब तीन महीने सत्ताइस
दिन का गर्भ हो जाता है, तब उसमें जीव संस्कार होता है और
उस समय से लंगाकर के ६ महीने और २ दिन या ५ दिन या
१० दिन तक बालक अपने आप में पूर्ण ब्रह्म स्वरूप बनता है,
ब्रह्म स्वरूप ही होता है। उसके बाद ज्यों ही वह जन्म लेता है
त्यों ही उसकी एक जाति बन जाती है, तू हिन्दू है, तू मुसलमान

है, जबरदस्ती थोप दिया कि तू मुसलमान है, जबरदस्ती थोप दिया कि तू हिन्दू है, जबरदस्ती थोप दिया कि तू ईसाई है क्योंकि ऐसी जगह जन्म लेने की वजह से उसको उस जगह थोप दिया गया।

शंकराचार्य कह रहे हैं कि यह थोपने की क्रिया तो मेरे मां-बाप ने भी इसलिए की कि वे उस सम्प्रदाय से सम्बन्धित थे। और यदि केरल का रहने वाला, दक्षिण का रहने वाला एक ब्राह्मण शंकर जो भिक्षुक था, जो अन्न-अन्न के लिए मोहताज रहने वाला था वह अवतारी पुरुष बन सकता है तो आप भी बन सकते हैं। जब उसने कहा कि मां मैं संन्यास लूँगा तो मां ने कहा - बेटा! तू एक ही बेटा है और संन्यास लेगा तो मैं किसके भरोसे जीवित रहूँगी?

शंकराचार्य ने कहा, कोई किसी के भरोसे जीवित नहीं रहता। व्यक्ति अपने खुद के भरोसे ही जीवित रहता है। आत्मा के भरोसे ही जिन्दा रहता है। जीवित रहने का मतलब है सांस लेना। आप उसको जीवन कहते हैं, आप उसको जिन्दा रहना कहते हैं, जिन्दा है कि यह सांस ले रहा है। ये जीवन नहीं है।

सांस लेने को जीवित पुरुष नहीं कहते हैं, सांस लेने को तो नर कहते हैं और नर उसको कहते हैं, जो अपने समान एक और चीज पैदा कर दें, उसको नर कहते हैं। मैं अपने समान एक और लड़के को पैदा कर दूं तो मैं नर हूं। इसलिए दो शब्द बने नर और नारायण और आप भी नर हैं।

तो शंकराचार्य कह रहे हैं कि कोई व्यक्ति किसी के भरोसे जीवित नहीं है, यह हमारा भ्रम है कि मेरा पिता मेरा पालन पोषण कर रहा है, कि मेरी पत्नी मेरी पालन पोषण कर रही है, कि मेरा पति मेरा पालन पोषण कर रहा है कि एक्स, वाई, जेड मेरा पालन पोषण कर रहा है, ये तो हमारा भ्रम है। मैं अपने आप में सेल्फ हूं, अपने आपमें पूर्ण हूं। न उसमें कोई खण्डन है, न उसमें कोई एड किया जा सकता है।

मगर एक गर्भ में पैदा होने वाला बालक अवतारी पुरुष बन सकता है, बनता है, क्योंकि जिस प्रकार से आप पैदा हुए, ठीक उसी प्रकार से राम भी पैदा हुए थे, उसी प्रकार से कृष्ण भी पैदा हुए थे। उसी प्रकार से बुद्ध भी पैदा हुए थे। वही क्रिया थी और उस समय का कोई वातावरण बहुत ज्यादा उत्तमकोटि का हो, ऐसा भी नहीं था। जिसको हम राम राज्य कहते हैं उस समय भी लड़ाइयां, झगड़े होते थे, दशरथ की तीन रानियां थीं; आपस में लड़ती थीं कैकयी, कौशल्या और सुमित्रा।



उस समय भी छल कपट था, कैकेयी ने अपने पुत्र भरत को राजगद्दी दिलाने के लिए छल किया। इतना छल किया कि ये राम कहीं गद्दी पर न बैठ जाए, तो अपने पति को मोहित करके उसको (राम को) चौदह साल के लिए वन में भेज दिया, तो ये छल, ये कपट, ये व्यभिचार, ये असत्य त्रेतायुग में भी थे, द्वापर युग में थे और इतना था, कि भरी सभा में भीष्म जैसा व्यक्तित्व बैठा है, दुर्योधन जैसा बैठा है और द्रौपदी नंगी की जा रही है, अपने श्वसुर के सामने, और किसी के मुंह से बोल नहीं निकल रहा है और कृष्ण जब उसका चीर बढ़ाते हैं तो भीष्म को फटकारते हुए कहते हैं कि मुझे दुःख है कि एक श्वसुर के सामने एक बहू नंगी की जा रही है, तुम बोल नहीं पा रहे हो, तुम कायर पुरुष हो, कैसे कायर हो, कैसे अपने आप में शक्तिहीन हो, अपने आप में कायर पुरुष हो।

उस समय राम राज्य में कोई बहुत उच्चकोटि का वातावरण नहीं था, आज फिर भी लॉ-आर्डर है आप किसी स्त्री, लड़की को छेड़ेंगे तो जरूर पुलिस जेल करेगी। उस समय तो यह भी नहीं था। इस लिए कोई युग नहीं बदलता है, युग तो त्रेता युग, द्वापर युग और कलियुग एक जैसे ही थे मगर आप ये सोचते हैं कि हम क्या कर सकते हैं। हम कलियुग में पैदा हुए हैं। उस समय भी ऐसे दुर्योधन पैदा होते ही थे, दुःशासन पैदा होते ही थे। कृष्ण जैसे भी पैदा होते थे, द्रोणाचार्य जैसे गुरु भी पैदा होते थे। वशिष्ठ जैसे और विश्वामित्र जैसे गुरु भी पैदा होते थे। सांदीपन जैसे गुरु भी पैदा हुए। मगर शंकराचार्य निस पंक्ति को बोले, वह अपने आपमें महत्वपूर्ण पंक्ति है, क्योंकि उसने इस पंक्ति को श्वेताश्वेतरोपनिषद् से उठाया। आपको ध्यान है कि चार वेद हैं, जौर में कहूँगा कि हकीकत में आठ वेद हैं तो आप कहेंगे कि ये आप तो नई बात बता रहे हैं, ये तो कोई नहीं कहता, जाप मत मानिये, आपकी मर्जी है।

मगर कई ग्रंथ, कई वेद लुप्त हो गये, ज्ञान-चेतना कुछ ही नहीं रहे। खैर यह तो एक अलग प्रवचन का टॉपिक हो जायेगा कि आठ वेद कौन से थे, क्या थे। वह तो एक दूसरा विषय है। वह ज्ञान का दूसरा चिन्तन है।

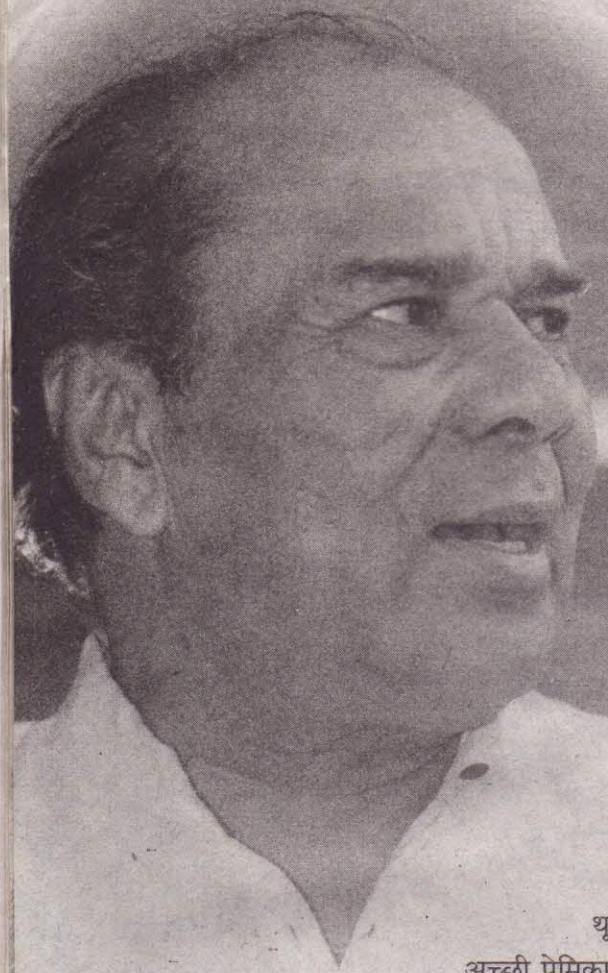
श्वेताश्वेतरोपनिषद् में भी इस को यजुर्वेद के मंत्र से उठाया, इस श्लोक को।

मैं आपको बता रहा हूँ कि मूल क्रष्ण ने जो कहा, जो वाणी उच्चरित की, उसको सरल करने के लिए श्वेताश्वेतरोपनिषद् बनाया। ये १०८ उपनिषद् बने उन आठ वेदों को सरल भाषा में लिखने के लिए, सही ढंग से समझाने के लिए और वहाँ से शंकराचार्य ने लिखा

इसका मतलब इस श्लोक में जरूर कोई विशेषता है। शंकराचार्य जैसे विद्वान् को उस श्लोक को उठाने की क्या जरूरत थी और शंकराचार्य आज से २५ सौ वर्ष पहले पैदा हुए, कोई बहुत बड़ी घटना हो या ५ हजार वर्ष पहले की घटना हो। प्रश्न है कि जीवन क्या है। मैं आपको उस उपदेश को भी नहीं देना चाहता कि यह शास्त्र का विषय है या विद्वानों का विषय है कि जीवन का मर्म क्या है और द्वैत क्या है, अद्वैत क्या है? क्या माया और ब्रह्म अलग-अलग है, माया क्या चीज़ है, ब्रह्म क्या चीज़ है? अद्वैत सिद्धान्त क्या है? द्वैत सिद्धान्त क्या है? मैं आपको उसमें उलझाना नहीं चाहता क्योंकि वह उच्चकोटि के ज्ञान की चिन्तन की बात है।

मगर शंकराचार्य कह रहे हैं कि उच्च कोटि के गुरु के पास मैं वही शिष्य इकट्ठे होते हैं, एकत्र होते हैं जो किसी समय देवता रहे हुए होते हैं या जिनमें देवता का अंश होता है वही जन्म लेकर उनके पास होते हैं। तो शंकराचार्य जैसा व्यक्तित्व गलत नहीं हो सकता। इसलिए गलत नहीं हो सकता कि जब मां ने कहा कि बेटा मैं किसके भरोसे जीवित रहूँ। उसने कहा मां अपने आप के भरोसे जीवित रहो। मैं भी अपने भरोसे जीवित रहूँगा। हर आदमी अपने भरोसे जीवित है। कोई किसी का है नहीं। हम केवल एक नर हैं, क्योंकि जो पिता ने किया वही हमने आगे कर लिया और पिता, वे भी कह रहे हैं बेटा मैं मर जाऊँगा एक पोता गोद में खिला दो तो बस मेरी तृप्ति हो जाएगी। और आप कोशिश करते हैं कि पोता जल्दी हो ही जाए और प्रदान कर देते हैं क्योंकि समाज का एक ढांचा हो गया।

शंकराचार्य कह रहे हैं कि व्यक्ति गुरु के साथ रहे और उससे उच्च कोटि का ज्ञान प्राप्त करे। वह कृष्ण सांदीपन के आश्रम में क्यों गया, मथुरा में गुरु थे नहीं क्या? वृन्दावन में गुरु नहीं थे? वृन्दावन में हरिनाथ गुरु थे उस समय। वे अपने आप में अद्वितीय थे। विद्वल सम्प्रदाय चल रहा था, जो उत्तम कोटि के गुरु थे, रामानन्द सम्प्रदाय चल रहा था। कोई गुरु की कमी नहीं थी, उत्तम कोटि के गुरु थे। फिर सांदीपन के आश्रम में क्यों गये? उज्जैन क्यों गये कृष्ण? क्यों लकड़ियां ढोईं, क्यों जंगल में से लकड़ियां काट कर लाये? एक राजा का बेटा जंगल में जाकर लकड़ियां काट



कर लाता है, गुरु यह देखना चाहता है कि वह शिष्य है या फोलोवर है, या केवल भीड़ में चलने वाला व्यक्तित्व है।

शेर भीड़ में नहीं चल सकता, शेर तो जंगल में अकेला होता है, अकेला ही चलता है। बस भेड़ों की भीड़ हो सकती है, बगुलों की भीड़ हो सकती है, गीदड़ों और सियारों की भीड़ हो सकती है, सियार जाएंगे तो बीस, झुंड में जाएंगे। शेर बीस के झुंड में नहीं होते बीस शेर एक साथ नहीं मिल पाएंगे। हंस बीस एक साथ नहीं मिल पाएंगे।

शंकराचार्य ने कहा कि व्यक्ति को जीवन जैसा भी प्राप्त हो गया, जन्म हो गया, अब उसको तुम बदल नहीं सकते, अब या तो मृत्यु को प्राप्त हो जाओगे, या फिर इस जीवन में कुछ ऐसा हो जाएगा कि तुम अवतारी व्यक्तित्व बन जाओगे। वह अवतारी व्यक्तित्व बनना बहुत ज्यादा जरूरी है, क्योंकि जीवन की सार्थकता वह है। और फिर प्रश्न उसी श्लोक में करते हैं उसी पंक्ति में कहते हैं कि एक नर जो मल मूत्र, भरी देह से पैदा हुआ, क्या वह उच्चता को प्राप्त कर सकता है? अभी ५ मिनट पहले समझाया कि इस शरीर में मल मूत्र,

थूक, लार, विष्टा पांचों के सिवाय छठी कोई चीज है नहीं। बहुत अच्छी प्रेमिका कहती है कि तुम्हारे बिना जिन्दा रह ही नहीं सकती। और ज्योंही उसका एक्सीडेन्ट होता है, उसकी चीरफाड़ होती है तो कोई देखना भी परसंद नहीं करता और एक दम से



सोचता है कि जला दो। अब तुम कह रहे थे कि तुम्हारे बिना जिन्दा नहीं रह सकता मर जाऊँगा, तुम्हें पांच मिनट नहीं देखता हूं तो मैं ऐसा हो जाता हूं। फिर क्या हो गया उस शरीर में से निकला क्या, मल निकला, मूत्र निकला, विष्ठा निकली, तो हमारे शरीर में यही सब कुछ है।

शंकरचार्य कह रहे हैं कि जो जन्म हो गया हो गया। हमारे अंदर देवत्व है, मगर वह जाग्रत नहीं है, नरत्व जाग्रत है। दोनों चीज अलग हैं। एक आपके शरीर में देवत्व है, एक आपके शरीर में नरत्व है, नरत्व का तुम उपयोग कर रहे हो, उसके लिए यूनीवर्सिटी में कोई एज्जूकेशन लेने की जरूरत नहीं है, उसके लिए कोई कोर्स है नहीं, उसके लिए कोई पढ़ाई है नहीं, उसके लिए कोई टाइम भी नहीं है, प्रत्येक जानवर के लिए एक फिक्स टाइम है, जितनी चिड़ियां हैं वे सब कार्तिक महीने में ही गर्भ धारण करती हैं मतलब संतान उत्पन्न करती हैं। गाएं हैं सभी कार्तिक महीने में अपने बछड़े को जन्म देती हैं। उनका एक टाइम फिक्स है।

आदमी के लिए कोई टाइम फिक्स है नहीं। कभी भी बच्चा पैदा कर ही लेते हैं, हो जाते हैं। कोई उनका ऋतु का और जीवन का सम्बन्ध नहीं है। गाय का बछड़ा पैदा होता है और पैदा होने के तीन घण्टे के बाद पैरों पर खड़ा हो जाता है, दौड़ने लग जाता है केवल तीन घण्टों बाद। एक नर का बालक पैदा होता है जो नौ महीने तक तो खड़ा होना बहुत दूर घिसट करके भी नहीं चल पाता। हम कितने कमजोर हैं, और हममें देवत्व कहां रह गया। हम पशुओं से भी कमजोर गये बीते व्यक्तित्व बन गये, क्योंकि तीन घण्टों बाद खड़े हो जाने की क्षमता गाय में है, जो भैंस के बच्चे में हैं। हममें भी है, परन्तु कभी हमने सोचा भी नहीं।

ऐसा क्यों है? शंकरचार्य उस पंक्ति में कह रहे हैं कि जो जन्म ले लिया हमने, वह ले लिया, जो मां-बाप ने जन्म दे दिया, दे दिया, उनका ऋण मानें, न मानें। मानते हैं, क्योंकि उन्होंने हमें जन्म दिया। प्लान से दिया, अन्प्लान से दिया, यहां जन्म नहीं लेते तो कहीं और जन्म लेते, जहां आत्मा भटक रही होती वहां जन्म लेते। मगर आपके उस जन्म को देवत्व में केसे परिवर्तित किया जाए? जब देवत्व में परिवर्तित नहीं हो जाएगा जीवन तो जीवन नहीं कहलाएगा, एक फिर नरत्व कहलाएगा। एक नर है, एक सामान्य मनुष्य है, एक व्यापारी है एक बिजनेसमेन है, एक जज है, एक वकील हैं, एक नौकरीपेशा आदमी है आप कुछ हैं मगर आप सही अर्थों में देवत्व नहीं है, आप ढोंग कर सकते हैं शिवजी की पूजा करने का, आप ढोंग कर सकते हैं ईसामसीह का क्रॉस पहनने का, आप ढोंग कर सकते हैं कुरान से अल्ला हो अकबर करने का, ये सब ढोंग है। ढोंग इसलिए है कि इतना करने के बाद भी शिव के दर्शन नहीं कर पाये, आप इतना करने के बाद भी अल्लाह के दर्शन नहीं कर पाये, इतना करने के बाद भी ईसा मसीह आपके सामने प्रकट नहीं हो पाए। कहां कभी थी, क्या गलती थी, तुममें क्या कमी है? तुम केवल एक नर हो, तुम अवतारी पुरुष बन नहीं पाए। ये तुममें कमी हुई। ऐसा कैसे हो सकता है, तुम मंत्र पढ़ो और

देवता सामने उपस्थित न हों? ऐसा तो हो ही नहीं सकता, ऐसा संभव ही नहीं है।

सी.के.चतुर्वेदी, इधर आना। बस एक सैकेण्ड। अब देखिये मैंने मंत्र पढ़ा सी.के.चतुर्वेदी! इधर आओ। देखिए बीच में से आया कि नहीं आया। मंत्र में ताकत है कि नहीं है? आपके सामने उदाहरण है।

तुम कह रहे हो शब्दों में ताकत होती ही नहीं। मैं कह रहा हूं कि केवल वही मंत्र पढ़ा और वही व्यक्ति उठा, दूसरे उठे नहीं। इतने लोग बैठे थे। केवल वही व्यक्ति उठा और मेरे मंत्रों में बिल्कुल क्षमता थी, मेरे शब्दों में क्षमता थी और शब्द को ही मंत्र कहते हैं। और मैंने मंत्र उच्चारण किया। चाहे हीं बोला, चाहे कर्लीं बोला, चाहे श्रीं बोला और चाहे सी. के. चतुर्वेदी, एक शब्द बोला और वह व्यक्ति उठ कर मेरे पास आया। फिर मैं शिव की आराधना करता हूं शिव का मंत्र करता हूं, शिव को बुलाता हूं, शिव क्यों नहीं आते? जब सी.के.चतुर्वेदी आसकता है तो फिर शिव को आना ही चाहिए। या फिर हमर्यां ही कोई कमी है।

मैं तो आपके सामने प्रत्यक्ष उदाहरण देकर समझा रहा हूं। न आप उठ कर आए, न वे उठकर आये। केवल जिसको मैंने याद किया, जिसको बुलाया, वही व्यक्ति आया। इसलिए आप न रहे हैं। शंकराचार्य कह रहे हैं कि यह जीवन व्यर्थ हो जाएगा, आपका एक ढाँग हो जाएगा, एक पाखण्ड हो जायेगा, आप मात्र सांस लेने की क्रिया कर देंगे और सांस भी आपको लेनी आती नहीं। आप एक छोटे से बालक को देखें, छह महीने के बालक को, आपके घर में बालक हो, आप देखिए वह सो रहा है सांस ले रहा है तो उसकी नाभि बिल्कुल फड़फड़ा हुआ है। ज्यों ही सांस ली नाभि स्पन्दन करती है। आप जब सांस लेते हैं तो नाभि तो बहुत दूर, पेट इतना बढ़ा हुआ है

कि नाभि वही की वहीं पड़ी है। हिल नहीं सकती क्योंकि पेट को इतना भर दिया आपने कि सांस यहां तक आया और फिर वापिस बाहर आ गया।

अब प्राणायाम होगा कहां से, कहां से जीवित रहोगे, कहां से तुम योगी बन सकोगे, कहां से मूलाधार जाग्रत होगा, कहां से कुण्डलिनी जाग्रत होगी, सांस लेने की क्रिया ही तुम्हें ज्ञात नहीं है।

बालक को ज्ञात है, क्योंकि ब्रह्म से निकला हुआ वह आया है और उसने ज्यों ही सांस ली सीधे नाभि में स्पन्दन हुआ और आप देखेंगे कि उसकी नाभि बिल्कुल धड़कती हुई होती है। नाभि अपने ज्ञाप में धड़कती रहती है। मगर दो चार साल के बालक में नाभि धड़कना बंद हो जाती है, आपकी नाभि धड़क नहीं सकती क्योंकि नाभि के ऊपर आपने इतना हलवा लगा दिया है, पुड़ियां लगा दी हैं कि पेट हिले, पासिबल ही नहीं है। इसलिए मैं कह रहा हूं कि आपको सांस लेने की क्रिया का भी ज्ञान नहीं है। शंकराचार्य कह रहे हैं कि गुरु का कर्तव्य, धर्म यह है कि वह व्यक्ति को यह एहसास करा दें कि तुम नर हो और तुम्हें अवतारी पुरुष बनना है, देवतत्व बनना है, देवत्व बनना है और जब देवत्व बनेंगे तो देवत्व की मृत्यु नहीं हो सकती, देवता मर नहीं सकता यह संभव नहीं है। नर मर सकता है इसलिए मर सकता है क्योंकि उसने उस जीवन का अर्थ समझा नहीं, कैसे जिन्दा रहा जा सकता है यह ज्ञात नहीं है। अगर मुझे यह ज्ञात नहीं है कि यहां से कनॉट प्लेट कैसे जाया जा सकता है, मैं नहीं जा सकता।

इसलिए इस श्लोक में बताया गया है कि बहुत छोटा सा जीवन मिलता है। पच्चीस साल तो आपने बीता दिए पढ़ाई करने में, फिर

पच्चीस साल के बाद हो गई शादी, फिर चालीस साल तक आपने किसी और काम में लगा दिए। फिर पचास साल में आपने व्यापार सैटिंग कर लिया। फिर चौसठ साल में आप मर गये। पचास साल, साठ साल, सत्तर साल के हो गये और पैंसठ साल के बाद आप जिन्दा रहें तो लोग आश्चर्य करते हैं कि यह जिन्दा है, आप पैंसठ साल के हो गये। अभी तक जिन्दा हैं? अच्छा चलो, राम जी की मर्जी।

सत्तर साल के हो गये हो, लोग धूर-धूर देखते हैं सत्तर, सत्तर के हो गये क्या? अरे भई नहीं मरे, सत्तर के हो गये और अस्सी साल के हुए तो आपको चिड़ियाघर में खड़ा कर देते हैं। यह साहब अस्सी साल के व्यक्ति हैं जो अभी मरा नहीं ऐसे पूरे भारत वर्ष में दो चार, दस, पच्चीस, पचास मिलेंगे। कितना छोटा सा हमारा जीवन है, जीवन जिसे हम कहते हैं कुछ साल हैं, और शंकराचार्य कहते हैं क्या इस जीवन को हम हजार साल का नहीं बना सकते?

बना सकते हैं, उस नर से, देवत्व की ओर जा सकते हैं। आपके पिता नर थे, आपकी मां नारी थीं। आपके दादा ऐसे ही थे, आपके परदादा भी ऐसे ही थे। उनके पास भी कोई प्लान नहीं था। आपके पास भी आज तक कोई प्लान नहीं हुआ। मगर वे हमारे कोई काम के नहीं हैं, नहीं क्योंकि - 'अप्प दीपो भव' मैं हूं तो सब है, अगर आप नहीं रहेंगे तो क्या रहेगा, पत्नी चार छह महीने रोयेगी, साल भर रोयेगी। बाद में फिर हलवा पूँडी खा लेगी, किसी शादी में जायेगी तो खा लेगी। फिर बेटे अपने काम में लग जाएंगे। फिर घर में शादियां हो जाएंगी। फिर श्राद्ध आ जाएगा तो आपको याद करेंगे कि मेरे पिताजी बहुत अच्छे थे आज उनकी मृत्यु हो गई थी, बस बात खत्म, स्वर्गवासी हो गये थे। आपने किया क्या जिन्दगी में?

शंकराचार्य कह रहे हैं कि व्यक्ति की सबसे बड़ी विशेषता है देवत्व की ओर अग्सर होना और मगर, समझदार व्यक्ति है... समझदार व्यक्ति वह, जो विवेक से काम ले ही नहीं सकते क्योंकि उनकी जिन्दगी में वे क्षण आ ही नहीं सकते। पहले शिष्य गुरु के चरणों में पहुंचता था, हजार मील की पैदल यात्रा करके। उस समय गाड़ी या ट्राम, टेक्सियां, कारें, बसें थीं नहीं। उस वसुदेव के बेटे के पास भी नहीं थीं जो राजा का बेटा था। उसको पैदल जाना पड़ा। सांदीपन आश्रम में जा करके उसने किस प्रकार से एक नर से देवत्व बना जाए, ये क्रिया सीखी और उस समय, व्रेता युग में केवल दो व्यक्तियों को ज्ञान था, अत्रि को और





दौड़ती

लहराती हुई, छलांग

तोड़ती हुई, और यहां तो समुद्र खुद तुम्हारे पास आ करके बैठा हुआ है, तुम्हें पूर्णता देने के लिए।

आप पूछेंगे कि क्या ऐसा हो सकता है? मैं पूछूँगा कि आपके प्रश्न अगणित हैं, करोड़ों हैं। क्या सांस लेने से कुछ होता है, क्या सांस नहीं लेने से कुछ होता है, क्या आपके पास बैठने से कुछ होगा, क्या खाना खाने से कुछ होगा, या नहीं खाने से कुछ होगा? अब आपके हरि क्या 'हरि कथा अनन्ता', आपके प्रश्न तो अगणित हैं ही। मगर इस जीवन में, जो जीवन आपको मिला है, वह मैंने कहा कि नाशवान है, आप खुद भी समझते हैं कि नाशवान है, शरीर समाप्त हो जाएगा। ये आपको मालूम हैं और मैं आज वह क्रिया समझाना चाहता हूँ कि इस नाशवान शरीर को अपने आप में अमर अद्वितीय बना सकते हो, गरंटी के साथ बना सकते हो, ईश्वर के साक्षी रूप में बना सकते हो और नहीं बनाया तो धिक्कार है। आपको भी, और मुझको भी। मैं अपने आप को धिक्कार देता हूँ, इसलिए कि मैं आप में वह प्रेरणा नहीं कर पाया। आप इस को समझते हुए समझ नहीं पाये।

कृष्ण ने भी गीता में शंकराचार्य के इसी श्लोक को लिया। मैंने कहा कि इस गीता से अष्टावक्र गीता बहुत महत्वपूर्ण है, कभी आप उसको पढ़ें, और इस गीता के इस तथ्य पर, जो मैंने बताया, पूरा एक अध्याय लिखा है अष्टावक्र ने। गीता में तो केवल एक श्लोक लिखा है।

विश्वामित्र को। द्वापर युग में केवल एक व्यक्ति को ज्ञान था जिसको सांदीपन कहते हैं। और आज भी वहां सांदीपन आश्रम है उज्जैन के पास नदी क्षिप्रा के उस पार।

छोटी क्रिया नहीं है, एक पूरे शरीर को परिवर्तित करने की क्रिया है। इतना परिवर्तित करने की क्रिया एक सामान्य मलमूत्र से भरी हुई देह को अपने आप में अमृतमय बना देने की क्रिया है, आपको तुच्छ व्यक्ति से देवतत्व बना देने की क्रिया है, अपने आप को एक घटिया व्यक्ति से ऊंची छलांग लगाने की क्रिया है, ऐसी क्रिया कि बूँद से पूरे समुद्र बन जाए, एक ऐसी क्रिया की, जहां अपने आप में सम्पूर्णता प्राप्त हो जाती है, 'पूर्ण मदः पूर्ण मिदं' कहा जाये वह बन जाने की क्रिया। अगर ऐसी क्रिया तुम्हारे पास नहीं है, नहीं आपाई, नहीं बन पाये तो यह जीवन व्यर्थ है, क्षण भंगुर है, समाप्त है और उस जीवन का कोई अर्थ, कोई मकसद है ही नहीं। मगर यह आपका सौभाग्य है कि नदी, समुद्र के पास जाती है, हजारों मील दूर

हुई, गंगोत्री के पास हिमालय से होती हुई,

लगाती हुई, दौड़ती हुई, पेड़ों को तोड़ती हुई, चट्टानों को

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः ।
 न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोष्यति मारुतः ॥
 वासांसि जीर्णानि वथा विहाय-नवानि
 गृह्णाति नरोऽपराणि ।
 तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति
 नवानि देही ॥

कपड़ा फट जाता है तो दूसरा कपड़ा पहन लेते हैं, वैसे शरीर नाशवान हो जाएगा तो हम दूसरा चोला धारण कर लेंगे। गीता में श्रीकृष्ण ने इतना ही कहा। पर अष्टावक्र ने इस बात को पूरा समझाया, इतनी सी चीज में समझ नहीं आएगी बात। क्यों समझ नहीं आयेगी क्योंकि कृष्ण को समझा ही नहीं गया और हमारे यहां पर भारतवर्ष में सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है, कि जिन्दा गुरु को समझा ही नहीं जा सकता, कोई नहीं समझता। उसे गालियां दी जा सकती हैं, उसको फटकारा जा सकता है।

कृष्ण को गालियां दीं, फटकारा, इतना उसको प्रताड़ित किया गया कि वहां से मथुरा से भाग कर द्वारिका में जाना पड़ा और रणछोड़ जैसा कलंक लगाना पड़ा। युद्ध से भागने वाला।

राम को इतना प्रताड़ित किया गया कि चौदह साल तक पली के वियोग में जंगल में दर-दर भटकना पड़ा।

बुद्ध को इतना प्रताड़ित किया गया कि उसके कानों में कीलें ठोक दी गईं।

ईसा मसीह को इतना प्रताड़ित किया गया कि सूली पर टांग दिया गया।

सुकरात को इतना प्रताड़ित किया गया कि उसको जबरदस्ती जहर पिला दिया गया।

शंकराचार्य को इतना प्रताड़ित किया गया कि उसको कांच घोट कर पिला दिया गया।

हम जीवित गुरु को पहचान ही नहीं पाते और मरने के बाद उसकी पूजा करते रहते हैं। चित्र लगाते हैं, अगरबत्ती लगाते हैं, धूप लगाते हैं। कृष्ण जिन्दा होते और धूप, अगरबत्ती लगाते तो ये क्षण आते नहीं। हम मुर्दों की पूजा करने वाले हैं जीवित व्यक्तियों की पूजा करने वाले नहीं हैं। हम बूढ़े बाप को शुद्ध धी खिलाने की चिन्ता नहीं करते। मरने के बाद चिता में पूरा पीपा उड़ेलते हैं, लोग देखें कि कितना सपूत बेटा है। पूरे असली धी के पीपे ढाले वो बेटा बहुत सपूत है। अरे पहले असली धी खिलाते तो मरता ही क्यों ये? और पहले खिलाते नहीं, हम मुर्दा-पूजक हैं, जिन्दा-पूजक हैं नहीं, क्योंकि जिन्दा गुरु के पास रहना ही कठिन है, जितना तलवार के ऊपर चलना। ये आसान काम नहीं हैं, क्योंकि वह हर समय आपको टोकता रहेगा, टोकता रहेगा तुम ऐसा मत बनो, जो कुछ हो इससे अपने आप में उच्चकोटि के बनो,



अद्वितीय बनो और यहां तुम गलती कर रहे हो। वह बार-बार आपको टोकेगा, रोकेगा, और आपको बराबर चोट पहुंचेगी कि ऐसा गुरु क्या काम का, कोई प्रशंसा नहीं करता, मैंने सौ रुपये का नोट चढ़ाया, छोड़ो इसको। ये मोटा ताजा गुरु बहुत अच्छा है लाल, सुर्ख बस, ये अच्छा है। बस उसकी शरण में चले जाओ।

हमारे यहां तो जिन्दा व्यक्तियों की पूजा नहीं होती, उनको नालियां दी जाती हैं, तड़पाया जाता है, परेशन किया जाता है, मारा जाता है और उसको मरने के लिए बाध्य कर दिया जाता है। या तो छोड़ करके जंगल में चला जाता है या संन्यासी बन जाता है या अगर उच्चकोटि का व्यक्तित्व है तो किसी और लोक में चला जाता है या सिद्धाश्रम में चला जाता है। मगर मैं ऐसा नहीं करूँगा... गारंटी के साथ नहीं करूँगा आपके बीच में ही रहूँगा, गारंटी है... आप दीजिए गालियां, कितनी दौरे, कितना प्रताड़ित करेंगे, कितनी आलोचना करेंगे? मैं झेल लूँगा।

लीक-लीक सब हूं चले... सभी लीक पे चलते हैं। बिना लीक तीर्नों चले, सायर सिंह सपूत॥ शेर कोई पगड़जी पर चलता ही नहीं जंगल में, पहाड़ में कोई रास्ते पर नहीं चलता और सही अर्थों में योगी है, वह किसी के गुस्से पर नहीं चलता, बिलकुल नए रास्ता खोजता है, नये रास्ते पर चलता है। मैं उस रास्ते पर चलूँगा और सांदीपन का युग और विश्वामित्र का युग लाकर खड़ा करूँगा तुम्हारे सामने...।

कृष्ण जर्जुन को यही समझा रहे हैं कि अर्जुन! तू मुझे पहचान ही नहीं पा रहा है, मैं एक धोती पीताम्बर पहना हुआ साधारण व्यक्ति नहीं हूं, तुम मुझे सामान्य सारथी समझ रहे हो, मैं तुम्हारा ड्राइवर नहीं हूं इस रथ को चलाने वाला। मैं सामान्य आदमी नहीं हूं, तुम मुझे पहचानो कि मुझमें ईश्वरत्व है, मैं अवतारी हूं, क्योंकि मैंने सांदीपन से वह ज्ञान प्राप्त किया है। उनसे वह दीक्षा, वह ज्ञान, वह चेतना, वह प्रयोग मैंने किया है। अर्जुन फिर भी गाण्डीव नीचे रखा हुआ बैठा है।

कृष्ण कह रहा है - मैं तुम्हारा मित्र नहीं हूं। तुम मुझे पहले पहचानो। पहचानो की मैं अपने आप में ईश्वरत्व हूं। और दशम अध्याय तक कृष्ण

उसको बार-बार यह समझा रहे हैं कि तुम मुझे पहचान लो+ नहीं पहचानता, तो दसवें अध्याय में समझाते हैं कि यूं समझ ले कि मैं पहाड़ों में हिमालय हूं। यूं समझ ले मैं नदिया में गंगा नदी हूं। तू यूं समझ ले कि पशुओं में गय हूं। यूं समझ ले कि अपने आप मैं शेर हूं। यह समझ ले पेड़ में पीपल का पेड़ हूं। यह कहने के पीछे उसका कोई अहंकार नहीं था। वह समझा रहा था कि तुम मुझे पहचान लो, और आदमी पहचानता नहीं है, जीवित व्यक्ति को पहचानता ही नहीं है क्योंकि हम मुर्दे हैं, तो मुर्दे की पूजा करेंगे। जीवित गुरु की पूजा नहीं कर पाते हम। ये हमारी कमी है।

कब ऐसा एक क्षण आयेगा, क्या एक बार फिर उम इसा मसीह को सूली पर टांग दिया जायेगा, फिर एक बार सुकरात को जहर दे दिया जायेगा। फिर राम के सरयू में इबने के लिए मजबूर कर दिया जायेगा। "फिर कृष्ण को तीर मार करके समाप्त कर दिया जायेगा, फिर बुद्ध के कानों में कील ठोक दी जायेगी, फिर वापिस वह युग आ जायेगा? ऐसा कब तक हम करेंगे, कब तक महापुरुषों का, उन विद्वानों को प्रताड़ित करते रहेंगे? एक आक्रोश है, आक्रोश इसलिए है कि आपमें नरत्व है, नर देवत्व नहीं है।

जब नहीं समझा अर्जुन तो कृष्ण ने एकदम से अपना विराट रूप दिखाया, अब पहचान ले, अब देख ले, अब देख ले कि मेरा विराट रूप है, ये पूरा ब्रह्माण्ड मुझमें नमाया हुआ है। ये देख ले कि ये सामने महाभारत युद्ध हो रहा है, खोल व्हके सीना दिखा दिया और अर्जुन ने देखा कि उसमें भीष्म है, कृपाचार्य है, द्रोणाचार्य है, अश्वत्थामा है, उसमें दुर्योधन भी है, दुःशासन भी है। अर्जुन भी बैठा है रथ पर और सारा दृश्य चल रहा है बिल्कुल... उसने कहा कि ये सब ब्रह्माण्ड ही नहीं, सारे ब्रह्माण्ड में कहां क्या घटनाएं घट रही हैं, तू यहां देख ले क्योंकि अब तुझे मालूम पड़ना चाहिए कि मैं तुम्हारा सारथी, तुम्हारा मित्र हूं। मैं अपने आप मैं एक अवतार हूं, मैं अपने आप मैं पूर्ण पुरुष हूं, मैं अपने आप मैं पूरा ब्रह्माण्ड अन्दर समेटे हुए हूं और इसलिए तू मुझे पहचान। उसी क्षण अर्जुन का मोह समाप्त हुआ और वह उस जगह पहुंचा, जहां अपने आप मैं एक पूर्णता की प्राप्ति होने की दशा होती है, क्योंकि कृष्ण ने उस सांदीपन से अन्दर के पूरे ब्रह्माण्ड को जाग्रत करने की क्रिया सीख ली थी। इसलिए राम बने कि उन्होंने अपने आपको पूर्ण विश्वमित्र से जोड़ लिया था। वशिष्ठ नहीं, वशिष्ठ को ज्ञान था ही नहीं जिससे उसको ज्ञात हो सके, वह विराट पुरुष बन सके।

शंकराचार्य कह रहे हैं कि प्रत्येक व्यक्ति में देवत्व है। मगर गुरु वह है जो उसमें विराटता को जाग्रत



कर दे। पूरा ब्रह्माण्ड भर दे और जब पूरा ब्रह्माण्ड भर दिया जायेगा तो संसार की कोई भी घटना आपसे छिपी नहीं रह सकती। संसार में कहां क्या घटना हो रही है अपने आप ज्ञात हो जायेगी। अपने अन्दर पूरा विराट रूप दृश्य होगा। फिर अपने आपमें विराट पुरुष बनेंगे, आप अवतारी पुरुष बन जाएंगे, नर नहीं रहेंगे। तब आपके शरीर से एक सुगन्ध प्रवाहित होगी।

कहते हैं कृष्ण के शरीर से अष्टगंध प्रवाहित होती थी, तो आपके शरीर से अष्टगंध प्रवाहित हो सकती है, अवतार बनने के लिए जरूरी है कि आपको वह क्रिया, वह चिन्तन, वह विचारधारा और वह प्रयोग समझाया जाए। कोई सांदीपन बने, कोई विश्वामित्र बने, यह समझा सकता है। अगर वह नहीं समझा सकता तो आप एक नर हैं, नर से योग्य श्रेष्ठ बन जायेंगे मगर अवतार नहीं बन सकते। अवतार नहीं बने तो जीवन का अर्थ ही क्या? फिर यहां मेरे पास बैठने से फायदा भी क्या हुआ? मैं आपके सामने बैठा उसका मतलब ही क्या हुआ? मैं भी आपकी प्रशंसा करके चला जाऊंगा। होगा क्या उससे, जिसे मेरे जीवन का अर्थ मेरा धर्म, मेरा कर्तव्य क्या होगा अन्दर मैं आपको नहीं समझा सकूँगा।

मेरे जीवन का धर्म, कर्तव्य यह है कि मैं समझाऊं, वास्तविकता क्या है, और वास्तविकता यह है कि आप निश्चित रूप से सामान्य मनुष्य नहीं हैं। यह उतना ही सत्य है जितना, गंगा नदी सत्य है, हिमालय सत्य है। आपमें देवत्व है इसीलिए ज्यों ही कृष्ण पैदा हुए तो जितने देवता ये सब गोप न्याला बन गये और उनके चारों तरफ पैदा हुए। कोई सुदाना बना, कोई बलराम, कोई राधा बना और देवता बाल रूप से जन्म लेकर उनके चारों तरफ धूमते रहे, क्योंकि कृष्ण को वे देवता छोड़ नहीं सकते थे। उन्होंने गोप के रूप में जन्म लिया, गोपिकाओं के रूप में जन्म लिया। आपने भी जन्म लिया एक शिष्य के रूप में, चाहे व्यापारी बने, चाहे नौकरीपेशा बने, और मेरे चारों तरफ पैदा हुए, धूमे मेरे चारों तरफ और इसमें मैं आपका कोई अहंकार, उपना कोई बढ़प्पन नहीं दिखा रहा हूं। कृष्ण भी अगर यह कह रहा है कि तू मुझे पहचान तो कृष्ण कोई अहंकार नहीं बता रहे थे। यदि मैं भी कह रहा हूं कि हम क्या हैं, तो कोई अपना बढ़प्पन नहीं दिखा रहा हूं। आपसे भी ज्यादा नम्र हूं। आपसे ज्यादा सामान्य हूं। मगर इस बात को मैं जानता हूं कि नर को मैं पूर्ण अवतार कैसे बना सकता हूं, यह मैं जानता हूं। मैं यह जान सकता हूं कि आप मैं विराटता कैसे प्रदर्शित कर दूं कि आप सीना खोल के दिखा सकें, ये पूरा ब्रह्माण्ड मेरे अन्दर समाहित है, ये क्रिया मैं आपको समझा सकता हूं। गरंटी के साथ समझा सकता हूं, ये छोटी बात नहीं है, यह सामान्य बात नहीं है कि एक पानी गिलास पी लिया। यह अपने आप मैं एक अद्वितीय घटना है, ऐसी घटना है जो आपके पिछली पचास

पीढ़ियों में नहीं हो पाई, ऐसी घटना है अगली पचास पीढ़ियां संवर जाएंगी क्योंकि आपके अन्दर वह पूर्ण रूप से देवतत्व जाग्रत हो जायेगा। होगा ही, और कृष्ण के भी आपके और मेरी तरह दो हाथ दो पैर ही थे, दो आँखें थीं एक नाक था, दो कान थे। वह अपने आप में पचास हाथ वाले नहीं थे।

हम श्री कृष्ण को कहते हैं, विष्णु को कहते हैं चार हाथ थे, चार हाथ का मतलब दो हाथ तो थे, दो और सलाहकार थे। इसलिए चार हाथ! मेरे पास भी दो हैं और होने चाहिए थे बहुत अच्छे जिससे कि मैं और ज्यादा काम कर सकूँ। लोगों ने उनके चार हाथ बना दिये। हनुमान जी एक जाति थी, उसकी एक पूँछ बना दी बस यह हनुमान जी बन गया। अरे, ऐसा केसे हो ज्या, ऐसा तो कहीं वाल्मीकि रामायण में लिखा नहीं है। बानर एक जाति थी, ऋचिक जाति थी। हमने समझा हनुमान जी बन्दर होते हैं, उनको बन्दर बना दिया।

खैर वह एक घटना है, मगर मैं उस प्रसंग पर आ रहा था कि शंकराचार्य श्लोक में कह रहा था कि गुरु का धर्म कर्तव्य है। जीवन में एक बार उस शिष्य को एहसास करवा देना चाहिए कि तुम गीदड़ नहीं हो, सही अर्थों में शेर हो, सिंह हो, यह तुम्हें बता देना चाहता हूँ और तुम अपने आपको गीदड़ समझ रहे हो, डर रहे हो, हुआं हुआं कर रहे हो, तुम सही अर्थों में ऐसे पिंजड़े के तोते हो, जो अन्दर बैठे हो, बोल मिठू 'राम-राम' और तुम 'राम-राम' बोलते हो, इसलिए कि तुम्हें हरी मिर्च खाने को मिल जाती है, अनार के दाने खाने को मिल जाते हैं।

आपने हवा में उड़ना सीखा नहीं। उस आकाश में कैसे उड़ते हैं वैसे तोते आप नहीं बन पाये। उड़ते हुए मानसरोवर तक कैसे पहुँचते हैं वह आप नहीं देख पाये। मानसरोवर का जल पीने लायक कैसा है वह आप नहीं देख पाए, क्योंकि आपके पंखों में वह ताकत थी नहीं पिंजड़ों में बन्द रहने की वजह से। पंख मर गये और पिंजड़े में कोई तोता हो और पांच साल बाद उसे पिंजड़े से बाहर निकालिए तो आप देखेंगे कि एकदम डर करके फिर पिंजड़े में घुस जाएगा। एक सैकेंड के बाद। वह डरता है, फिर उसको पकड़ के बाहर निकालते हैं, फिर एक सैकेंड के बाद अन्दर घुस जायेगा क्योंकि उसमें इतना डर समा गया है कि कोई बिल्ली मुझे



खा जायेगी और आप भी डर गये हैं कि मैं मर जाऊँगा तो घर में धुस कर बैठ गये क्योंकि घर में अनार का दाना मिल जाता है, हरी मिर्च मिल जाती है, एक पत्ती मिल जाती है, दो तीन बेटे मिल जाते हैं और सब चाहते हैं ये पिंजड़े के अंदर रहे तो अच्छा, नहीं तो उड़ जायेगा, बहुत मुश्किल कर देगा। पिंजड़े में ही ठीक है, मैं बोलूँगा बोल मिठू राम-राम, राम-राम बोलता रहेगा।

उन्होंने भी आपको कैद कर दिया है और आप भी कैद में बहुत खुश हैं, जैसे तोता उस पिंजड़े में वापिस जल्दी धुस जाता है वैसे ही मैं यहां आपको छोड़ूँगा वापिस पिंजड़े में धुस जाएँगे। शंकराचार्य कह रहे हैं ऐसा जीवन कब तक चलता रहेगा तुम्हारा, क्यों चलता रहेगा? अगर ऐसा कोई गुरु तुम्हारे पास नहीं हो या सांदीपन नहीं हो, विश्वामित्र नहीं हो तो वह ज्ञान आपको नहीं दे पाएँगा क्योंकि जब उसको खुद यह ज्ञान नहीं है, तो वह दूसरों को कहां से देगा? मगर जीवन का आनन्द वहां है कि आपके शरीर से सुगन्ध प्रवाहित हो, पास में से निकलें तो ऐसास करें कि इसमें यह सुगन्ध क्या है, ये हँडा, ये गुलाब, ये केवड़ा ये सबका मिला हुआ अनन्द सा है, पास में निकलो तो एक अजीब सी सुगन्ध महसूस होती है। आप के चेहरे से अपूर्व आभा निकलती है, आपके नेत्रों में ज्वाला सी बनती है। आप क्रोधित हों तो सामने वाला भस्म हो जाता है। आप आंखों में गौर से देखते हों तो पागल की तरह सिंचा हुआ चला आता है, एक सम्मोहन सा बन जाता है, आंखों में ऐसा आकर्षण हो जाता है कि वह आपके पास लिपट जाता है, ये क्या चीज है, उस अन्दर के ब्रह्माण्ड के रूप का एक बिन्दु है। कृष्ण चौबीस घण्टे ब्रह्माण्ड रूप लेकर नहीं धूमते रहे। वह तो अर्जुन नहीं माना तो बताया। ये नहीं कि वे हर बार खोल खोल करके दिखाते रहे कि ये रहा ब्रह्माण्ड रूप, देख ले ब्रह्माण्ड रूप। कोई करोड़पति हो तो करोड़ रुपये लेकर नहीं धूमता है।

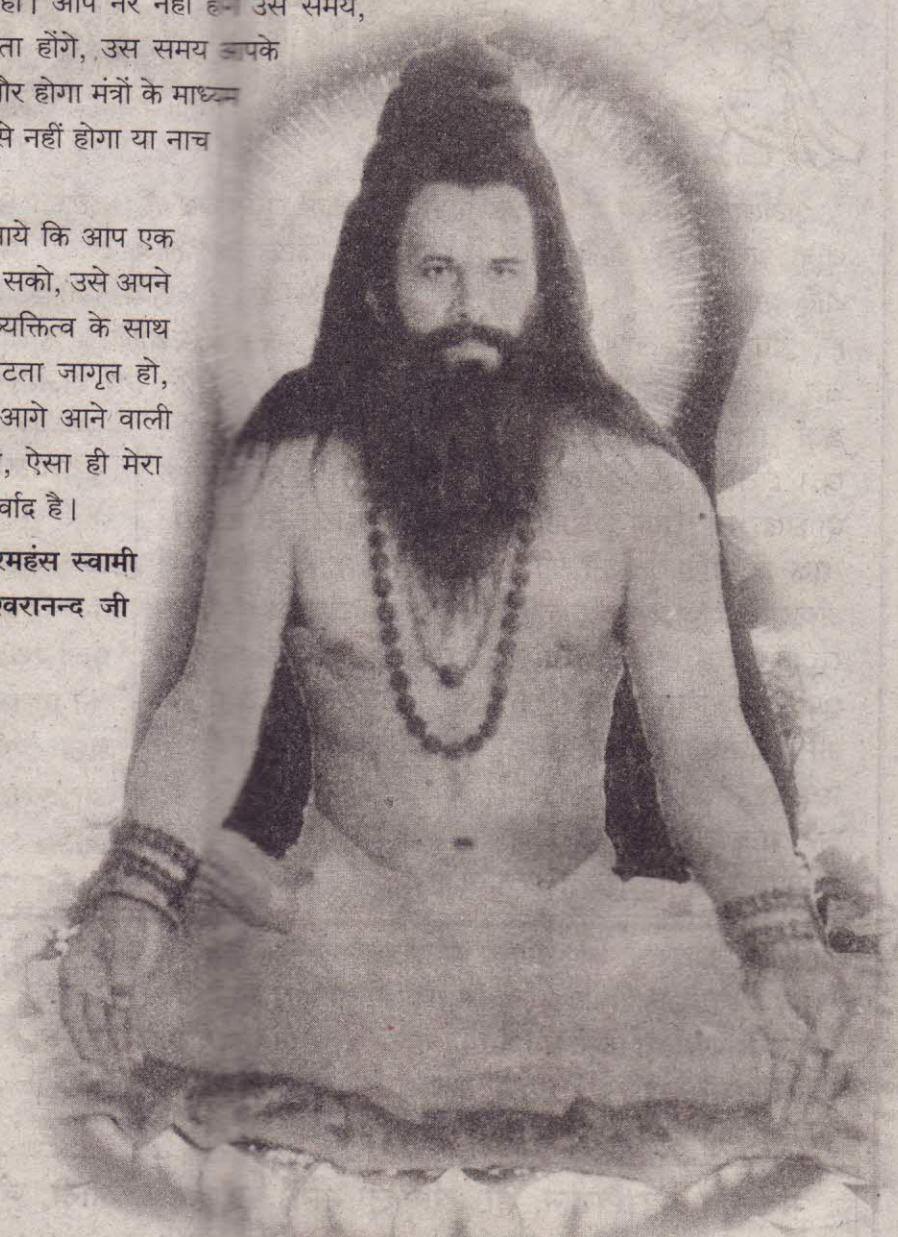
उस श्लोक में शंकराचार्य कहते हैं कि जीवित गुरु के पास में रहना बहुत कठिन



है, नहीं रह पाता आदमी, और रहे, वह अपने आप में सौभाग्यशाली होता है क्योंकि गुरु बराबर शिष्य को ठोकता रहता है क्योंकि उसको उस जगह पहुंचाना है, वह गुरु का कर्तव्य-धर्म है। जब उस जगह पहुंचेगा तो विराट अपने आप में जाग्रत हो जायेगा। आपके अन्दर विराटता जाग्रत हो जायेगी, होगी मंत्रों के माध्यम से। मैंने मंत्रों की अभी परिभाषा दी। साधना या मंत्र का अर्थ है कि हम किसी देवता को आँखों से देख सकेंगे, बात कर सकेंगे। देवता जीवित जाग्रत हैं, हम भी उन देवताओं में से एक देवता बनें, पूर्ण ब्रह्म बनें और पूर्णता प्राप्त करें और जो श्लोक यजुर्वेद के अंत में कहा है कि “**पूर्णमिदं पूर्ण मिदं पूर्णात् पूर्ण मदुच्चरते पूर्णस्य पूर्णमादात् पूर्ण मेवा शिष्यते॥**” वह पूर्णता प्राप्त करें और पूर्ण अवतारी बनें। नर पैदा हुए और पूर्णता प्राप्त करते हुए अमर बनें। अमृतमय बनें, हमारे अन्दर अमृत क्लश स्थापित हो, और हमारे अन्दर ब्रह्माण्ड स्थापित हो जाए जिससे कि हम बिना हिचकिचाहट के बिना, किसी की सहायता के सिद्धाश्रम में प्रवेश कर सकें और बीच में कोई रोक-ठोक हो द्दी नहीं। आप नर नहीं होने उस समय, आप उस समय देवत्व होंगे, देवता होंगे, उस समय उपके अन्दर एक ब्रह्माण्ड जागृत होगा और होगा मंत्रों के माध्यम से। कोई लकड़ी को ठोकर मारने से नहीं होगा या नाच गाने से नहीं होगा।

आप में वह ज्ञान, वह चेतना आये कि आप एक जीवित जागृत व्यक्तित्व को पहचान सको, उसे अपने अन्दर समाहित कर सको, उस व्यक्तित्व के साथ पूर्ण आकाश मण्डल में एक विराटता जागृत हो, आप में एक सुगन्ध प्रवाहित हो, आगे आने वाली पीढ़ी को नया रास्ता दिखा सको, ऐसा ही मेरा आप सभी के लिए हृदय से आशीर्वाद है।

- सद्गुरुदेव परमहंस स्वामी
निखिलेश्वरानन्द जी



वार्षिक सदस्यता



गणपति यंत्र

भगवान गणेश क्षमी देवताओं में प्रथम पूज्य देव हैं। इनके लिना कोई भी आर्य, कोई भी पूजा अधूरी ही मानी जाती है। कमश्वत विद्वाँ एक नाश अवश्व वाले विद्वनविनाशक नपेश की यदि क्षाधक पव छृपा थनी वहे, तो उक्षके घव में ऋचि-क्षिचि, जो फि गणेश जी की पत्नियाँ हैं, औव शुभ-लाभ जो फि उक्षके पुत्र हैं, एक श्री क्षथायित्व होता है। ऐक्षा होने के क्षाधक के घव में कुब्ब, कौभार्य, क्षमृचि, मंगल, उज्ज्वलि, प्रगति एवं कमश्वत शुभ आर्य होते ही वहते हैं। इस प्रकाव एक यंत्र अपने आप में भगवान गणपति एक प्रतीक है, औव इस प्रकाव एक यंत्र प्रत्येक क्षाधक के पूजा क्षाथान में स्थापित होना ही चाहिए। आढ़ में यदि किंकी भी प्रकाव एकी क्षाधना के पूर्व गणपति पूजन अवना हो, तो इक्षी यंत्र एक कंकिस पूजन अव लेना होता है। इस यंत्र एक नित्य धूप आदि कमर्पित अवने की भी आवश्यकता नहीं है। मात्र इक्षके प्रभाव के ही घव में प्रगति, उज्ज्वलि की क्षिति होने लगती है। घव में इस यंत्र एक होना ही भगवान गणपति की छृपा एक द्योतक है, कुब्ब, कौभार्य, शान्ति एक प्रमाण है।

स्थापन विधि - इस यंत्र को प्राप्त कर गणपति चित्र के सामने हाथ जोड़कर 'अं गणपतये नमः' का मात्र दस मिनट जप करें और गणपति से पूजा स्थान में यंत्र रूप में बिवास करने की प्रार्थना करें। इसके पश्चात् यंत्र को पूजा स्थान में स्थापित कर दें। अनुकूलता हेतु नित्य यंत्र के समक्ष हाथ जोड़कर नमस्कार कर दें।

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को बनाकर ही प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप पत्रिका में प्रकाशित पोस्टकार्ड नं. 4 स्पष्ट अक्षरों में भरकर हमारे पास भेज दें, शेष कार्य हम स्वयं करेंगे।

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 195/- डाक खर्च अतिरिक्त - 45/- Annual Subscription 195/- + 45/- postage
Fill up and send post card no. 4 to us at:

-: सम्पर्क :-

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर 342031, (राजस्थान)
Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimali Marg. High Court Colony, Jodhpur-342031, (Raj.), India
फोन (Phone) .0291-2432209, 2433623 टेलीफैक्स (Telefax) . 0291-2432010



गुरु तो आत्म तत्व है

जिसे मन-आत्मा में स्थापित किया जाता है

गुरु का प्राणमय

शरीर ही समस्त ब्रह्माण्ड में स्थित है

आत्म घट आनंद गुरु

यदि इसे और स्पष्ट शब्दों में कहें, तो यह देह से ऊपर उठकर प्राण तत्त्व में जाने की स्थिति है।

जीवन की यह कला वास्तव में स्थूल से सूक्ष्म की ओर अव्याप्त होने की क्रिया है तथा इस प्रकार की क्रियाएँ केवल तत्त्व-ज्ञान से ही समझी जाने योग्य हैं।

गुरुदेव तो प्रत्येक दशा में प्राणमय स्वरूप में अवस्थित हैं ही। यहां तक कि स्थूल देह से आबद्ध प्रतीत होते हुए भी वे वस्तुतः सूक्ष्म और 'प्राण' ही हैं, किन्तु साधक को स्वयं प्राणमय बनना होता है, तभी वे उसे आभासित हो पाते हैं।

देह-गुरु, ज्ञान-गुरु, आत्म-गुरु को स्पृष्टि करता यह शालेय -

विश्व के सर्वश्रेष्ठ चित्रकार चीन देश के माने गए हैं और यी, अपितु चित्रकार को उसके गुरु किसी भी एक वस्तु यथा आज से सैकड़ों वर्ष पहले भी उन्होंने केवल कूची और रंगों से पेड़, फूल आदि के समक्ष बैठा देते थे और कहते थे, कि वह जिस प्रकार के सजीव प्रकृति चित्र बनाए थे, उनकी बराबरी भी वही वस्तु है। जिन क्षणों में चित्रकार में अपने व उस वस्तु तो शायद आज के अतिविकसित सूक्ष्म फोटोग्राफिक कैमरे में भेद समाप्त हो जाता था, उसी क्षण वह कूची उठाकर भी नहीं कर सकते। एक-एक चित्र देख कर ऐसा लगता है, 'निर्माण' कर देता था। यही उनकी विलक्षणता का रहस्य है। कि मानो हम किसी चित्र के सामने नहीं खड़े हैं, वरन् उसी इसका मर्म उनके धर्म अर्थात् बौद्ध धर्म में मिलता है, जहां वातावरण में खड़े हैं।

'ध्यान' को ही जीवन की सर्वोच्चता माना गया।

इसका रहस्य उन चित्रकारों की कूची में नहीं वरन् उनके चिन्तन में छिपा है। प्राचीन समय में एक चीनी चित्रकार को साधना का मर्म भी है और ईश्वर से एकाकार होने का भी। केवल कूची और रंग देकर ही चित्रकारी नहीं सिखाई जाती निहारते रहना, और तब तक निहारते रहना जब तक कि

'स्व-' का बोध लुप्तप्राय न हो जाए। इसके बिना किसी भी

साधना में सफलता मिल ही नहीं सकती, न ही 'गुरु' से साक्षात् हो सकता है।

योगीजन आंख बंद कर इसी स्थिति को तो प्राप्त करने की चेष्टा में निरन्तर रत रहते हैं। इसी को शास्त्रों में तदुपावस्था (किसी वस्तु के अनुसार हो जाना) कहा गया है, और यही चैतन्य समाधि की पूर्णता भी है।

साधक निरन्तर इसी अवस्था को प्राप्त करने के लिए चेष्टारत रहता है, क्योंकि यह तो एक स्वतः स्फूर्त क्रिया है। साधना के मार्ग में प्रवेश करने के बाद वह कुछ ऐसा अनोखा स्वाद चख लेता है, कि निरन्तर उसी की प्राप्ति के लिए सचेत हो जाता है। इसके लिए उसे किसी प्रकार से बताने की आवश्यकता नहीं, किन्तु व्यावहारिक रूप से न तो यह संभव है, कि कोई साधक घर-परिवार छोड़कर केवल गुरु चरणों में ही बैठा रह जाए और न ही यही संभव है, कि वह उनका चित्र सामने रख कर उसे घण्टों निहारता रहे।

पूज्यपाद गुरुदेव ने सदैव ऐसी अति भावुकता पर आधात किया है और इसे जीवन की सर्वोच्चता नहीं माना है। किन्तु साधक, साधना पथ पर प्राथमिक सोपान पूर्ण करने के बाद एकाएक जब 'अमृत' को चख लेता है, तो अपने आप पर नियन्त्रण रख ही नहीं पाता और दिन-रात उसी खुमारी में डूबे रहना चाहता है। उसका लक्ष्य होता है, कि वह ऐसे अमृतत्व की पहचान कर शीघ्रतशीघ्र उसमें विलीन हो जाए।

साधना की दृष्टि से यह स्थिति श्रेष्ठ मानी गई है, क्योंकि यही तो जीवन का लक्ष्य भी है, किन्तु अव्यावहारिक होने के कारण प्रश्रय योग्य भी नहीं मानी गई है। ये द्रन्द्रात्मक विचार साधक को इस प्रकार ग्रसित कर लेते हैं, कि उसका खित्र रहना प्रारम्भ हो जाता है तथा बात-बात में क्रोधित होकर अपना आन्तरिक संतुलन ही नष्ट कर देता है।

बाह्य जगत एवं आन्तरिक जगत का यह द्रन्द्र उसे उसकी प्रगति में बाधित करना प्रारम्भ कर देता है और फलस्वरूप कभी तो साधक साधना के मर्म को ढंगने के लिए दौड़ता है, तो कभी व्यावहारिक जीवन को सफल बनाने के लिए, और इस ऊहापोह में वह कहीं का भी नहीं रह जाता। उसे समझ में नहीं आता, कि सत्य क्या है और श्रेष्ठ क्या है तथा इसी अज्ञानता के कारण वह कभी साधना को ही गलत ठहराने लगता है, तो कभी अपने भाग्य को दोष देना प्रारम्भ कर देता है।

किन्तु साधना का पथ कोई अंधा पथ नहीं होता, जिसमें केवल अनुमानों एवं समीकरणों के आधार पर लक्ष्य निश्चित

किया जाए। इसी मर्म में सांसारिक जीवन की ही भाँति जोड़-तोड़ से कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकता, अपितु स्थिर मन से, शांत चित्त से प्रत्येक स्थिति की विवेचना करनी पड़ती है और वह मर्म ढूँढ़ना पड़ता है, जो सामज्जस्ययुक्त हो। इसी सामज्जस्य को भगवान् बुद्ध ने 'मज्जिष्म प्रतिपदा' अर्थात् 'मध्यम मर्म' की संज्ञा दी थी। प्रत्येक गृहस्थ साधक को भी 'मध्यम मर्म' का ही अनुसरण करना होता है, क्योंकि उसके सामने संन्दर्भी शिष्यों की भाँति केवल एक ही लक्ष्य नहीं, अन्तिम लक्ष्य होते हैं।

एक गृहस्थ साधक भी अपने दैनिक एवं नियमित जीवन को व्यवहार में डाले बिना 'गुरु' को उसी प्रकार निहारने का अधिकारी होता है, जिस प्रकार एक संन्यासी शिष्य का। ... और इसी प्रकार 'निहारते-निहारते' वह भी अपने जीवन को बहुत जल्दी प्रदान कर सकता है, जो कि अन्य संन्यासी शिष्यों के प्रारम्भ की विषय वस्तु समझी जाती है।

उन्नतुः संन्दर्भी शिष्य भी अपने गुरु को प्रतिक्षण अपने चर्म चम्पुओं से देखने का सौभाग्य नहीं प्राप्त कर सकता है, यद्यपि उसके विषय में सामान्य धारण यही होती है, कि वह उन्द्र सभी दायित्वों से मुक्त रहने के कारण निर्द्वन्द्व होकर जब चाहे, जिस प्रकार से चाहे अपने गुरु के समीप बैठ उकता है, उनसे वार्तालाप कर सकता है अथवा ज्ञान प्राप्ति कर सकता है।

संन्दर्भी शिष्यों के विषय में गुरु की आज्ञा एवं स्थितियां गृहस्थ शिष्यों की ज्येष्ठा कहीं अधिक कठोर होती हैं और गृहस्थ शिष्य तो फिर भी सौभाग्यशाली हैं, कि उन्हें कुछ विशेष उपकरणों पर साधना शिविरों आदि के माध्यम से गुरु के सम्मुख उपस्थित होने का सौभाग्य मिल जाता है, किन्तु संन्दर्भी शिष्यों के भाग्य में ये अवसर भी सुलभ नहीं होते। उन्हें गृहस्थ गुरुदेव के समक्ष उपस्थित होने का अवसर तो कई-कई बार्षों में एक बार ही मिल पाता है।

इसके पीछे गुरुदेव का अत्यन्त गृद्ध चिन्तन होता है, जिसे सार्वजनिक नहीं किया जा सकता, किन्तु फिर भी वे शिष्य, जैसा कि पूज्य गुरुदेव ने स्वयं कहा है - '... अनोखी मस्ती में भरे प्रतिक्षण नृत्ययुक्त ही रहते हैं, मानो उन्होंने आनन्द का अनोखा अमृत चख लिया होता है।'

यह स्थिति तब ही आ पाती है, जब शिष्य को 'गुरु को निहारने' की कला का ज्ञान हो गया हो।

'निहारना' ही तो साधना का मर्म है। यह स्थिति जीवन में सौभाग्य से तब आ पाती है, जब शिष्य या साधक ज्ञान के

सभी चरण पूर्ण कर चुका होता है, साधना से भी ऊपर उठ चुका होता है तथा उस तत्व को ज्ञात कर चुका होता है, जो केवल आत्मचक्षुओं से दर्शन करने योग्य हो।

यदि इसे और स्पष्ट शब्दों में कहें, तो यह देह से ऊपर उठकर प्राण तत्व में जाने की स्थिति है तथा शिष्य स्वयं प्राण स्वरूप बनता हुआ पूज्य गुरुदेव के प्राणमय स्वरूप को पहचानने की स्थिति में आने लगता है।

गुरुदेव का प्राणमय स्वरूप ही तो समस्त ब्रह्माण्ड में विस्तृत है, देह तत्व से तो वे भी सामाजिक मर्यादाओं में बंधे हैं।

जीवन की यह कला वास्तव में स्थूल से सूक्ष्म की ओर अग्रसर होने की क्रिया है तथा इस प्रकार की क्रियाएं केवल तत्व-ज्ञान से ही समझी जाने योग्य हैं। जिन्हें केवल स्थूल में ही रहने की आदत पड़ गई हो, जो ज्ञान की कोई बात चलते ही उपेक्षा से मुंह बिचका देते हों अथवा जिन्हें गुरुदेव के स्थूल स्वरूप (या भौतिक स्वरूप) के समक्ष ही तथाकथित रूप से आत्मनिवेदन करने में संतुष्टि मिलती हो, यह साधना ऐसे साधकों या भक्तों की अपेक्षाओं पर खरी नहीं उत्तर सकती और न ही उन्हें इस साधना में प्रवेश कर किसी चमत्कार की आशा करनी चाहिए।

ईश्वर अपने विशाल (विराट) स्वरूप में धरती से आकाश तक लम्बे नहीं हो जाते, जैसा कि अनेक चिनित करते हैं, वरन् यहीं प्रत्येक स्थान पर ही आभासित होने प्रारम्भ हो जाते हैं। यहीं हमारी प्राचीन मान्यता, कि 'ईश्वर कण-कण में निवास करते हैं' का मर्म है।

गुरुदेव तो प्रत्येक दशा में प्राणमय स्वरूप में अवस्थित हैं ही। यहां तक कि स्थूल देह से आबद्ध प्रतीत होते हुए भी वे

वस्तुतः सूक्ष्म और 'प्राण' ही हैं, किन्तु साधक को स्वयं प्राणमय बनना होता है, तभी वे उसे आभासित हो पाते हैं। जिस प्रकार पूज्य गुरुदेव ने अपने एक प्रवचन में स्पष्ट किया है - 'केवल जल में ही जल मिल पाता है।'

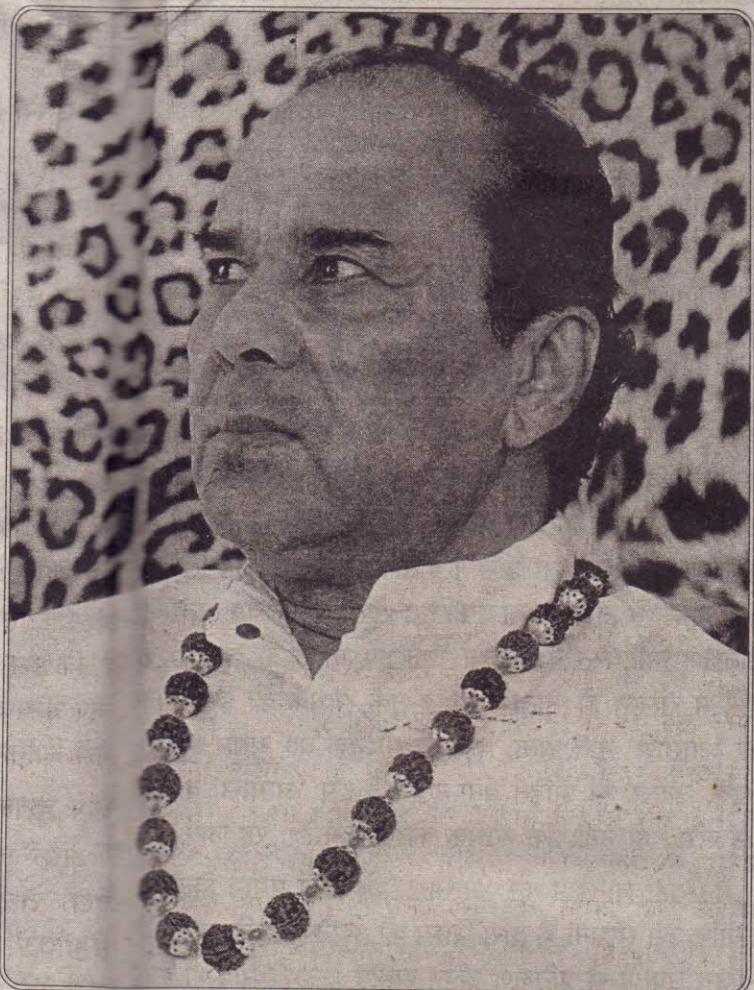
ठीक उसी प्रकार गुरु के प्राणमय स्वरूप को देखने के लिए वस्तुतः तत्व साधना ही वह प्रकार होता है, जिसके माध्यम स्वयं भी प्राणमय हो जाना पड़ता है।

प्राणमय होने का अर्थ प्रायः साधक यह लगा लेते हैं, कि सम्पन्न करनी होती है। यह एक सम्पूर्ण क्रम है और इसका

अन्नमय कोश का त्याग

अर्थात् भोजन-जल छोड़कर ही

उल्लंघन संभव ही नहीं।



प्राणमय स्वरूप में अवस्थित हुआ जा सकता है किन्तु यह धारणा सर्वथा असत्य है, क्योंकि प्राणमयता की दशा तो

मनस की एक दशा विशेष होती है, जब कि स्थूल देह रहते हुए भी सूक्ष्म का आभास किया ही जा सकता है। प्राणमयता

प्रस करने के लिए भोजन-जल छोड़ने की आवश्यकता नहीं होती, अपितु उचित व श्रेष्ठ साधना का अवलम्बन लेना होता

है। भोजन-जल जब छूटना होता है, तब स्वतः ही छूट जाता

है। उसके पहले इस प्रकार की चेष्टा करने का अर्थ है, केवल जन्मना विध्वंस।

वस्तुतः तत्व साधना ही वह प्रकार होता है, जिसके माध्यम

से साधक न केवल अपने गुरुदेव का वरन् किसी भी देवी

ज्यवा देवता का भी साक्षात् करने में समर्थ हो पाता है।

प्रारम्भ में प्रत्येक साधना को उसकी मूल साधना विधि के

स्वयं में करना होता है, तत्पश्चात् उसकी 'तत्व साधना' सम्पन्न

करनी होती है तथा सबसे अंत में 'प्रत्यक्षीकरण की साधना'

गुरु साधना के विषय में महत्वपूर्ण बात यह है कि इसमें करने की जनुमति कृपा पूर्वक प्रदान करते हैं, क्योंकि जिसने गुरुदेव प्रारम्भ से ही 'प्रत्यक्ष' रहते हैं और तत्त्व साधना करने के उपरान्त प्रायः प्रत्यक्षीकरण साधना करने की आवश्यकता शेष नहीं रह जाती। कम से कम इस युग के साधकों को तो 'प्रत्यक्षीकरण साधना' करने की आवश्यकता नहीं है, किन्तु 'तत्त्व साधना' करने की नितान्त आवश्यकता तो है ही। यह आवश्यकता क्यों है, इस बात का विवेचन इस लेख के प्रारम्भ में किया ही गया है।

गुरु तत्त्व साधना करने के उपरान्त ही साधक और विशेष रूप से गृहस्थ साधक उस दशा में आ सकता है, जहां उसके मन से विविध द्वन्द्व एवं भ्रम समाप्त हो सकें। गुरु तत्त्व साधना करने के उपरान्त ही उसे प्रथम बार गुरुदेव की उपस्थिति का प्रतिक्षण आभास होना प्रारम्भ होता है तथा यह अद्भुत भाव एक आनन्दमयता के साथ उपस्थित रहता है, कि वह (साधक) प्रतिक्षण निश्चिन्त व निर्भिक रहते हुए भी अपने कर्तव्यों की पूर्ति में संलग्न हो जाता है। जब तक साधक को इस प्रकार का 'आभास' नहीं होता, केवल तभी तक वह संतम, दुःखी, खिच्च, उदास एवं पीड़ित बना रहता है इस 'आभास' के बाद यह संभव ही नहीं, कि साधक को कोई क्लेश रह जाए।

मैंने यहां जानबूझ कर 'आभास' शब्द का प्रयोग किया है, क्योंकि इस साधना के द्वारा शिष्य को अपने गुरु की उपस्थिति विविध उपायों से प्रतिक्षण अपने समीप अनुभव मात्र ही होती है, अतः जो 'अनुभूति' प्राप्त करने के इच्छुक साधक हों अर्थात् जो समझते हों, कि गुरुदेव 'साक्षात्' उपस्थित हो जायेंगे, यह सोचना उचित नहीं है। इसका सहज कारण केवल यही है, कि प्राणमय स्वरूप की तो केवल इसी 'आभास' के माध्यम से प्रतीति की जा सकती है। स्थूल नेत्रों के माध्यम से तो केवल स्थूल रूप ही देखा जा सकता है।

गुरु तत्त्व साधना का महत्व बाह्य नहीं, अपितु आन्तरिक ही अधिक है। जब साधक आन्तरिक पक्ष को परिपूर्ण कर लेता है, तभी बाह्य लाभ को प्राप्त करने का भी अधिकारी बन जाता है।

यथार्थ साधक तो वही है, जो गुरुदेव से सम्बन्धित कोई भी साधना प्राप्त होते ही सम्पन्न कर डालता है, क्योंकि अन्य साधनाओं के रहस्य तो फिर भी सहज उपलब्ध हो सकते हैं, किन्तु गुरु साधना के रहस्य उपलब्ध होना सौभाग्य की ही बात होती है।

अनेक कसौटियों पर कसने के बाद, अनेक रूप से सुनिश्चित करने के बाद ही वे इस प्रकार के साधना रहस्यों को सार्वजनिक सम्पूर्णता है...

गुरु साधना ही सम्पन्न कर ली, उसी में दक्षता भी प्राप्त कर ली, उसके लिए फिर असंभव रह भी क्या गया?

इसी कालगवश जहां इस प्रकार की साधनाओं से जीवन के अनेक घट्टों की पूर्णता संभव है, परिणाम भी तो संभव हैं, क्योंकि गुरु तत्त्व साधना सम्पन्न करने के बाद साधक का 'तृतीय नेत्र' जन्मत होने की अवस्था में आ जाता है,

कल्पतः: वह किसी के भी भूत-भविष्य-वर्तमान को इस प्रकार से "चढ़" सकता है मानो उसके सामने लिखी कुछ ऐसियाँ हों।

साधक स्वंव ही कल्पना कर सकते हैं, कि ऐसी स्थिति प्राप्त कर कितना अधिक कल्याण किया जा सकता है। अपने द्वं द्वे निश्चित कर लेने के बाद भी इस साधना को प्रकट करने का तान्त्र्य कदाचित पूज्य गुरुदेव की दृष्टि में इतना ही है, कि इस संकलन काल में उनकी ओर से कोई न्यूनता न रह जाए गुरु तत्त्व का सामना तो युग पुरुष आद्य शंकराचार्य जैसे व्यक्तियों तक को करना पड़ा है।

बस छठवा जना जाह्ये

गुरु तो एक धड़कन है... एक मङ्गती है... एक तबंत है... एक झोत है क्षम्पूर्ण था... ब्रह्मांड को पा लेने का बहव्य है... और मल-मूत्र को झड़ी हुई ढेह को प्राणमय भुगठथमय बना लेने की क्रिया है...

'गुरु' एक शब्द बहीं... एक अक्षर नहीं... एक सम्पूर्णता है, जीवन की मिठास है, देह को ऊपर उठाने की क्रिया है, जहर को अमृत बना देने का गोपनीय रहस्य है... अगर शरीर में से प्राण ही चला जाए तो फिर पीछे रहेगा ही क्या? और अगर हमारे शतांश लैं से 'गुरु' शब्द ही मिट गया, तो फिर हमारे जीवन में रहा ही क्या?

हमने गुरु से जीवा सीखा है, पैरों में लिपट कर उठके चरणों को आंसुओं से शिशो देने की क्रिया सीखी है, पूरे आकाश में छा जाने की विद्या सीखी है, रोम-रोम में बस जाने की युक्ति अपनाई है... क्योंकि 'गुरु तत्त्व साधना' मात्र साधना नहीं... उक स्वर्णिम अवस्था है इस जीवन का, सिद्धांश्रम प्राप्त कर लेने का उक क्षण है और सब कुछ प्राप्त कर लेने की पवित्रता है, श्रेष्ठता है, दिव्यता है, सर्वोच्चता है, और

गुरु तत्व आत्मसात् साधना



‘गुरु तत्व साधना’ मूलतः छिक्षी श्री एक उक्ते पाक्ष पूज्यपाद गुरुकेव आ चित्र होना गुरुवाक के अगले गुरुवाक तत्व की जाने आली आवश्यक है, जिक्से वह यंत्र के पीछे स्थापित साधना है, छिन्तु साधन इसे पुष्ट नक्षत्र ऊक दे।

(गुरु पुष्ट, विषय पुष्ट), गुरु पूर्णिमा अथवा गुरु जन्म दिवस (२१ अप्रैल) के श्री प्राकम्भ ऊक असंता है।

इस विशेष अलौकिक साधना में मुख्य स्थान साधन की अंतिक्रिया आ है। वह जितनी भावनापूर्वक और जितनी एकाग्रता के इस साधना ऊक सम्पन्न ऊकेगा, उतनी ही जल्दी इसमें सफलता भी प्राप्त ऊक लेगा। एकाग्रता के अतिक्रिया अंतिक्रिया व आहा परिव्रता आ श्री विशेष महत्व है।

साधन इन सात दिनों में यथा क्रमबद्ध ऊम गातलाप ऊकें, श्रहवर्चय आ पालन हो तथा भोजन आदि के विषय में पर्याप्त संयम श्री स्थिति वहे।

साधना कामग्री के क्रूप में, इस साधना विशेष के क्रूप में केवल ‘पाकक गुरु यंत्र’ आ ही प्रयोग किया जाता है, अन्य छिक्षी श्री कामग्री श्री आवश्यकता नहीं होती।

साधन उचित दिवस पक श्वेत बक्स्त्र धाकण ऊक श्वेत आक्षन पक पूर्व मुख्य होक्क छैठें।

इस कुर्लभ यंत्र ऊक अपने कमळ किक्षी श्वेत बक्स्त्र पक चावलों की ढेकी खनाऊक विस्थापित ऊकें। यदि साधन को आम की लकड़ी आ आजोट मिल कर्ते तो वह उक्त पक ही बक्स्त्र विछा ऊक चावलों की ढेकी पक इसे स्थापित ऊकें एवं धी आ ढीपक प्रज्ञलित ऊक लें।

यह प्रातः आल छह मुहूर्त की साधना है और अंत भाव के यंत्र पक त्राटक ऊकते हुए अनुमान के आधा घंटा निम्न मंत्र आ जप ऊकना होता है -

गुरु तत्व मंत्र

॥ॐ सम् अरत्मप्राण चिन्त्य जाग्रय दर्शय गुं
स्फोटय फट् ॥

मंत्र जप ऊक अत्यन्त मधुकता के साथ एवं नुंजकण के क्रूप में ऊकें। प्रत्येक मंत्र द्वृक्षी ऊक के उच्चाकण के साथ एक प्रकाक के जुड़ा ही वहे। अटक-अटक ऊक, हिल-द्वुल ऊक, जोक-जोक के छोल ऊक अथवा आलक्ष्य के साथ नंत्र जप ऊकने आ ऊर्क अर्थ नहीं होता।

साधना की क्रमापि पक यंत्र ऊक छिक्षी स्वच्छ ऊपड़े के ढंग दें एवं अगले सात दिनों तक वही ऊम खनाएं करें। ध्यान करें, प्रथम दिन जिक्से क्रमय पक साधना प्राकम्भ की है, अन्य क्रमी दिनों में श्री उक्ती क्रमय पक साधना प्राकम्भ ऊकें। यदि इसमें चूक हो जाए, तो साधना ऊक अपित मान ऊक पुनः नये ढंग के प्राकम्भ ऊकें।

साधना आ प्राकम्भ एवं उंत में श्वेताभ माला ऊक गुरु मंत्र आ जप ऊक के उक्ती माला ऊक गले ऊक धाकण ऊकने के फल द्विगुणित हो जाता है। पाकक गुरु यंत्र ऊक क्रमाल ऊक कर्क लें, यह उक्तिर्जित नहीं किया जाता।

साधना समग्री - 300/-

गुरु पूर्णिमा

गुरु और शिष्य का आत्मिक मिलान

जब शिष्य अपने भाव विश्वास, श्रद्धा,
प्रेम और समर्पण प्रकट करता है



है! शुभकाल गाहं अपर्वी शशण गंलं वा

गुरु पूर्णिमा के उत्कर्ष पर प्रत्येक ज्ञात्यक एवं शिष्य
उपक्षित रहना चाहता है, वह इस उत्कर्ष पर
पूज्य गुरुदेव के चरण स्पर्श कर उत्तरें आशीर्वद
प्राप्त करना चाहता है, कैकिय किंहौं करणवश
यदि आप उपक्षित न हों तो आप घर पर
रहकर श्री गुरुदेव का आशीर्वद प्राप्त कर जक्षते हैं।
प्रस्तुत पूजन इस उत्कर्ष पर पूज्य गुरुदेव की
ओर जै आपके द्वारा आशीर्वद स्वरूप है।

इस भागते-दौड़ते अत्याधुनिक जीवन में दो क्षण भी विश्राम प्रस्तुत जीवन के प्रति, जिसे समाज ने उस पर डाल रखा
लेने की कल्पना करना असम्भव सा ही लगता है। जड़ पदार्थ है, विद्रोह उस भौतिकतायुक्त जीवन से, जिसमें अपूर्णता है,
के मध्य रहते व्यक्ति का जीवन भी जड़वत् ही हो जाता है... समस्याएँ हैं, जो तनावयुक्त जीवन है, जिसमें अभाव है,
और जब ऐसे आपाधारी भरे जीवन में कहीं कोई अपरिचित होती हुई, परिचित सी वाणी सुनाई देती है, तो वर्षों-वर्ष से
आवरण में लिपटा हृदय अपनी सुमावस्था को छोड़कर
अंगडाइयां लेने लगता है, रोजमरा के कार्य की तीव्रता मन्द
पड़ने लगती है, जड़ युक्त मशीनी जीवन में आंशिक रूप से
गति का स्पन्दन आरम्भ हो जाता है, हृदय में विद्रोह की
भावना सी उत्पन्न होने लगती है।

आखिर किसकी होती है वह वाणी, जो ठहरे हुए जल में
हलचल उत्पन्न कर देती है? और यह हलचल, यह विद्रोह हृदय में गुरु का ही तो संगीत वर्णित हुआ है, उनकी ही तो
किसके प्रति? जो मानस पिछले चालीस वर्षों से एक ही दिशा लयबद्धता में शिष्य आवद्ध हो सकता है, उनकी ही शीतल
की ओर अग्रसर हो रहा था, उस जड़युक्त जीवन के प्रति, उस वाणी को ग्रहण कर वह उच्कोटि का व्यक्तित्व बन सका है।

श्री गुरु पूर्णिमा पर घर में श्री निखिल पूजन साधना आवश्यक

यह सिर्फ कहने की बात नहीं है, अपितु अनुभव करने की है। गुरु साधना को ही पूर्णता से सम्पन्न कर ले, तो फिर उसे किसी अन्य साधना को सम्पन्न करने की आवश्यकता ही नहीं होती है।

गुरु तो एक सुगंधित पुष्प है, जिसकी सुगन्ध का अनुभव शिष्य के आचार-विचार से ही समाज अनुभव करता है। बिना गुरु तत्व के तो शिष्य के जीवन की कल्पना भी व्यर्थ है। क्या है शिष्य के जीवन का मर्म? शिष्य भी तो आखिर उसी समाज में रहते हैं, जिसमें सभी रह रहे हैं, वे तो सिर्फ दो हाथ - दो पांव वाले ही होते हैं, उनकी भी तो गृहस्थ की और सामाजिक कठिनाईयां होती होंगी।

शिष्य की आज तक अनेक व्याख्याएं बनी हैं, एकलव्य भी शिष्य था, अर्जुन भी शिष्य था। शिष्य तो वही बन सकता है जो गुरु की दृष्टि, गुरु के हृदय में उत्तर सके, चाहे वह कोई भी माध्यम हो।

शिष्य-जीवन का मर्म तो वह ही समझ सकता है जो स्वयं शिष्य बनने की ओर अग्रसर हुआ हो, इस राह की बातें तो वह ही समझ सकता है जो स्वयं इस पथ पर अग्रसर हो।

वह शिष्य या साधक ही क्या हुआ, जिसने गुरु को पूर्ण रूप से आत्मसात् न किया हो, जिसने गुरु साधना न सम्पन्न की हो। आखिर कृष्ण भी तो गुरु साधना के माध्यम से ही अनेक साधना एवं सिद्धियों को हस्तगत कर पाने में सक्षम हुए। फिर गुरुदेव तो अपने प्रत्येक शिष्य को, अपने प्रत्येक साधक को अपने हृदय की धड़कन बनाना चाहते हैं। वे अपने प्रत्येक शिष्य को पूर्णता प्रदान करता चाहते हैं, वे अपने प्रत्येक मानसपुत्र को पूर्णत्व तो स्वतः ही साधनाओं और दीक्षाओं के माध्यम से देने को व्यग्र रहते हैं। इसके पश्चात् तो साधक की ही न्यूनता कहीं जा सकेगी, कि वह पूर्णता प्राप्त नहीं कर पाया।

अनेक बार ऐसा देखा गया है, कि साधक पूर्णता का अर्थ लगा लेते हैं, कि सीधे समाधि की अवस्था प्राप्त हो, इससे नीचे तो कोई सोचना चाहता भी नहीं है, लेकिन क्या यह संभव है, कि जो साधक स्वयं एक माला मंत्र जप भी सही प्रकार से नहीं कर पाते, क्या वे सहज ही समाधि की अवस्था को प्राप्त कर लेंगे? गुरुदेव का तो पूर्णता से आशय होता है, कि तुम उस स्थिति को प्राप्त कर लो जो तुम्हारे जीवन में आप वाली रुकावटों को सरलता से दूर कर सके।

स्वयं गुरुदेव साधकों को विभिन्न प्रकार की साधनाएं सम्पन्न करवाते हैं, जो साधक के जीवन के लिए आवश्यक तत्व होती हैं, लेकिन इसके साथ ही जब गुरुदेव गुरु साधना सम्पन्न करवाते हैं, तो इसके विषय में सदैव एक ही बात अवश्य कहते हैं, कि यह समस्त साधनाओं का मूल है, यदि साधक

गुरु साधना को ही पूर्णता से सम्पन्न कर ले, तो फिर उसे किसी अन्य साधना को सम्पन्न करने की आवश्यकता ही नहीं होती है।

यह पूजन दिनांक 18 जुलाई 2008 गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर करना है। इस पूजन के लिये आवश्यक मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त सामग्री - 'निखिलेश्वरानन्द दिव्य चैतन्य सिद्धिं यंत्रं', 'गुरु प्रत्यक्ष दर्शन गुटिका', 'गुरु प्राण संजीवनी माला'। पत्रिका के जुलाई 2008 के अंक में गुरु - पूर्णिमा पूजन के विधान का विवरण दिया जायेगा।

साधना सामग्री - 450/-

उप०! यह गृहस्थ जीवन

पत्रिका के अप्रैल 2008 अंक में आपने नारद-नारायण संवाद की कथा पढ़ी होगी जिसके सार में भगवान नारायण ने गृहस्थ बिरजू को नारद से भी ऊंचा अपना भक्त बताया था। वास्तव में गृहस्थ जीवन में नित्य नये चक्कर आते ही रहते हैं। हर शिष्य कि भावना तो यही रहती है कि वह हर पर्व पर और विशेष कर गुरु पूर्णिमा के अवसर पर दौड़ कर जाये और गुरु चरणों में लिपट जाएं लेकिन कई बार यह संभव नहीं हो पाता।

लेकिन यह भी आवश्यक है कि जो कुछ गुरु पूर्णिमा के अवसर पर ऊँकारेश्वर में घटित हो रहा है। वही पूजन आप स्वयं अपने घर में भी गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर अवश्य सम्पन्न करें। यह ठीक है कि गुरु पूर्णिमा के दिव्य अवसर पर प्राप्त होने वाले शक्तिपात से वंचित रह जायेंगे लेकिन उस दिन ठीक उसी विधि-विधान से गुरु पूजन सम्पन्न करना है जो पूजन ऊँकारेश्वर में सम्पन्न होगा और यह पूजन इस भावना से होगा कि आपका शरीर देह आपके घर में है मन प्राण ऊँकारेश्वर में गुरु को निहारते हुए, निखिल को देखते हुए पूजन साधना सम्पन्न कर रहा है।

इस हेतु गुरु पूर्णिमा साधना पैकेट आपके लिये विशेष रूप से तैयार किया गया है। इस साधना पैकेट में 'निखिलेश्वरानन्द दिव्य चैतन्य सिद्धिं यंत्रं', 'गुरु प्रत्यक्ष दर्शन गुटिका', 'गुरु प्राण संजीवनी माला' मंत्र सिद्ध प्राणप्रतिष्ठा युक्त है। इसे आप समय रहते अवश्य प्राप्त कर लें। इस सम्बन्ध में पूर्ण साधना विधान आपकी अपनी पत्रिका मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के अगले अंक में प्रकाशित की जायेगी।



गुरु पूर्णिमा

16-17-18 जुलाई 2008

आरम्भन्निपाठ

मंत्र सत्यम् पूजा सत्यम् देवो निरञ्जनम् ॥
गुरोवर्क्षयं सदा सत्यम् सत्यमेव एवं पदम् ॥

गुरु शब्द का अर्थ है आधांकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाला, लैकिन गुरु पूर्णिमा ऐसा अवसर है जब चित शक्ति अपनी पराकाष्ठा पर पहुंचती है उस समय शिष्य के भाव में, गति में एक सम्पूर्णता आ जाती है।

गुरु पूर्णिमा का दिवस केवल गुरु पूजा का ही दिवस नहीं है। यह दिवस प्रत्येक शिष्य के लिए अपने-अपने गुरु के प्रति श्रद्धा की अभिव्यक्ति का दिवस है। भारतीय आद्यात्मिक परम्परा में गुरु और शिष्य का गुरु पूर्णिमा के अवसर पर मिलन एक संगम की भाँति है। जहां हजारों शिष्य खपी नदियां गुरु में आकर बिलीन होती हैं। इसी कारण गुरु पूर्णिमा के दिन प्रत्येक अपनी चेतना को गुरु का आधिष्ठान गुरु का आधार लेकर व्यक्त करता है इसीलिए यह दिवस प्रत्येक शिष्य के लिए परम हर्ष का दिवस है।

यह महोत्सव शिष्यों द्वारा मनाया जाने वाला एक आत्मिक जागृति का अवसर होता है। यह वास्तव में गुरु पूर्णिमा नहीं क्योंकि गुरु को पूर्णता तो कब की ही प्राप्त हुई होती है यह तो शिष्यों को अपने जीवन में पूर्णता दिलाने आती है। यह मंगल अवसर तो मन में प्रेम, श्रद्धा, भक्ति को परिवर्द्धित कर मन को इष्ट की स्मृति में एकाकार करने आता है। आत्मा में परमात्मा के संदेश को लेकर दिव्य ज्योति जलाने तथा सत् संकल्प जाग्रत करने के लिए आता है। वास्तव में संकल्प दिवस है। गुरु पूर्णिमा का दिन होता है निम्न चेतना पर दिव्य चेतना के अवतरण का, पापों को भ्रम कर पुण्य की तिजोरी भरने का और अपनी कीमती वस्तु अहं को बढ़ाव सर्वस्व समर्पण करने का।

॥ॐ पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते,
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवाय शिष्यते॥

पूर्ण शब्द से गुरु पूर्णिमा का उद्भव हुआ है। पूर्णिमा अर्थात् पूर्ण होने की क्रिया पूर्ण होने का पर्व जिसमें शिष्य अपने पूर्णत्व बोध का साक्षात् करने के लिए करेंगे।

गुरु करणीय हुए वाहन है। पूर्णता तो शिष्य को प्राप्त होती है, इसलिए ऋद्धमुखदेव ने हमेशा ही अपने प्रवचनों में इस पर्व को गुरु पूर्णिमा न कहते हुए शिष्य पूर्णिमा ही कहा है और इस वार की गुरु पूर्णिमा वारस्तव में शिष्य पूर्णिमा - शिव पूर्णिमा ही प्रतीत हो रही है, क्योंकि इस वार ऋद्धम हो रही है गुरु पूर्णिमा साक्षात् शिवद्याम ज्योतिस्तंग औंकारेश्वर में और ऐसा इसलिए कि गुरु ही शिव है और शिव ही गुरु है।

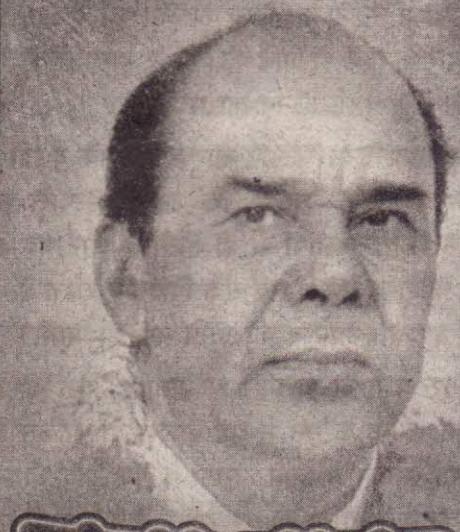
क्योंकि औंकारेश्वर तीर्थद्याम स्थित है मां नर्मदा के किनारे जिसके बारे में शास्त्रों में कहा है -

मां नर्मदा है ऋद्धमुख की जंगल, दर्शन से तेरे मन हो जाएं चंगा है वन्दे तेरे चंग चंग ने जिल विराजे तेरी जल धारा में अमृत जंगा नीका है गुरु धारण किया और उस धारणा में आप को पूर्ण रूप से समर्पित कर दिया। अपने आत्मिक समर्पण के प्रार्थनिकरण का दिवस है गुरु पूर्णिमा।

गुरु ऋद्धम ने शिष्य खपी नदी बिलीन होकर ही अपने आप को पूर्ण ऋद्धमुख करती है। मिलन आवश्यक है यह मिलन प्रेम का मिलन है। एक ऐसे विश्वास का मिलन है जो सारे सम्बन्धों से ऊपर है।

ऋद्धमुखदेव जिस्तिल को जो प्यार करते हैं, अपना आसाध्य मालाते हैं, जिन्होंने अपने हृदय में उन्हें धारण किया है। वे सारे शिष्य एकत्र होंगे ॐकारेश्वर में नर्मदा के नद पर पुण्य भूमि में अपने प्रेम को बांटने के लिए, अपने प्रेम को समर्पण करने के लिए, सभी शिष्यों का स्वामत है।

गुरु-पूर्णिमा गुरु और शिष्य के मिलन का वह दिवस है जिस दिन गुरु साक्षात् अपने शिष्यों के मस्तक पर प्रतिविम्बिति होकर उसे आशीर्वाद एवं भौतिक समस्याओं के निवारण का मार्ग प्रशस्त करते हैं। जिस्तिल परिवार के लिये यह बड़ा ही सौभाग्य का दिन है जिस दिन त्रिमूर्ति गुरुदेव, औंकारेश्वर में सभी शिष्यों तथा साधारणों के हृदय को स्पर्श करके, उनके ऊपर ज्ञान की वर्षा शिष्य अपने पूर्णत्व बोध का साक्षात् करने के लिए करेंगे।



गुरु भक्ति में ही सारी शक्ति है
गुरु ही गति पार लगाते हैं
गुरु ही ज्ञान प्रदान करते हैं
गुरु ही शिव रूप में प्रदाता है

बुक्षु गुरुर्कृ-गुरुर्कृ-गुरुर्कृ-गुरुर्कृ

आज का मनुष्य दुःखों क्यों है? उसके जीवन में बाधाएं, परेशानियां और समस्याएं क्यों हैं? रोग और पीड़ाएं इस जीवन में क्यों व्याप्त होती हैं? इस शब्द जीवन का अर्थ क्या है? मृत्यु क्यों होती है? इन दुःखों, बाधाओं और परेशानियों का अंत कहां है?

गुरुः सर्वर्द्यं गुरुः शास्त्रं गुरुर्वदो गुरुर्गतिः ।
गुरुरेव महत् सर्वं तस्मै श्री गुरुर्वे नमः ॥

गुरु ही सत्य हैं गुरु ही शास्त्र हैं गुरु ही वेद हैं और गुरु से ही गति प्राप्त हो सकती है, सही अर्थों में तो गुरु ही सब कुछ होते हैं इसीलिए सभी देवताओं को प्रणाम करने से पूर्व में अपने गुरु को प्रणाम करता हूं।

ये ऐसे ज्वलन्त प्रश्न हैं, जो प्रत्येक विचारशील व्यक्ति के समाप्त करने का कारण बनती हैं। इसके लिए सबसे पहले वह मन-मस्तिष्क को चिन्तन के लिए उद्वेलित करते ही हैं और तलाश करता है किसी ऐसे व्यक्तित्व की, जो उसे इस प्रकार वह इनका उत्तर पाने का प्रयास भी करता है। वह यह चिन्तन की क्रियाओं का ज्ञान दे सके, उसका परिचय चिर शाश्वत करने का प्रयास करता है, कि आखिर कोई तो ऐसा उपाय आनन्द से करा सके, उसे उस पथ पर ले जा कर खड़ा कर होगा, जो उसके जीवन को आनन्द-पथ पर गतिशील कर सके, जिसे पूर्णता-प्राप्ति का पथ कहा गया है, जिसे आनन्द-सकेगा; कोई तो ऐसा मार्ग होगा, जो उसे समस्याओं, बाधाओं प्राप्ति का पथ कहा गया है, जिसे अद्वितीय प्राप्ति का पथ कहा और परेशानियों के भंवर से निकाल कर उन्नति और पूर्णता के जय है, जिसे श्रेष्ठता प्राप्ति का पथ कहा गया है। इस प्रकार लक्ष्य की ओर गतिशील कर सकेगा; कोई तो ऐसी क्रिया वह पूर्णता के पथ पर गतिशील होने की क्रिया आरम्भ करता है। होगी, जो उसके समस्त दुःखों का अंत कर सकेगी और वह ऐसे ही व्यक्तित्व को वेद, पुराण, शास्त्रों और समाज में चिर शाश्वत आनन्द प्राप्त कर सकेगा।

इस चिन्तन के माध्यम से ही व्यक्ति उन क्रियाओं को मात्र को यह ज्ञान हो पाता है, कि मनुष्य जीवन के समस्त सम्पन्न करने की ओर अग्रसर होता है, जो उसके दुःखों को दुःखों का मूल कारण उसका 'अहं' बोध है।

सामान्य मनुष्य का 'अहं' उसके शरीर से सम्बन्धित रहता है, वह मानव शरीर को ही सब कुछ मानता है और शरीर ही उसकी समस्त क्रियाओं का केन्द्र बिन्दु होता है। उसकी समस्त क्रियाएं इस शरीर को ही ज्यादा से ज्यादा आराम, ज्यादा से ज्यादा सुख, ज्यादा से ज्यादा सुविधाएं पहुंचाने के लिए होती हैं, उसके प्रत्येक क्रिया-कलाप का मूल बिन्दु यही होता है, कि किस प्रकार वह ज्यादा से ज्यादा शारीरिक सुख प्राप्त कर सके!

फलतः वह भोगों और विषयों में लिप्त होता है और शारीरिक सुख प्राप्त करने के साधनों और उपायों को प्राप्त करने में जुट जाता है, वह मकान खरीदने की क्रिया करता है, मकान के अन्दर कीमती साज-सज्जा करता है, गाड़ियां खरीदता है, कीमती वस्त्र पहनता है, खाने में विधि व्यञ्जनों और पकवानों को ग्रहण करता है, अनेक नौकर-चाकर रखता है, रमण के लिए सुन्दरतम स्त्रियों की कामना करता है - ये समस्त क्रियाएं सिर्फ मानव शरीर को सुख पहुंचाने के लिए ही होती हैं, आत्मिक सुख जैसा कोई शब्द उसके शब्दकोश में नहीं होता और न ही उसके क्रिया-कलाप इस हेतु होते हैं।

यदि व्यक्ति अपने शरीर के प्रति आसक्ति रखता है, तो 'काम' उसके जीवन में हावी होगा ही, काम का मूल ही शरीर विषयक चिन्तन है, आत्म विषयक चिन्तन में काम जैसा कोई शब्द ही नहीं है, अतः काम का प्रभाव व्यक्ति के चिन्तन पर, व्यवहार पर तथा नित्य के क्रिया-कलाप पर पड़ेगा ही। **फलतः** वह कामासक्त होगा, रति-क्रीड़ाओं में रत होगा।

जहां काम होगा, वहां क्रोध भी होगा, यह निश्चित है। जब व्यक्ति की किसी कामना या कामासक्ति में विघ्न उपस्थित होगा या वह कामना पूर्ण नहीं होगी, तो वह क्रोधोन्मत्त होगा ही। 'गीता' जैसा अद्वितीय ग्रंथ भी 'क्रामात्क्रोधोऽभिजायते' (अर्थात् काम से क्रोध उत्पन्न होता है) कह कर इसकी सत्यता को प्रमाणित करता है।

शरीर विषयक चिन्तन है, तो जीवन में लोभ भी व्याप्त होगा ही। ऐसा व्यक्ति ज्यादा से ज्यादा धन कमाने का प्रयत्न करता है और उस धन से सिर्फ सुविधाएं ही नहीं खरीदता, उसे भविष्य के लिए बचा कर भी रखता है। धन का लोभ है, तभी तो वह ज्यादा से ज्यादा धन प्राप्त करना चाहता है, और इसके लिए वह प्रतिदिन सैकड़ों झूठ बोलता है, सैकड़ों व्यक्तियों को धोखा देने का प्रयत्न करता है, फिर उसके लिए न्याय-अन्याय या पाप-पुण्य का कोई अर्थ नहीं होता।

मोह भी भौतिक जीवन का एक अंग है, व्यक्ति मोह में है होता है, उसी में अपने चित्त को लगाये रखता है।

पल्ली, पनि, पुत्र, पुत्री, धन-सम्पत्ति, कुर्सी आदि के।

भट जी सामान्य मनुष्य के जीवन का अंग बन चुका है, उसे इस मानव शरीर के नष्ट हो जाने का भय है, सम्पत्ति की चोरी हो जाने का भय है, कुर्सी छिनने का भय है।

और वह समस्त क्रिया-कलाप कारण हैं उसके दुःखों के। दुःख का यह प्राकृतिक गुण है, कि उसकी उत्पत्ति सदैव शरीर विषयक क्रिया-कलापों से ही होती है और यह शब्द मानव जीवन के शब्दकोश में तब तक विद्यमान रहता है, जब तक कि चिर शास्त्र आनन्द की प्राप्ति नहीं हो जाती।

यह ज्ञान गुरु कृपा से ही प्राप्त हो पाता है, गुरु की कृपा दृष्टि पाकर ही व्यक्ति के मन में यह प्रकाश आलोकित होता है और उसे यह समझ में आने लगता है, कि यदि जीवन में आनन्द ज्ञान करना है, दुःख को परे हटाना है, तो सबसे पहले सामाजिक विकास की ओर से मुंह मोइना होगा, क्योंकि ये ही मृत्यु के कानून हैं और उनकी वजह से व्यक्ति जन्म-मरण के चक्र से कुटकर्ण नहीं प्राप्त कर पाता, पूर्णता को प्राप्त नहीं कर पाता। यह ज्ञान होने ही वह शारीरिक क्रिया कलापों से दूर हटने की क्रिया जारी रखना है, वह विषयों को विष के समान छोड़ कर सद्गुरुओं को अपनाने की क्रिया आरम्भ करता है। इन क्रियाकानी भी गुरु ही अनुग्रह-वश प्रदान करते हैं। फिर व्यक्ति के लिए 'अहं' शरीर बोध न होकर आत्म तत्त्व जा बोध बन जाता है, फिर उसकी क्रियाएं आत्म विषयक हो जाती हैं, किन्हें सामान्य बोलचाल की भाषा में 'साधना' कहते हैं।

"अहिंसा," सत्य, जस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदि यमों और ऋच, स्तोत्र, तप, स्वाध्याय तथा ईश्वर प्रणिधान आदि नियन्त्रण का यात्नन करता हुआ साधना पथ पर अग्रसर होकर वह धौरे-धौरे अपने मूल स्वरूप को पहचानने की क्रिया करता है। शरीर उसके लिये सुख-भोग-साधना का माध्यम न होकर नैदिक बन जाता है, जिसमें आत्म तत्त्व रूपी मूर्ति स्थापित होती है। वह इस मन्दिर की सफाई तो करता है, उसकी देखभाल तो करता है, उसकी सुरक्षा तो करता है लेकिन चिन सदैव जान्मा रूपी उस मूर्ति में ही लगा रहता है, जो इस शरीर रूपी मन्दिर में प्रतिष्ठित है।

भावावेश में वह मन्दिर की दीवारों से नहीं लिपटता, वह उन दीवारों के समक्ष न तमस्तक नहीं होता, वह उन दीवारों की पूजा-अर्चना नहीं करता, अपितु वह तो सदैव उस मूर्ति के चरणों की ही बन्दना करता है, उसी के समक्ष न तमस्तक होता है, उसी में अपने चित्त को लगाये रखता है।

इस किया में सदैव आनन्द की ही प्राप्ति होती है, यहां दुःख जैसे किसी शब्द का अस्तित्व ही प्राप्त नहीं होता।

लेकिन यह भी प्रारम्भिक बिन्दु है, जब आत्म तत्त्व का पूर्ण साक्षात्कार होता है, तब ही वह अपनी विराटता का अनुभव करता है। फिर वह पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु या आकाश नहीं रह जाता, क्योंकि इनसे मात्र उसके शरीर की रचना हुई है, उसके आत्म तत्त्व की नहीं, वह इस तथ्य को जानकर पंचभूतात्मक विश्व के प्रति साक्षी भाव धारण कर लेता है, फिर उसके ऊपर इनके बंधन भी लागू नहीं होते, वह रोगों से ग्रसित नहीं होता, सुख-दुःख उसके ऊपर प्रभाव नहीं डालते, सांसारिक विषय-वासनाएं उसे प्रभावित नहीं कर पातीं, शरीर की क्रियाओं को वह साक्षी मात्र बन कर देखता रहता है, उनमें लिपि नहीं होता... और जब लिपि नहीं होता, तो वह उनके परिणाम का भागी भी नहीं होता। वह कर्ता और भोक्ता की परिधि से ऊपर उठ जाता है।

फिर वह व्यक्ति ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र भी नहीं रह जाता, क्योंकि सारी वर्ण व्यवस्था शरीरजन्य है, इनके कर्म शरीरजन्य हैं, आत्मा न तो किसी वर्ण से सम्बन्धित है न ही किसी जाति-उपजाति से, वह न तो ब्राह्मण है, न क्षत्रिय, न वैश्य और न ही शूद्र।

फिर वह सृष्टि के प्रत्येक कण में अपना अस्तित्व अनुभव करने लग जाता है और उसके मुख से उद्घोषित होता है - 'अहं ब्रह्मास्मि'। शरीर जैसी सीमा उसके लिए तुच्छ हो जाती है। ऐसे समय में उसे अपनी देह का भान भी नहीं होता और वह लीन हो जाता है समाधि में, आनन्द के महासम्मान में... उस अखण्ड आनन्द में, जिसे वेदों और पुराणों ने नेति-नेति कहा है, जो व्याख्या से भी प्रेरणा है, जिसे जिह्वा या लेखनी व्यक्त नहीं कर सकती।

लेकिन इस लक्ष्य को तभी प्राप्ति किया जा सकता है, जब इस हेतु यात्रा का आरम्भ हो, जब तक इस यात्रा का आरम्भ नहीं होता, तब तक लक्ष्य के निकट पहुंचने की क्रिया नहीं हो सकती, तब तक इस पूर्णता की प्राप्ति नहीं हो सकती।

अब प्रश्न यह उठता है, कि इस यात्रा का प्रारम्भ कैसे होगा?

सांसारिक विषय-वासनाओं से मुक्ति प्राप्त करने और आत्म तत्त्व का साक्षात्कार करने के अनेकों उपाय बताये गए हैं। पंडित कहते हैं, कि पूजा-उपासना और व्रत उपासना ही मोक्ष योगियों, वेदों और उपनिषदों, शास्त्रों और पुराणों सभी ने



प्राप्ति के उपाय हैं; तांत्रिकों का कहना है, कि इस हेतु तंत्र साधना ही सर्वश्रेष्ठ मार्ग है; भक्तों का कहना है, कि भक्ति के द्वारा ही ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है; योगियों ने बताया है, कि एक मात्र ध्यान से ही मुक्ति और समाधि की स्थिति प्राप्त हो सकती है।

लेकिन फिर प्रश्न यह उठता है -

- ❖ हमें इस यात्रा-पथ का ज्ञान कौन देगा?
- ❖ साधना पथ पर कौन हमारा सहायक होगा, जो हमारा उस मूल तत्व से परिचय करा सकेगा?
- ❖ कौन हमें उच्च कोटि की साधनाएं देकर, उन्हें पूर्णता से सम्पन्न करा कर इस आत्मा पर अनेकानेक जन्मों से परे संस्कारों और वासनाओं के बंधनों को काट सकेगा?
- ❖ कौन हमें ध्यान और समाधि की पूर्णता तक पहुंचा सकेंगा?
- ❖ आत्मा को उनकी वास्तविकता का एहसास करा कर कौन हमें इस आवागमन के चक्र से मुक्त करा सकेगा?

इस यात्रा पथ पर पूर्णता प्राप्त कर चुके महान् ऋषियों और

एक स्वर से स्पष्ट किया है, कि 'सद्गुरु' ही एक मात्र ऐसे व्यक्तित्व हैं, जो प्राणी मात्र को ज्ञान देते हुए साधना पथ पर अग्रसर कर उसे आत्म बोध कराने में सक्षम हैं।

वे ही भिन्न-भिन्न माध्यमों यथा-दिक्षा, प्रवचन, साधना आदि द्वारा व्यक्ति को ज्ञान देते हैं और प्रारम्भ में व्यक्ति को भौतिक पूर्णता प्रदान कर उसे धीरे-धीरे विषय-वासनाओं से विरक्ति की ओर अग्रसर करते हैं, क्योंकि जब तक पूर्ण भौतिक तृप्ति नहीं होगी, तब तक व्यक्ति के अन्दर आसक्ति समाप्त नहीं हो सकती; भौतिक पूर्णता प्राप्त होने पर ही मन स्थिर होता है और स्थिर मन-मस्तिष्क ही सत्य-असत्य में भेद करने में समर्थ हो पाता है अन्यथा मृगतृष्णा में भटकता हुआ मानव वास्तविकता को पहचानने में असमर्थ होता ही है।

वास्तविकता का ज्ञान होने पर ही व्यक्ति साधना पथ पर अग्रसर होता है और गुरु के निर्देशानुसार आचरण व क्रियाएं सम्पन्न करता हुआ पूर्णता के पथ पर गतिशील होता है।

सद्गुरुदेव निखिल

सद्गुरुदेव ही मेरे प्रिय हैं, जिनके माध्यम से मैं परमात्मा की शक्ति का बोध कर सका, उसे अपने भीतर उतार सका, उस विराट सत्ता का अंग बन सका, जिन्होंने जीवन भर योग अर्थात् मन को मनस से अर्थात् परमात्मा से जोड़ना सिखाया। सद्गुरु तो वह शक्ति है, जिन्होंने जीवन के अन्धकार को समाप्त करते हुए अपने ज्ञान के माध्यम से ज्ञान चक्षुओं को जाग्रत किया और जब ज्ञान चक्षु जाग्रत हुए तब मैं पहिचान सका कि मैं कौन हूं, इस संसार में क्यों आया हूं और मेरी क्रिया का स्वरूप क्या रहेगा, वे ही तो मेरे सद्गुरुदेव निखिल हैं।

संसार में व्याप्त परम चेतना जो पूर्ण आनन्द देने वाली है, उस चेतना का एक स्पर्श मंत्र के माध्यम से, दीक्षा के माध्यम से अनुभव किया है, उस कभी न समाप्त होने वाली चेतना के समुद्र स्वप्न ही तो मेरे सद्गुरुदेव निखिल हैं।

ज्ञान शक्ति समारूढ़ तत्त्व माला विभूषितं।

भुक्ति मुक्ति प्रदातारं तस्मै श्री गुरवे नमः॥

मेरे सद्गुरुदेव निखिल तो वह हैं, जो ज्ञान और शक्ति में स्थित हैं और उन्होंने कोई मनकों की माला नहीं धारण की है। उन्होंने तो जीवन तत्त्व और सिद्धान्तों की माला धारण की है, जिनके द्वारा मुझे लीन हो सकें, गुरुमय हो सकें।

संसार में 'मुक्ति' अर्थात् इस जीवन को किस प्रकार से भोगना है, किस प्रकार से मुझे भौतिकता का वरण करना है, इसका ज्ञान हुआ और इसके साथ यह भी ज्ञान हुआ कि जीवन में हर बन्धन से 'मुक्ति' किस प्रकार अनुभव है। दोनों ही स्थितियों को उन्होंने प्रदान किया, वे ही तो मेरे सद्गुरुदेव निखिल हैं।

चैतन्यं आश्रवतं शान्तं व्योमातीतं।

बिन्दुबाद कलातीत तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

मेरे उद्गुरुदेव निखिल तो वह है जो मुझे निरन्तर शाश्वत स्वप्न से चेतना देते रहते हैं, जो अपने शांत स्वरूप के अनुस्वरूप शांति प्रदान करते हैं। जो आकाश से ज्ञान पर्याप्त है उद्याति किसी लोक में स्थित न होकर के अपने शिष्य के हृदय में स्थित हैं, जिन्हें किसी बिन्दु द्वारा, किसी कला द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता क्योंकि उत्तम स्वरूप तो शिष्य के तेज में व्याप्त है। ऐसे ही उद्गुरुदेव मेरे निखिल हैं।

जो परम तत्त्व को बोध कराने वाले हैं; जिनके जीवन में उज्ज्वल अन्धकार, आर्त, विषाद समाप्त हो जाते हैं और मन में परम तत्त्व का परमानन्द समा जाता है और जो हर उम्बव वही कहते हैं -

अर्थात् जो स्वर्यं तो पूर्ण है हीं, अपने शिष्य को भी

पूर्णता प्रदान करते हुए उसे सम्पूर्ण पूर्णतायुक्त व्यक्ति बनाते हैं, जो शिष्य स्वप्नी श्रेष्ठ रचना का निर्माण करते हैं, वे ही तो मेरे प्रिय सद्गुरुदेव निखिल हैं, जिनके बारे में केवल और केवल इना ही कहा जा सकता है -

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च त्वमेव।

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव।॥

परम पूज्य गुरुदेव को हम सादर नमन करते हुए उनसे वही प्रार्थना करते हैं, कि वे हमारे अन्दर के सारे विकारों तथा देह बोध को समाप्त कर श्रद्धा, प्रेम, विश्वास, समर्पण एवं आत्म बोध को जाग्रत करते हुए हमें पूर्णता प्राप्ति के दिव्य पथ पर अग्रसर करें, जिससे कि हम इस जीवन को श्रेष्ठता प्रदान करते हुए परम आनन्द-रस का आस्वादन कर सकें, ब्रह्म से साक्षात्कार करते हुए गुरु से एकाकार हो सकें, उनमें

लक्ष्मी तंत्र की तीव्रतम् तंत्र साधना

जो गृहिंष्ट तत्व से सायुज्य है

गृहिंष्ट

लक्ष्मी

तंत्रभीत्ति साधना

शक्ति तंत्र का दीक्षण प्रयोग

जो दरिद्रता का समूल विनाश कर देता है

जीवन का सब से बड़ा अभिशाप है दरिद्रता, जिससे व्यक्ति की सामाजिक रूप से अथवा भरण-यीवण के ग्रति नहीं, बरन् इसी से ही जाती है एक ऐसी आंतरिक क्षति, दीनता के भाव की उत्पत्ति, जिसका समाधान सहज नहीं होता। जीवन का इस रूप में क्षय कैसे न ही, इसी का समाधान प्रस्तुत कर रही है यह साधना -

इस वर्ष लक्ष्मी तंत्र के सम्बन्धित द्वे महत्वपूर्ण मूर्हत आ रहे हैं. प्रथम तो श्रावण कृष्ण पद्म प्रतियोगी शनिवार 19 जुलाई 2008 को और दूसरा श्रावण शुक्ल पद्म 12 बुधवार 13 अगस्त 2008 को आ रहा है। दोनों ही मूर्हत लक्ष्मी के सिङ्गतम् मूर्हत हैं।

आंवला - सूखे आवालों को कूट पीसकर बारीक चूर्ण बना लें और उसमें बराबर मात्रा में मिश्री मिलाकर कांच के मर्तबान में रख लें। नित्य सुबह खाली पेट छः ग्राम (दो चम्मच) चूर्ण पानी के साथ फांक लेने से कुछ ही दिनों में हृदय के समस्त रोग दूर हो जाते हैं।

पञ्चमुखी रुद्राक्ष पहनने से उच्च रक्तचाप में लाभ होता है। यह रक्तवाहिनियों के कठोर व मोटा होने की दशा में भी लाभ करता है। ध्यान रहे इसका त्वचा से स्पर्श करते रहना आवश्यक है।

रुद्राक्ष के दानों को साफ धोकर नित्य रात्रि में एक गिलास पानी में भिंगों दें और सुबह पानी पी लें। प्रत्येक माह रुद्राक्ष के दानों को बदल कर नये दाने लें।

आयुर्वेद में रक्तचाप को नियंत्रित करने के लिए गैथल जड़ी बूटी होती है, जिसकी जड़ से गोलियाँ बनाई जाती हैं। ये गोलियाँ रक्तचाप को नियंत्रित करने में पूर्णस्त्रिय सहायक रहती हैं।

रक्तचाप का मुख्य कारण चिंता या तनाव होता है, अतः लड़ाई-झगड़े, मतभेद आदि की स्थिति में अपने आप पर नियन्त्रण रखें। एकांत स्थान में कुछ समय विश्राम व हल्की सी झपकी ले लेना उत्तम माना गया है। कहने का तात्पर्य यह है, कि अपनी स्विच्यों में परिवर्तन लाइये, संगीत या बागवानी का शौक पैदा कीजिये, कुछ ऐसा करिये, जिससे आप थॉटलेस या विचार शून्य बन सकें, बच्चों के साथ खेलिये और कुछ नवीनता अपने जीवन में लाइये, इससे आपका ध्यान एक बिन्दु से अलग हटेगा और यह रक्तचाप में अनूकूलता लायेगा।

ऐसे व्यायाम करें जिससे ज्यादा से ज्यादा ऑक्सीजन मिल सके, जैसे प्रातः काल तेजी से चलना, साईकल चलाना, पानी में तैरना, रस्सी कूदना आदि इससे शरीर को ज्यादा ऑक्सीजन मिल सकेगी और रक्तचाप नियंत्रित रहेगा।

शवासन

उचित ढंग से शवासन द्वारा शिथिलीकरण का अभ्यास उच्च रक्तचाप के रोगी के लिए एक वरदान से कम नहीं है।

विधि - शवासन के लिए जमीन पर पीठ के बल लेट जाएं। दोनों हथेलियों को ऊपर की तरफ रखें, पांव की दोनों एडियां आपस में मिली हुई हों और पंजे खुले हुए हों। तत्पञ्चात् सारे शरीर को ढीला छोड़ दें अर्थात् सर्वप्रथम पैरों के अंगूठों को ढीला करने की क्रिया आरम्भ करें तथा क्रमशः पांव, हाथ, डली, घुटना, छाती, शरीर की सभी मांसपेशियों को ढीला बाधाएं दूर हो जाएंगी।

करते जब ध्यान रहे कि शरीर का कोई भी छोटे से छोटा अंग उत्तेजित रहने पाये। आंखें बन्द कर समस्त शरीर को ढीला कर दें। इस समय बहुत धीरे-धीरे सांस सहज भाव से ले। स्त्रेन्डन बन्द कर दें और मस्तिष्क विचारों से खाली कर दें। इन विशिष्टोंकरण की क्रिया का नाम शवासन है जो दिखने ने तो ज्ञानलूपता है, परन्तु सही ढंग से इसका अभ्यास ज्ञानलूपता ज्ञानलूपता नहीं है। इससे पांच मिनट में ही शांति और नान्दनी मिलती है, शरीर तनाव रहित होता है, और रक्तचाप कम हो जाता है। कोई कितना भी थका हुआ हो, दस मिनट ज्ञानलूपता बनने से शीघ्र ही उसकी शारीरिक और मानसिक ज्ञानलूपता दूर हो जाती है।

बांए स्वर का प्रश्नोत्तम -

यदि कोई व्यक्ति बांया स्वर अर्थात् बांए नासिका छिद्र से सांस लगातार जाधा घटा चलाए तो उच्च रक्तचाप कम हो जाता है। ज्ञानलूपता से इच्छानुसार स्वर बदला जा सकता है। कुछ देन दांवी करकट हाथ का तकिया बनाकर सिर के नीचे स्तुक्कर लेटने से बायां स्वर चलने लगता है। इच्छानुसार स्वर बदलने का एक सहज उपाय यह है कि जिस नसिका छिद्र से स्वर चलाना है उसके दूसरी तरफ के नासिका छिद्र में सही दूसरे दूसरे पैर पर जोर देने से, जिस तरफ जोर देने का इच्छने मात्र से, और यदि खड़े हैं तो एक पैर की लड़ी ऊंची करके दूसरे पैर पर जोर देने से, जिस तरफ जोर देना है उससे दूसरी तरफ की नसिका छिद्र का स्वर चलने लगता है।

निम्न रक्तचाप

निम्न रक्तचाप का हृदय दुर्बलता के कारण मूर्छित हो जाने पर हरे ऊंचनों का रस और शहद बराबर-बराबर दो चम्मच-मिलाकर चटाने से होश आ जाता है और हृदय की कमजोरी दूर हो जाती है। निम्न रक्तचाप में बादाम का सेवन बड़ा उपयोगी है। निम्न ७ बादाम गिरि रात को पानी में भिगोकर प्रातः चूच बनाकर पीसकर दूध के साथ प्रयोग करने से निम्न रक्तचाप कुछ ही दिनों में सामान्य हो जाता है और दिल को भी ताकत मिलती है। निम्न रक्तचाप में तत्काल लाभ के लिए बोलना बंद कर दें। चुपचाप बांयीं करकट लेकर लेट जाएं, नींद अनें से ठीक हो जायेगा।

इसके साथ ही आवश्यक है कि अपनी चिन्ताओं की तरफ से ध्यान हटाकर गुरु-ईश्वर साधना में नियमित ध्यान लगायें। चिन्ताएं अपने आप समाप्त होने लगेगी और हृदय सम्बन्धी

शिव्य धर्मी

- ❖ शिव्य को चाहिए वह जब भी गुरु शब्द का उच्चारण करे तो पूर्ण श्रद्धा के साथ उच्चारण करे।
- ❖ गुरु चरणों के अतिरिक्त शिव्य के लिए कोई तीर्थ नहीं होता, उसी भाव से वह गुरु चरणोदय को भी अमृत समझकर पान करता है।
- ❖ गुरु शिव्य को अपने समान, बनाने का प्रयास करते हैं और इसी कारण से उन्हें स्वयं सर्वप्रथम शिव्य के अनुरूप स्वरूप धारण करना पड़ता है, परन्तु यह शिव्य की अज्ञानता होती है, जो वह गुरु को सामान्य रूप में देखता है, उसके लिए ऐसा चिंतन दुर्भाव्यपूर्ण होता है।
- ❖ संयम, श्रद्धा, आत्मविश्वास, प्रेम, निष्ठा और समर्पण ये छः गुण जब स्थापित हो जाएं तब ही जानिए कि आप सफलता की सीढ़ियों पर चढ़ रहे हैं। कोई आपके सफलता के द्वार खोल कर नहीं खड़ा है। आपको ये छः गुण अपने अंदर विकसित करने हैं।
- ❖ सदगुरुदेव ही आपके मित्र हैं, भ्राता हैं, माता-पिता हैं। उनमें ही एकाकार होने की क्रिया शिव्य को करनी चाहिए।
- ❖ जो शिव्य गुरु स्थान के निकट रहता हो, उसे प्रतिदिन एक बार जाकर गुरुदेव को प्रणाम करना चाहिए, परन्तु जो शिव्य बहुत दूर रहते हैं उन्हें वर्ष में तीन बार, या कम से कम एक बार तो जाकर गुरुदेव को अवश्य प्रणाम करना चाहिए।
- ❖ बीज को बोध नहीं होता अपनी पूर्णता का, और इसी तरह शिव्य को भी अपनी पूर्णता का भाव नहीं होता, गुरु का कार्य मात्र उसे उसकी पूर्णता का बोध कराना होता है।
- ❖ कुछ शिव्य गुरु कृपा को ऋण समझते हैं, और धन आदि से चुकाने का प्रयास करते हैं, पर याद रहे, गुरुत्व तो शिव्य के शरीर में बहते रक्त के समान है, और वह रक्त जब तक रहेगा, गुरु कृपा का ऋण भी रहेगा और शिव्य को ध्यान रखना चाहिए कि जब तक शिव्य में प्राण है, गुरु उसको आदेश दे सकते हैं, और उसे पालन करना ही है।



गुरुकृतापर्णी

★ अगर ज्ञान के नुंज को प्राप्त करना है, तो तुम्हें गुरु की एक-एक कसीटी को छोलने के लिए तैयार रहना पड़ेगा, गुरु प्रहार करे और उसे तुम्हारी सहन करना ही पड़ेगा और फिर भी तुम्हें लुस्करना ही पड़ेगा, फिर भी श्रद्धा व्यक्त करनी ही पड़ेगी लग जे, हृदय में, चेतना में, प्राणों से।

★ गुरु को चाहिए कि वह तुम्हें पादपद्म नहीं बनने के, तुम चाहे कितनी ही आत्मव्यर्थी, निज्ज्ञत करो, चापलूसी करो, तुम चाहे कितने ही पांच पसाने पर चढ़ि गुरु सतर्क है तो तुम पर प्रहार करे और देरवे, तुम्हें टैस्ट करे, बास-बास करे।

- ★ अगर मेरे पास पांच लाख रुपये हैं तो तो तुम्हें लखपति बनाने जे नुड्डो कुछ सैकेपड़ ही लगेंगे, सिर्फ पांच लाख रुपये तुम्हारी झोली में डाल देना है। लाल उसके पहले गुरु यह देरव ले कि यह उसका द्वुरूपयोग तो नहीं करेगा।
- ★ अनायास जो चीज प्राप्त होती है, बिना पूर्ण परिक्रम के जो चीज प्राप्त होती है, उसका मूल्य और महत्व शिष्य समझ नहीं सकता, उसकी आंक वही सकता, गुरुर आ जायेगा, और वह

गुरुस्वर गुरु के लिए बहुत धातक सिद्ध हो जायेगा, इसलिए गुरु को चाहिए कि वह उस गुरुस्वर को समाप्त करे।

- ☆ तुम मेरे सामने कितने ही गिड़गिड़ाओ, हाथ जोड़ों, पर मैं जान लेता हूं, कि तुम कहां पर खड़े हो, पूरा बैरोमीटर मेरे सामने लगा हुआ है और जिस क्षण मुझे अहसास होगा कि अब इसमें समर्पण आ गया है, तुम्हें कुन्जन बना देने में मुझे कोई ज्यादा समय नहीं लगेगा, एक क्षण भर ही लगेगा।
- ☆ शंकराचार्य ने बहुत पहले ही पादपद्म को वह ज्ञान दे दिया, जबकि उसका अहम् तोड़ा ही नहीं था जब अहम् तोड़ा ही नहीं तो उसके लिए यह आ गया, कि मुझको अब शंकराचार्य बन जाना चाहिये और मैं शंकराचार्य तब बन सकता हूं जब इनकी हत्या कर दूँगा। इतना जघन्य अपराध इसलिए हुआ, क्योंकि उसका अहम् गला नहीं, उसके खून में गंदगी बनी रही। यह शंकराचार्य की न्यूनता थी, यह शंकराचार्य की गलती थी, और उस गलती का परिणाम शंकराचार्य को भुगतना पड़ा।
- ☆ इतिहास उठाकर देख लें, इतिहास में ये गलतियां हुई हैं, गुरुओं ने गलतियां की हैं, और शिष्यों ने उन गलतियों का लाभ उठाते हुए अपने आप को पतन के रास्ते पर डाला है। पर मैं वह गलती नहीं करूँगा, मैं तो शिष्यों को क्सौटी पर बारबार कसता नहीं रहूँगा।
- ☆ इसलिए गुरु को चाहिए कि वह पादपद्म नहीं पैदा करे और शिष्य को चाहिए कि वह विवेकानन्द बने, उसके पास सेवा हो, श्रद्धा हो।
- ☆ अगर तुम्हारी गुरु के प्रति श्रद्धा नहीं है, तो व्यर्थ है, अगर तुम में सेवा करने की क्षमता नहीं है तब भी व्यर्थ है और यदि श्रद्धा कर भी रहे हो, सेवा कर भी रहे हो तो तुम कोई रहसान नहीं कर रहे हो गुरु पर।

श्रावण मास -

19 जुलाई 2008 से
16 अगस्त 2008

आप साधक हैं,
रिष्य हैं,
रिव भक्त हैं

आ दहा है श्रावण मास

सम्पन्न कीजिये

महाशिवाधिक और महापूजन

वह स्वयं अकिंवन है, किन्तु ब्रह्माण्ड की सब घन्यतियां उन्हीं से उत्पन्न हुई हैं, वह श्वेतांश में रहते हैं किन्तु तीनों लोकों के स्वामी हैं। वे झंगकर रूप हैं तो भी 'शिव' अर्थात् कल्याणकारी हैं। शिव के वास्तविक तत्व को कोई समझने वाला है ही नहीं।

महाकवि कालीदास के उपरोक्त वचनों में कदाचित् कुछ ऐसा नहीं है जिसे अन्यथा कहा जा सके। सत्य ही है, भगवान् भक्त उच्चका साधक जिस क्षण उससे कुछ मांगता है, तो शिव के वास्तविक तत्व को समझने की सामर्थ्य सामान्य प्रकाशनकर से वह यह सूचित कर रहा होता है, कि वह मनुष्य में संभव नहीं हो सकती, क्योंकि वही तो है उस वात्सल्य सम्बन्धित देवी अथवा देवता से अपने को किसी रूप में जुड़ा का सर्वोच्च रूप, जो कोई अभिभावक अपनी संतानों के प्रति अनुभव कर रहा है। यह भावना अथवा मांगने की क्रिया जितनी रखता है। सामान्य मनुष्य जहां अपने चिंतन को केवल अपनी प्रगाढ़ होनी, साधक अपनी प्राप्ति के भी उतना ही निकट संतान तक ही सीमित करके रह जाता है, भगवान् शिव उसे होना।

ही अत्युदात रूप में समग्र विश्व एवं ब्रह्माण्ड के प्रति विस्तारित करने की क्रिया में सदैव तत्पर एवं संलग्न रहते हैं। इसी कारणवश उनकी संज्ञा 'आशुतोष' अनायास नहीं है।

वस्तुतः कोई भी अभिभावक अपनी संतति के प्रति सदैव क्यों नहीं साधक ऐसे महादेव से अपना अभीष्ट प्राप्त कर आशुतोष के समान शीघ्र प्रसन्न होने वाला ही रहता है। उसकी सकलता है?

तो केवल यही स्पृहा होती है, कि उसकी संतान उससे कुछ मांगे तो सही। अपने माता-पिता से कुछ मांगना ही तो सूचक होता है, मांगना किसी भी प्रकार की याचना नहीं होती, मांगना और आग्रह करना तो बस एक क्रिया होती है, जो मध्य के स्नेह तंतु को स्पन्दित कर जाती है।

इन्हरे का सर्वोच्च स्वरूप केवल भावनामय ही होता है। भगवान् भक्त का साधक जिस क्षण उससे कुछ मांगता है, तो अनुभव कर रहा है। यह भावना अथवा मांगने की क्रिया जितनी प्रगाढ़ होनी, साधक अपनी प्राप्ति के भी उतना ही निकट अनुभव कर रहा है। भर में रुद जाते हैं, तो अगले ही क्षण में रीझ भी जाते हैं। तो

भगवान् शिव तो सम्पूर्ण रूप से भावनामय ही हैं, किसी भी देवी या देवता से कहीं अधिक। यह भावना ही तो है कि वे क्षण क्षण मात्र में उसकी कामना पूर्ण कर सकता हो अथवा उसकी समस्याओं का निराकरण कर सकता हो? श्रावण मास में शिव

भगवान् शिव की अपेक्षा और कौन देवता हो सकता है जो समस्याओं का निराकरण कर सकता हो? श्रावण मास में उसकी कामना पूर्ण कर सकता हो अथवा उसकी है। प्रस्तुत है सम्पूर्ण अभिषेक और पूजन विधान -

शिव पूजन आरम्भ करने से पूर्व समस्त सामग्री एकत्र कर लें। साधक शिवरात्रि के अवसर पर रात्रि और श्रावण मास में दिन में ही पूजन करें। पूजन के समय शुद्ध वस्त्र धारण करें। पूजा स्थान को स्वच्छ कर शुद्धता पूर्वक कर, वहां लकड़ी का बाजोट रखें, उस पर सफेद वस्त्र बिछाएं।

पूजन सामग्री

शुद्ध जल, गंगा जल, चन्दन, अक्षत (चावल), कुंकुम, पुष्प, बिल्ब पत्र, पुष्पमाला, पंचामृत (दूध, दही, धी, शहद, शक्कर), वस्त्र, यजोपवीत, अगरबत्ती, नैवेद्य (मिठाई), विविध फल, सुपारी लौंग, इलायची तथा 'शिव पूजन पैकेट'। शिव पूजन पैकेट में मंत्रसिद्ध प्राणप्रतिष्ठायुक्त पारदेश्वर शिवलिंग, शिवयंत्र, 5 रुद्राक्ष, विकटा और रुद्राक्ष माला है।

शिव पूजन एवं अभिषेक पूरे श्रावण मास करना है। यदि नित्य पूजन एवं अभिषेक संभव नहीं हो सके तो 21 जुलाई सोमवार, 28 जुलाई सोमवार, 4 अगस्त सोमवार, 11 अगस्त सोमवार को अवश्य ही सम्पन्न करें तथा श्रावण पूर्णिमा रक्षा बंधन 16 अगस्त को पूर्ण पूजन अवश्य करें। इसके अतिरिक्त पत्रिका के इसी अंक में श्रावण के कुछ विशेष कामनापरद प्रयोग दिये गये हैं, जिन प्रयोगों को साधक अपने कार्यपूर्ति हेतु अवश्य करें।

पूजन विधान

'शिव यंत्र' एवं 'पारदेश्वर शिवलिंग' को एक ताम्रपात्र में रखें, यंत्र के समक्ष चावल की पांच ढेरी बनाकर प्रत्येक पर 'रुद्राक्ष' स्थापित कर दें। एक पात्र में 'विकटा' स्थापित कर दें। रुद्राक्ष की माला को भी एक ओर स्थापित कर दें।

स्नान आदि नित्य कर्म के पश्चात् शांत और पवित्र पूजा स्थल में पीला या लाल जो भी संभव हो आसन पर पूर्व या उत्तर की ओर मुख करके बैठ जायें, अगरबत्ती तथा दीपक जला लें। तीन बार आचमन करें -

ॐ नारायणाय नमः ।

ॐ के शावय नमः ।

ॐ माधवाय नमः ।

हाथ धो लें। इसके बाद पूजन की सभी सामग्री को अपने समीप रख लें।

गणपति पूजन

दोनों हाथ जोड़कर भगवान गणपति का पूजन करें -

परं धाम परब्रह्म परेशं परमाद्भुतम् ।

विष्णु लिर्विष्णु करं शांतं गणेशं प्रणमाम्यहम् ॥

ॐ गणाश्विष्टये नमः ।

इस प्रकार पुष्प, अक्षत तथा पुष्प माला से पूजन करें।

गुरु पूजन

पुष्प का आसन देकर गुरु आह्वान करें -

गुरु ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।

गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

ध्यानं मूलं गुरोमूर्तिः पूजा मूलं गुरोः पदम् ।

मन्त्रमूलं गुरोर्वर्क्ष्यं मोक्षमूलं गुरो कृपा ॥

मूर्कं करोति वाचालं पंगुं लंधयते गिरिम् ।

वर्तकृपा तमहं वन्दे परमानन्द माधवम् ॥

ॐ शिष्य संतापहारिणे श्री गुरवे नमः ।

अक्षत, पुष्प तथा धूप, दीप दिखाकर पूजन सम्पन्न करें।

शिवलिंग एवं शिवयंत्र पूजन

निम्न मंत्र पढ़कर भगवान शंकर का आह्वान करें -

ॐ सद्योजातं प्रपथामि सद्योजाताय वै नमः ।

भद्रे भवे नातिभवे भवस्य मां भवोद्भवाय नमो नमः ॥

ॐ शिवाय नमः । आवाहनं समर्पयामि ।

ध्यान

दोनों हाथ जोड़ लें -

नमस्ते निष्कल रूपाय नमो निष्कल तेजसे ।

नमः सकलनाथाय नमस्ते सकलात्मके ॥

आत्मने ब्रह्मणे तुभ्यमनन्त गुण शक्तये ।

सकलाकल रूपाय शम्भवे गुरवे नमः ॥

ॐ शिवाय नमः ध्यानं समर्पयामि ।

पद्मं समर्पयामि नमः - दो आचमनी जल चढ़ावें।

अर्द्धं समर्पयामि, अर्चमन्तीर्यं जलं समर्पयामि नमः ।

दाहिने हाथ में जल लेकर पुष्प और अक्षत मिलाकर शिव यंत्र एवं शिवलिंग पर चढ़ावें।

जल स्नान

निम्न मंत्र पढ़ कर शिव यंत्र एवं शिवलिंग को जल स्नान करावें -

ॐ जंगा सरस्वती देवा पव्योष्णी नर्मदा जलैः ।

स्नापितोऽसि मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ शिवाय नमः स्नानं समर्पयामि ।

दुग्ध स्नान

निम्न मंत्र पढ़ कर शिव यंत्र एवं शिवलिंग को दुग्ध स्नान

करावें -



ॐ शिवाय नमः मधु स्नानं समर्पयामि ।

शर्करा स्नान

निम्न मंत्र से शिव यंत्र एवं शिवलिंग को शर्करा स्नान करावें -

इक्षुसार समुद्रभूता शर्करा पुश्टि कारिका ।

मत्तापहास्का दिव्या स्नानार्थ प्रतिगृहाताम् ।

ॐ शिवाय नमः शर्करा स्नानं समर्पयामि ।

अब शिव यंत्र को तथा पारदेश्वर शिवलिंग को जल से धोकर दूसरे बड़े पान में रखें। अब मुख्य अभिषेक प्रारम्भ होता है। इसमें दुध मिश्रित जल को शिवलिंग पर चढ़ायें। मूलस्त्र में अभिषेक में रुद्राष्टाध्यायी का पाठ सम्पन्न किया जाता है लेकिन यदि आप अष्टाध्यायी का पाठ स्वयं सम्पन्न न कर सकते तो रुद्राष्टाध्यायी की कैसेट भी लगा सकते हैं और यदि स्वयं पूजन करना चाहते हैं तो ढाई घण्टी अर्थात् 24 मिनट + 24 मिनट + 12 मिनट अर्थात् 1 घंटे तक रुद्राभिषेक सम्पन्न करते समय निम्न मंत्र का जप करें।

॥३५५ नमः शिवाय ॐ हौ जूः सः ॐ
नमः शिवाय ॥

गोक्षीरधाम देवेश गोक्षीर वृवलोपम ।
स्नपनं देव देवेश गृहण एवमेश्वर ॥
ॐ शिवाय नमः दुर्घ स्नानं समर्पयामि ।

दधि स्नान

निम्न मंत्र पढ़ कर शिव यंत्र एवं शिवलिंग को दधि स्नान करावें -

दध्ना चैव महादेव स्नपनं कार्यते मया ।
गृहण च मया दत्तं तव प्रीत्यर्थमेव च ॥
ॐ शिवाय नमः दधि स्नानं समर्पयामि नमः ।

घृत स्नान

निम्न मंत्र पढ़कर शिव यंत्र एवं शिवलिंग को घृत स्नान करावें -

सर्पिषा च मया देव स्नपनं क्रियते ऽधुना ।
गृहण श्रद्धया दत्तं तव प्रीत्यर्थमेव च ॥
ॐ शिवाय नमः घृत स्नानं समर्पयामि नमः ।

मधु स्नान

निम्न मंत्र पढ़कर शिव यंत्र एवं शिवलिंग को मधु स्नान करावें -

इदं मधु मया दत्तं तव तुष्ट्यर्थ मेव च ।
गृहण त्वं हि देवेश मम शान्तिप्रदो भव ॥

उन्नेक नेव जप का मध्यम स्वर में सम्पन्न करते रहें। इनकी पूर्णता के पश्चात् पारदेश्वर शिवलिंग को स्वच्छ जल से (यदि नेत्राजल उपलब्ध हो तो अच्छी बात है।) साफ कर एक दूसरी बाली में स्वस्तिक बनाकर उस में पारदेश्वर शिवलिंग को स्थापित करें।

जब अभिषेक पूर्ण हो जाता है तो भगवान शिव का षोडश शून्यास सम्पन्न किया जाता है। इस षोडश श्रृंगार में इत्र, कुकुम, मुलाल, वस्त्र, धूप, दीप, नैवेद्य का समर्पण किया जाता है।

वस्त्रोपवीत

वज्रोपवीतं समर्पयामि नमः ।

जनेक पहनावे ।

वस्त्र

निम्न मंत्र को पढ़ कर वस्त्र समर्पित करें -

एतद् वासो मया दत्तं सोत्तरीयं सुशोभनं ।

गृहण त्वं महादेव ममायूष्य प्रदोभव ॥

ॐ शिवाय नमः वस्त्रोप वस्त्रं समर्पयामि नमः ।

इसके बाद चन्दन, अक्षत तथा पुष्प चढ़ावें -

चन्दनं समर्पयामि । ॐ शिवाय नमः ॥

चन्दन लगावें।

अक्षतान् समर्पयामि । ॐ शिवाय नमः ।
चावल चढ़ावें ।

पुष्प मालां समर्पयामि नमः ।
पुष्प माला चढ़ावें ।

इसके बाद 'ॐ नमः शिवाय' मंत्र बोलकर बिल्व पत्र चढ़ावें ।

नैवेद्यं निवेदयामि । ॐ शिवाय नमः ।
नैवेद्य (मिठाई) चढ़ावें ।

फल चढ़ावें, मुख शुद्धि के लिए लौंग इलाचयी समर्पित करें ।

शिवयंत्र पूजन

शिवलिंग पूजन के पश्चात्, पारदेश्वर शिवलिंग के सामने चावल की पांच ढेरियां बना लें, फिर क्रमशः प्रत्येक ढेरी में एक-एक रुद्राक्ष निम्न मंत्र बोलते हुए चढ़ावें, ये भगवान शंकर के पांच स्वरूप हैं -

ॐ सद्योजानाय नमः ।
ॐ वामदेवाय नमः ।
ॐ अधोराय नमः ।
ॐ तत्पुरुषाय नमः ।
ॐ ईशानाय नमः ।

इनका चन्दन, अक्षत, धूप, दीप एवं पुष्पों से पूजन सम्पन्न करें ।

इन पांचों ढेरीयों के आगे किसी पात्र में 'शिव यंत्र' को स्थापित करें, यंत्र के साथ ही 'विकटा' को स्थापित करें। स्नान, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप से यंत्र एवं विकटा का पूजन एक साथ करें। इस पूजन के बाद 'रुद्राक्ष माला' से निम्न मंत्र का 11 माला मंत्र जप करें -

मंत्र

॥३० शं शंकराय भवोदभवाय शं ॐ नमः ॥

जप समाप्ति के बाद आरती करें ।

आरती के बाद दोनों हाथों में खुले पुष्प लेकर निम्न मंत्र पढ़ें और शिवजी पर पुष्पाजंलि अर्पित करें ।

अज्ञानाद् यदि वा ज्ञानाद् जप पूजादिकं मया ।
कृतं तदस्तु सफलं कृपया तव शंकर ॥

सभी सामग्री को पूरे श्रावण मास पूजन करने के पश्चात् भाद्रपद कृष्ण प्रतिपदा रविवार दिनोंक 17 अगस्त 2008 को जल में विसर्जित कर दें अथवा शिव मंदिर में अर्पण कर दें ।

साधना सामग्री - 450/-

शिव आरती

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारं ।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि ॥
जय शिव ॐकारा, भज शिव ॐकारा ।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अद्वांगी धारा ॥

ॐ हर हर...

एकानन चतुरानन पंचानन राजै ।

हंसासन गरुडासन वृषवाहन साजै ॥

ॐ हर हर...

दो भुज चारु चतुर्भुज दशभुज अति सोहै ।
तीनों रूप निरखते त्रिभुवन-जन मोहे ॥

ॐ हर हर...

अक्षमाला वनमाला रुद्रमाला धारी ।

त्रिपुरानाथ मुरारी करमाला धारी ॥

ॐ हर हर...

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे ।

सनकादिक गरुडादिक भूतादिक संगे ॥

ॐ हर हर...

कर मध्ये सुकमण्डल चक्र त्रिशूल धर्ता ।

सुखकर्ता दुखहर्ता, सुख में शिव रहता ॥

ॐ हर हर...

काशी में विश्वनाथ विराजे नंदी ब्रह्मचारी ।

नित उठ ज्योत जलावत दिन-दिन अधिकारी ॥

ॐ हर हर...

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका ।

प्रणवाक्षर ॐ मध्ये ये तीनों एका ॥

ॐ हर हर...

त्रिगुण स्वामी जी आरती जो कोई नर गावे

ज्योरां मन शुद्ध होय जावे, ज्योरां पाप परा जावे

ज्योरे घर सुख सम्पति आवे, ज्योरां दुख दारिद्र्य जावे

ज्योरे घर लक्ष्मी आवे, भणत भोलानन्द स्वामी,

रटत शिवानन्द स्वामी इच्छा फल पावे ॥

ॐ हर हर...

जय शिव ॐकारा, भज शिव ॐकारा ।

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अद्वांगी धारा ॥

ॐ हर हर...

तांडवित नृत्य पर डमरु डिडिम प्रवर अशुभ इव भासि शिव कल्प्याण राशि

नृत्यावसाने नटराज राजः
भगवान नटराज ने तांडव नृत्य के द्वारा
संसार को सम्मोहित किया।

क्रोध और करुणा के सागर
नृत्य संगीत और आज्ञाद के सागर
आनन्द तांडव रूप में साधक के
सभी दोषों को भरमीभूत कर देते हैं

आज्ञान्द द्वाष्टव नटस्याज्ञा शिव साधना



वस्तुतः भगवान शिव के तांडवमय रूप को पूर्ण रूप से लग्न सकना अत्यंत दुरुह एवं दुःसाध्य विषय है, और उससे भी दुःसाध्य है उनके नटराज स्वरूप को समझ सकना, किन्तु वह साधक ही क्या; जो किसी दुरुहता के सामने आ जाने पर जड़ता वा अनुभव करे?

हाथ में खट्टवाङ्म, त्रिशूल या नरमुङ्ड, गले में नाग, शमशान की भस्म को लगाए शरीर पर व्याघ्रचर्म का वस्त्र, बिखरी हुई जटाएं, नेत्रों में क्रोध की रेखाएं - कुछ भी तो नहीं ऐसा जो बड़ा मनमोहक सा लगे लेकिन फिर भी वे देवाधिदेव हैं और योगियों के तो प्राण स्वरूप हैं, क्यों....?

कहते हैं कि प्रसन्न हो जाएं तो एक ही क्षण में लुटा बैठें वह
औघदानी उस कोष को, जिस कोष के वास्तव में स्वामी हैं
कुबेर (क्योंकि कुबेर के स्वामी हैं वो!)... नहीं तो एक चुटकी
उनकी प्रिय साधना स्थली है।

कहते हैं कि उनके एक नेत्र में सदैव उमड़ता रहता है प्रेम
तो वहीं दूसरे नेत्र में अग्नि, स्फुलिंग जैसी क्रोध की सदैव
धधकती रहती है ज्वला।

एक ही क्षण में हैं वे सबसे परे, परम तृप्त आत्मलीन और
आत्मलीनता के उन्हीं क्षणों में हैं वे परम चैतन्य, सब में
समाहित भी।

उन्हीं के ठमरु के निनाद से उत्पन्न होता है शब्द, और
उसी शब्द से सृजित होता है संगीत जिस पर कर उठते हैं
करते हुए कर देना कुछ ऐसा, जो इस प्रकृति में एक प्रमाण
बन जाए।

वह होता है ऐसा नृत्य जिसे कहा जाता है तांडव! तांडव
अर्थात् बस यूं ही कुछ झूमकर खिलखिलाते हुए शरीर को
तोड़-मरोड़ लेना नहीं, वरन् रोम-रोम को चैतन्य और जाग्रत
करते हुए कर देना कुछ ऐसा, जो इस प्रकृति में एक प्रमाण
बन जाए।

आनन्द के क्षणों में या आनन्द को सृजित करने के लिए
उनके द्वारा किए गए ऐसे तांडव कहलाते हैं आनन्द तांडव।

**बृत्य का प्रादुर्भाव भगवान शंकर से ही
हुआ है, इसीलिए वे नटराज कहे जाते हैं।
बृत्य का अर्थ है उमंग, मस्ती और आबद्ध,
इनसे ही जीवन की सार्थकता हो सकती है।**

- तो वहाँ कुछ ऐसा भस्मीभूत कर देने के लिए, जिसे अप्रिय मान बैठे हों वे, उनके उग्र और उदाम नर्तन कहलाते हैं, - प्रलय तांडव और इन्हीं दोनों तांडवों के संयोजन सांमज्य से तो गतिशील बनी हुई है यह प्रकृति।

क्योंकि तांडव कर सकता है तो केवल पुरुष और 'पुरुष' की अनुपस्थिति में क्या संभव है यह, कि इस सृष्टि में कोई सृजन हो सके?

समस्त विसंगतियों के मध्य रहने और अटपटे आवरण के बाद भी क्यों भारतीय जनमानस में सर्वाधिक प्रतिष्ठित और पूज्य हैं भगवान शिव?

जिस प्रकार से भगवान शिव का बिम्ब नेत्रों के समक्ष आने पर उनसे एक आत्मवत् भाव सहज ही स्थापित हो जाता है, उसका कारण है परम्परा व श्रुतियों से उनके विषय में प्राप्त वह ज्ञान और वह आश्वस्ति, जो उनकी करुणा के रूप में हमारे मन-मस्तिष्क में स्थायी हो चुकी है।

करुणा के भाव की समकक्षता किसी अन्य भाव से नहीं की जा सकती है, और यह भगवान शिव की करुणा ही होती है जो वे इस प्रकृति में अपने हस्तक्षेप को कभी आनन्द तांडव के माध्यम से तो कभी प्रलय तांडव के माध्यम से अभिव्यक्त करते रहते हैं; अन्यथा आत्मलीन शिव को ऐसा करने की आवश्यकता ही क्या?

तांडव अर्थात् क्रोध की ऊर्ध्वगामी रश्मियों से निर्मित हुए कुछ ऐसे सार्थक स्पन्दन जिनसे मनोवांछित घटित होकर रहे।

क्रोध की अवस्था में भगवान शिव के तृतीय नेत्र खुलने के रूप में अनेक पौराणिक कथाओं में किया गया वर्णन वास्तव में इसी ऊर्ध्वगामी क्रोध का प्रतीक है।

ऊर्ध्वगामी क्रोध का अर्थ है मुख से कोई अपशब्द उच्चरित किए बिना, बाह्य रूप से कोई आघात न करते हुए सहसार में हुए मानसिक आलोड़न-विलोड़न को आशा चक्र के माध्यम से व्यक्त करते हुए, प्रकृति में हस्तक्षेप कर अपना मनोवांछित सम्पन्न करा लेना।

ऊर्ध्वगामी क्रोध का प्रस्फुटन निस्तेज व्यक्तियों से अथवा जिनके जीवन में कोई मूल्य ही न हो, नहीं हो सकता है क्योंकि निस्तेज व्यक्ति को किसी परिवर्तन की अपेक्षा जैसे जो चल रहा हो उसे ही घसीटते रहने में अधिक विश्वास होता है।

क्रोध व करुणा एक ही सिक्के के दो पट्टू होते हैं जिस प्रकार से भगवान शिव एवं भगवान शिव के ही मूर्तिमंत स्वरूप श्री सद्गुरुदेव में ये दोनों भाव भूमियां एक ही क्षण में समाहित हो रही होती हैं।

नहाँ कोई करुणा ही नहीं होगी वहाँ क्रोध उमड़ेगा भी कैसे और क्यों?

वस्तुतः भगवान शिव के तांडवमय रूप को पूर्ण रूप से समझ सकना अत्यंत दुरुह एवं दुःसाध्य विषय है, और उससे ये दुःसाध्य है उनके नटराज स्वरूप को समझ सकना, किन्तु वह साधक ही क्या; जो किसी दुरुहता के सामने आ जाने पर जड़ता का अनुभव करे?

भगवान शिव के इसी स्वरूप में उनका ब्रह्म स्वरूप एवं उनकी साधनामयता भी छिपी है। इसी मर्म को समझ कर महापंडित रावण ने उनके अन्यान्य स्वरूपों से पृथक जिस रूप में उनकी साधना को सम्पन्न किया था वह नटराज स्वरूप ही था।

इसी साधना को सम्पन्न करने के क्षणों में रावण द्वारा रचित शिव तांडव स्तोत्र इस बात का प्रमाण है।

निः सदैह, रावण ने साधना के माध्यम से जिन स्थितियों को प्राप्त किया, किसी भी साधक के लिए कामना का विषय हो सकती हैं और इसके मूल में थी भगवान शिव की साधना, उनके नटराज स्वरूप की उपासना।

- किन्तु रावण ने जिस तथ्य का विस्मरण कर दिया वह यह या कि ज्यों क्रोध के अभाव में करुणा, नपुंसक सहानुभूति के अतिरिक्त कुछ नहीं होती उसी प्रकार से करुणा के अभाव में कोई भी क्रोध पशुत्व में परिवर्तित हो जाता है।

भगवान शिव की साधना का सुर्वोच्च रूप है, महाकाल साधना और महाकाल साधना का रहस्य त्रिपा है... नटराज साधना में। आज सुक्रमण काल के इन क्षणों में यही सुर्प्रद्यम साधना है।

भगवान शिव के नटराज स्वरूप की साधना का सहज शब्दों में अर्थ ही यही है कि साधक के जीवन में करुणा (अर्थात् भावना) और क्रोध (अर्थात् प्रवाहशीलता) के मध्य सामंजस्य स्थापित हो सके। केवल किसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए नहीं, वरन् खुद उसके व्यक्तिगत जीवन के लिए।

‘तांडव’ तो प्रत्येक व्यक्ति करना जानता है, विशेषकर जब पत्नी ने कोई मंहगी सी फरमाइश कर दी हो या अधिकारी ने सब के सामने डांट दिया हो! लेकिन चूंकि उससे कुछ सार्थक घटित नहीं हो पाता है इसलिए वह चीमुना चिल्लाना या तांडव शिववत् नहीं हो पाता है।

पूज्यपाद गुरुदेव ने एक प्रवचन में कहा है... तू क्या, तू क्या, मैं देख लूँगा, मैं देख लूँगा... मुड़ियां बांध कर हवा में लहराना, दांत पीसना इसे क्रोध नहीं कहते हैं, क्रोध तो उसे कहते हैं जिसके द्वारा कुछ सार्थक घटित हो जाए जिस तरह से महर्षि विश्वामित्र ने जब क्रोध किया तो एक नया ब्रह्माण्ड ही रच कर दिखा दिया... क्रोध विनाश का नहीं क्रोध तो किसी नवसृजन का प्रतीक होता है.. क्योंकि मुर्दों में क्रोध नहीं होता है।

‘तांडवित नृत्य पर डमरु डिडिम प्रवर अशुभ इव भांति शिव कल्याणराशि कहने का यही अर्थ है।’ भगवान शिव का वेश अवश्य ही अशुभ सा है किन्तु वे अशुभ नहीं हैं। वे वास्तव में कल्याणप्रद ही हैं।

यदि अशुभ का विनाश करना है तो स्वयं भी अशुभता का वेश धारण करना होगा क्योंकि दुरात्माएं सभ्यता की वाणी को समझना नहीं जानती।

नटराज शिव तांडव साधना

यह एक रोचक विषय है कि साधनात्मक ग्रंथों में भगवान शिव के अन्य स्वरूपों से सम्बन्धित साधनाएं तो प्राप्त होती हैं किन्तु इस रूप से सम्बन्धित साधना का विधान प्राप्त नहीं होता है।

नटराज साधना का अर्थ जहां एक योगी के लिए कुछ है तो वहीं किसी संन्यासी के लिए कुछ और लेकिन एक बार जो समस्त रूप में मान्य है, वह यह है कि नटराज साधना शिवमयता को प्राप्त करने की एक अद्वितीय साधना है।

किसी भी शिव भक्त के लिए तो यह एक अनिवार्य साधना है यहां उसी विधान की प्रस्तुति की जा रही है जिस विधान के द्वारा गुरुदेव ने कभी अपने शिष्यों को यह साधना व्यक्तिगत क्रम में सम्पन्न करवाई थी।

जन्मान्तर 19 जुलाई से प्रारम्भ हो रहे श्रावण माह में सम्पन्न की जाने वाली एक श्रेष्ठ शिव साधना है, जिसे साधक श्रावण माह में ऋषवा किसी भी माह की कृष्ण व्रयोदशी तिथि में या प्रदोष में सम्पन्न कर सकता है। जहां तक संभव हो, साधक इस साधना को नोधूलि की वेला में सम्पन्न करें; अन्यथा रात्रिकाल में।

इस साधना को सम्पन्न करने के इच्छुक साधक के पास तत्त्व यज्ञ यज्ञ अंकित शिव तांडव यंत्र एवं रुद्राक्ष की माला आवश्यक साधनात्मक सामग्री के रूप में होनी चाहिए।

साधना के जबसर पर साधक श्वेत वस्त्र पहने तथा आसन अदि का संग भी श्वेत ही रखें। स्नान आदि से शुद्ध होने के बाद उस दिन की ओर मुख करके बैठें तथा यंत्र को अपने समझ सुन्न निन्न प्रकार से साधना क्रम को प्रारम्भ करें।

सबसे पहले यंत्र को स्नान कराएं तथा पोंछ कर किसी ताम्रपात्र में सर्जें। इसके बाद पुष्प की पंखुड़ियां एवं अक्षत के कुछ दाने लेकर निन्न मंत्र का उच्चारण करते हुए उन्हें यंत्र पर चढ़ाएं। साधक को यह किया पांच बार सम्पन्न करनी है।

मंत्र

तांडव शिवोऽतांडव मत्वोविलसिन्देऽतांडव इहावह इहावह, इह लिङ्ग इह तंत्रि, इह सद्विधेहि इह सद्विधेहि, इह सद्विधेत्स्व, वावत् पूजां करोम्यहम्।

उल्लेख दिन के पश्चात् यंत्र पर चढ़े अक्षत व पुष्प की पंखुड़ियों में से कुछ भाग लेकर उसे अपने मस्तक पर धारण करते हुए निन्न मंत्र की पांच माला मंत्र जप सम्पन्न करें।

मंत्र

ॐ हूँ व्रसः शिवाय सः चैतन्यं नृं ऊँ नमः

मंत्र जब के पश्चात् कुछ देर साधना स्थल पर विश्राम करें तथा इस प्रकार से इस मात्र एक दिवसीय साधना की पूर्णता प्राप्त करें। साधना करने के एक माह के उपरान्त यंत्र व माला को जलाशय में विसर्जित कर दें।

भगवान शिव व साबर मंत्रों का परस्पर गहन सम्बन्ध होने तथा प्रस्तुत मंत्र का साबर मंत्रों की श्रेणी में होने के कारण यह साधना, अद्भुत रूप से प्रभावशाली बन गयी है जिसका साज्जान् स्वयं साधक, साधना के माध्यम से कर सकता है।

वस्तुतः शिव साधक के लिए नटराज साधना सम्पन्न करने के उपरान्त ही भगवान शिव से सम्बन्धित अन्य साधनाओं में आगे मार्ग प्रशस्त होता है।

साधना सामग्री - 410/-

19 जुलाई 2008 से
16 अगस्त 2008

श्रावण मास - रसेश्वर मास - साधना काल

श्रावण मास तो रसेश्वर सिद्धि काल है

श्रावण मास रिव और शक्ति का भूमि-भ्रमण काल है

सम्पन्न कीजिये

बिलाशिंश्चाष्ट्क शिव प्रयोग

श्रावण मास में

पूर्ण कीजिये जीवन की मनोकामनाएं -

भगवान शिव के औघड़दानी स्वरूप को सर्व सम्मति से उनके क्रोधमय रौद्र स्वरूप से तीनों भुवन कांप उठते हैं। एक स्वीकार किया जाता है, क्योंकि इसके इस स्वरूप के विषय में जर जहां वे किसी को धन का अक्षय भण्डार तक सौंप देते हैं, लेश मात्र भी संशय नहीं किया जा सकता है। निर्लिपि, निर्विकार, वहीं दुष्टों के लिए महाकाल स्वरूप में उनके नाश के लिए सत् चित् आनन्द स्वरूप और पूर्ण ब्रह्ममय होते हुए भी वे पूर्ण तत्पर भी हो जाते हैं। इतनी अधिक विपरीत संज्ञाओं से तो रूप से गृहस्थ उपासकों के मध्य अपनी सरलता और सहजता जायद ही कोई देव सुशोभित हुआ हो।

के प्रतीक माने गए हैं। उन योगीश्वर की साधना में जहां योगी अनेक वर्ष व्यतीत कर देते हैं, वहीं एक निश्छल, निर्मल, आर्त पुकार से वे भागे-दौड़े चले आते हैं।

इसीलिए ही तो साधक जब भी आपदाग्रस्त होता है, तो व्यक्ति भी अपने दुःखों और कष्टों से शीघ्रता से मुक्ति पा लेता वह शिव को ही याद करता है, भले ही वह उनका महाकाल है। शिव की साधना या उपासना करने के लिए साधक को स्वरूप हो या महामृत्युञ्जय स्वरूप। भगवान शिव की करुणा के शास्त्रों में जो उदाहरण मिलता है, उसमें संशय किया ही अधिक ताम-झाम की आवश्यकता नहीं होती, जो स्वयं सरल और आनन्दमग्न रहने वाले हों, उन्हें तो यदि साधक श्रद्धा से नहीं जा सकता।

जब मार्कण्डेय ऋषि अपनी आयु पूर्ण कर चुके और यम उन्हें के लिए उद्यत हो उठते हैं।

लेने के लिए उपस्थित हुए, तो वे भगवान शिव का शिवलिंग ऐसे ही भक्त वत्सल, औघड़दानी भगवान शिव से सम्बन्धित बनाकर शिव स्तुति करने लगे और शिव की कृपा के स्वरूप कुछ प्रयोगों को दिया जा रहा है, जिन्हें शिव मास अर्थात् ही यम को विवश होकर मार्कण्डेय ऋषि को साथ लिये बिना श्रावण मास में सम्पन्न करने से साधक को शीघ्र ही सफलता ही वापस अपने लोक जाना पड़ा। ऋषिगण तो क्या, दानवों ने प्राप्त होती है, आवश्यकता है भगवान शिव के प्रति पूर्ण श्रद्धा भी उनकी साधना और तपस्या कर अनेक वरदान प्राप्त किये हैं। एवं विश्वास की।

परम भक्त वत्सल, औघड़ शमशानवासी, कुबे राधिपति, प्रस्तुत लघु प्रयोगों में वस्तुतः भगवान शिव के ही सम्पूर्ण महाकाल, महामृत्युञ्जय, ऐश्वर्य के स्वामी, बाघम्बर धारी वरदायक स्वरूप का समाहितीकरण किया गया है। साधक आदि ऐसे अनेक नामों से पुकारे जाने वाले शिव स्वयं में अनेक अपनी रुचि व क्षमता के अनुसार एक या एक से अधिक प्रयोग विपरीत संज्ञाओं से सुशोभित हैं। एक ओर जहां उनकी नीलकंठ करने के लिए स्वतंत्र है। निम्न प्रयोग को सम्पन्न करना साधक रूप में भक्त वत्सलता की थाह नहीं मिलती, वहीं दूसरी ओर के लिए निश्चित रूप से भाग्योदयकारी सिद्ध होगा ही -

1. सम्पूर्ण पारिवारिक सुख सौभाग्य हेतु

सामान्यतः व्यक्ति के जीवन का आधार उसका परिवार ही होता है तथा स्वयं भगवान शिव का स्वरूप किसी सद्गृहस्थ सदृश्य ही तो है। परिवार के सभी सदस्य निरोगी रहें, परस्पर विचारों की टकराहट न हो, जीवन यापन हेतु आवश्यकता से अधिक धन हो, ऐसी अनेक स्थितियों की प्राप्ति के लिए आवश्यक है, कि साधक 'शिव ऐश्वर्य लक्ष्मी यन्त्र' स्थापित कर निम्न मंत्र का 101 बार जप करें, यदि सम्पूर्ण परिवार के सदस्य एक साथ बैठकर मंत्र जप करें तो विशेष फलप्रद माना गया है—

मंत्रः //ॐ साम्ब सदाशिवाय नमः //

मंत्र जप के उपरांत दूसरे दिन यंत्र को किसी नदी अथवा शिवालय में दक्षिणा के साथ विसर्जित कर दें।

न्यौछावर - 120/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

2. आय के आधानों में वृद्धि हेतु

परिवार अथवा स्वयं किसी भी व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन का आधार 'अर्थ' ही होता है इस तथ्य को आज के भौतिक युग में नकारा नहीं जा सकता। केवल धन का एक बंधा-बंधाया स्रोत ही नहीं, व्यक्ति के पास धन प्राप्ति के अन्य मार्ग भी हों, उसे जीवन में निरंतर आकस्मिक धन की प्राप्ति भी होती रहे। इसके लिए यह लघु प्रयोग सम्पन्न करना उचित है। साधक 'विश्वेश्वर' को प्राप्त कर उसका पूजन चंदन व अक्षत के कर निम्न मंत्र का 101 बार मंत्र जप करें, दूसरे दिन उसे विसर्जित करें तो उसे विभिन्न रूपों में आकस्मिक धन की प्राप्ति जीवन में निरंतर होती ही रहती है—

मंत्रः // शं हर्णे शं //

न्यौछावर - 90/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

3. बेरोजगार व्यक्ति को निश्चित रूप से नौकरी प्राप्ति हेतु

बेरोजगारी स्वयं में जीवन की इतनी बड़ी विसंगति होती है, कि वह व्यक्ति को सामाजिक, मानसिक, आत्मिक, भावनात्मक सभी पक्षों पर तोड़कर रख देती है, ऐसे में आर्थिक अभाव तो इस विसंगति का तब एक छोटा सा पहलू भर रह जाता है। जीवन में यह विसंगति समाप्त करने के लिए साधक को चाहिए, कि वह श्रावण मास में किसी भी दिन 'बाणेश्वर' को किसी थाली में स्थापित कर निम्न मंत्र का सतत् उच्चारण के साथ जलधार बाणेश्वर पर आधे घंटे तक चढ़ा दें। दूसरे दिन होने लग जाता है। यह मन को मथ कर रख देने वाली स्थिति

बाणेश्वर को पूजा स्थान में स्थापित कर दें, मंत्र जप अत्यंत धैर्य और धौमी गति से करें—

मंत्रः //ॐ शं हर्णे शं हर्णे शं हर्णे शं हर्णे शं //

न्यौछावर - 90/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

4. शत्रुओं की समाप्ति हेतु

जीवन को पूर्णरूप से सकारात्मक बनाने के लिए आवश्यक है कि जीवन के नकारात्मक पक्षों पर प्रहार कर उन्हें जड़ मूल से न्यूनतम कर निश्चित हो जायें। शत्रु जीवन, के ऐसे ही नकारात्मक पक्ष होते हैं, भले ही वे किसी भी रूप में क्यों न हों, उन्हें न्यूनतम करने के लिए आवश्यक है कि साधक श्रावण मास के चैत्रन्य दिवसों में अपने समक्ष 'ऋक्ष गुटिका' रखें और जप्त—

मंत्रः //ॐ भं शिव स्वरूपाय फट् //

उपरोक्त मंत्र 101 बार जप करें, तीन दिन बाद में, गुटिका को नदी दे दिसर्जित कर दें।

न्यौछावर - 51/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

5. ऋषि दोष की समाप्ति हेतु

जन्म: उन्नेक साधनाओं का वांछित फल व्यक्ति को इस कारण नहीं मिल पाता, क्योंकि ग्रहों, नक्षत्रों का कोई विशिष्ट संयोग उच्चकी भाव्य लिपि में दुर्भाग्य बनकर अंकित हो जाता है। ऐसी स्थिति में जब व्यक्ति के पास कुण्डली न हो, तो उसे वह ज्ञान सम्पन्न करना अत्यधिक श्रेयस्कर होता है। साधक को चाहिए, कि वह मंत्र सिद्ध 'नील लोहित गुटिका' को प्राप्त कर उन्हें समक्ष निम्न मंत्र का 65 बार जप कर गुटिका को वह से दूर दक्षिण दिशा में उसी दिन या अगले दिन फेंक दें।

मंत्रः // ॐ ज्योतिर्तिर्मर्य स्वरूपाय नमः //

ऋषि दोष के कारण आ रही बाधाओं से राहत अनुभव होगी।

न्यौछावर - 45/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

6. व्यापार में आ रही अवनति की समाप्ति हेतु

जन्म: व्यक्ति किसी श्रेष्ठ कुल में जन्म लेने के पश्चात् भी जब उन्हें यौवन काल में नौकरी या व्यापार को संभालने की स्थिति में आता है तब तक वह विविध कारणों से जिसमें पितृ दोष आदि सम्मिलित होते हैं, वह पूर्व की स्थिति को खो बैठता है तथा आर्थिक व सामाजिक रूप से अवनति की ओर अग्रसर जलधार बाणेश्वर पर आधे घंटे तक चढ़ा दें। दूसरे दिन होने लग जाता है। यह मन को मथ कर रख देने वाली स्थिति

होती है। इसकी समाप्ति के लिए साधना का अवलम्बन लेना रख, उस पर पन्द्रह मिनट तक निम्न मंत्र जप के साथ दुग्ध ही चाहिए। ऐसे में चाहिए कि वह 'गुणदा' को प्रातः स्थापित धारा चढ़ा कर कुछ दुग्ध का तो परिवार के सभी सदस्य पान कर निम्न मंत्र का 51 बार उच्चारण करे -

मंत्रः ॥३५० क्लर्णि हूर्णि क्लर्णि ३५० ॥

आगे पांच दिनों तक नित्य जप करते रहने के बाद गुणदा को नदी में विसर्जित कर दें।

रख, उस पर पन्द्रह मिनट तक निम्न मंत्र जप के साथ दुग्ध धारा चढ़ा कर कुछ दुग्ध का तो परिवार के सभी सदस्य पान कर लें और शेष दुग्ध को घर भर में छिड़क दें -

मंत्रः ॥३५० सकल दोष निवारणाय भवानीपतये

नमः ॥

यह प्रयोग पांच दिन तक करें, प्रयोग समाप्ति के बाद यंत्र न्यौछावर - 51/- को नदी में प्रवाहित कर दें।

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

न्यौछावर - 240/-

7. जीवन में कुबेरवत् धनवान बनाने हेतु

भगवान शिव की एक उपाधि कुबेराधिपति भी है, अतः यह सहज संभव है कि साधक भगवान शिव की साधना कर सक्य भी कुबेरवत् बनने में समर्थ हो सके। इस हेतु 'शिव यंत्र' को अपने समक्ष स्थापित कर निम्न मंत्र का 60 बार जप करें -

मंत्रः ॥३५० शिव प्रियाय व्यक्तादिराजाय नमः ॥

मंत्र जप पांच दिन के पश्चात् शिव यंत्र को नदी में विसर्जित कर दें।

न्यौछावर - 120/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

8. शारीरिक दौर्बल्य की समाप्ति हेतु

शारीरिक दौर्बल्य से तात्पर्य केवल यही नहीं होता कि जहां पुरुष यौन पक्ष में न्यून हो, अपितु आयु की अधिकता या किसी रोग आदि कारणों से भी जहां व्यक्ति में शिथिलता आ जाती है, वे सभी स्थितियां शारीरिक दौर्बल्य के अन्तर्गत हैं आती हैं। इसकी समाप्ति हेतु तथा जीवन में यौवन का वेग भर लेने के लिए साधक को चाहिए कि वह एक 'अनंग गुटिका' को प्राप्त कर उसके समक्ष निम्न मंत्र का 51 बार उच्चारण करें -

मंत्रः ॥३५० त्रिलोचनायै विद्युत्प्रभायै नमः ॥

ऐसा अगले पांच दिन तक करने के पश्चात् गुटिका को नदी में सात दिन के बाद विसर्जित कर दें।

न्यौछावर 100/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

9. तांत्रिक प्रयोग, मूठ आदि की समाप्ति हेतु

जीवन में केवल रोग, पीड़ा की बराबर उपस्थिति ही नहीं, अनेक-अनेक समस्याओं का एक कारण किसी प्रतिस्पर्द्धी होता है, जिसके निराकरण का प्रयोग सम्पन्न करना जीवन की आवश्यकता होती है। किसी पात्र में 'शिवगौरी यंत्र'

10. दुर्घटना या आसन्न मृत्यु की समाप्ति हेतु मृत्यु की कल्पना तक किसे नहीं विचलित कर देती? किन्तु उससे भी अधिक त्रासदायक होती है वह स्थिति जहां व्यक्ति को किसी कारण विशेष से पल-प्रतिपल दुर्घटना का भय बना रहता है। केवल किसी व्यक्ति रूपी शत्रु के द्वारा ही नहीं, जीवन में अनेक परिस्थितियां ऐसी भी होती हैं, जहां व्यक्ति को अपने प्राण अपनी हथेली पर रखकर, परिवार की चिंता में चुलते हुए, जीवन यापन की किसी एक शैली को अपना कर, जीने के लिए विवश होना पड़ता है।

व्यक्ति के जीवन में ऐसी स्थिति न आए, वह किसी भी भावी दुर्घटना अथवा आसन्न मृत्यु के भय से सर्वथा सुरक्षित एवं निश्चिंत रह सके, इसके लिए भगवान शिव के मृत्युंजय स्वरूप की साधना एक प्राचीन परम्परा रही है।

श्रावण मास में अपने समक्ष किसी लाल रंग के वस्त्र को छिठा, उसके ऊपर ताम्रपात्र में 'मृत्युंजय यंत्र' की स्थापना कर निम्न मंत्र का 51 बार जप सम्पन्न कर, उस यंत्र को कुछ अन्नराशि के साथ किसी भी देवालय में चढ़ा देना ऐसी समस्त दुर्साध्य स्थितियों से त्राण दिलाने में एक सहायक लघु प्रयोग है।

मंत्रः ॥३५० उरगत उरगत कालदेवाय प्रीर्त्यर्थे नमः ॥

न्यौछावर - 120/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

11. अखण्ड लक्ष्मी की प्राप्ति हेतु

सामान्यतः साधकों की यह धारणा होती है, कि यदि जीवन में धन की प्रचुर प्राप्ति करनी है, तो लक्ष्मी की साधना करनी चाहिए, यह सत्य है, किंतु अपूर्ण सत्य है। पूर्ण सत्य यही है, कि लक्ष्मी अपने 'श्री' स्वरूप में, अखण्ड स्वरूप में केवल के माध्यम से सम्पन्न कर दिया तंत्र प्रयोग, मूठ प्रयोग भी भगवान शिव की कृपा से ही जीवन में प्रकट हो सकती है। श्रावण मास में बुधवार की रात्रि में ज्यारह बजे के आसपास किसी ताम्रपात्र में 'तांत्रोक्त फल' रखें, उसके समक्ष निम्न मंत्र

का 51 बार जप करना अत्यंत तीव्र तांत्रोक्त उपाय अनुभूत किया गया है -

मन्त्रः // ॐ सदाशिव भव ॐ फट् //

अगले दिन तांत्रोक्त फल कुछ दक्षिणा व अक्षत के साथ किसी देवी मंदिर में भेट चढ़ा दें।

न्यौषावर - 60/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

12. आन्योदय की स्थिति हेतु

वस्तुतः सौभाग्य शब्द को किसी भी परिभाषा में आबद्ध करना अत्यंत कठिन है। प्रत्येक व्यक्ति की जीवन के प्रति अपनी ही एक कल्पना होती है। कुछ उसके स्वप्न होते हैं, जिनकी पूर्ति से उसे जीवन में असीम तृप्ति मिलती है।

इच्छुक साधक को चाहिए, कि वह किसी गहरे पात्र में 'नमदेश्वर शिवलिंग' स्थापित कर, उसे पात्र सहित सफेद वस्त्र पर रख निम्न मंत्र जप अनुमान से आधे घंटे तक करते हुए पतली जलधार नमदेश्वर शिवलिंग पर अर्पित करें -

मन्त्रः // ॐ हर्णि नमः शिवाय हर्णि ॐ //

इस प्रयोग में माला का उपयोग नहीं है। चढ़े हुए जल को बाद में किसी पवित्र वृक्ष की जड़ में डाल दें तथा शिवलिंग को पूजा स्थान में एक माह तक स्थापित रखने के बाद किसी नदी में विसर्जित कर दें।

न्यौषावर - 150/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

13. राज्यभय की समाप्ति हेतु

सामान्यतः कोई भी व्यक्ति 'राज्य-भय' से तात्पर्य उस स्थिति से करता है जहां किसी कारणवश कारागार में जाने की स्थिति आ गई हो, किन्तु यह तो 'राज्य-भय' शब्द का एक पक्ष भर है। जहां हर पल उच्चाधिकारियों से प्रताङ्गन की आशंका रहती हो, हर पल भय लगा रहता है, कि पता नहीं कब अपने कर्तव्यों का समुचित पालन करते हुए भी कोई छुटभैया स्थानीय नेता दबाव डलवाकर स्थानान्तरण करवा देगा, पता नहीं कब जनाक्रोश हिंसा बनकर फूट पड़ेगा अथवा समुचित दक्षता के उपरांत भी पदोन्नति के स्थान पर पदावनति कर दी जाएगी, ये सभी स्थितियां भी राज्य भय के अन्तर्गत ही आती हैं और केवल सामान्य नागरिक ही नहीं, उच्च पदस्थ अधिकारी भी इस चक्रव्यूह में उलझकर इस अदालत से उस अदालत तक चक्कर लगाने पर विवश हो जाते हैं।

ऐसी स्थिति के समाधान के लिए किसी ताम्रपात्र में 'श्री

शैल गुटिका' स्थापित कर उसके समक्ष 31 बार निम्न मंत्र का जप आदि नाम में लगातार पांच दिनों तक करने से शीघ्र ही मनोवाञ्छित परिवर्तन संभव हो जाते हैं -

मन्त्रः // ॐ स्त्रीं हूं भीमशंकरायै नमः //

साथ ही इस पर गुटिका को किसी शिवालय में रख दें।

न्यौषावर - 65/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

14. दुक्ष पुत्री के विवाह में आ रही अड्डचनों की समाप्ति हेतु

जब से कभी हमारे देश में आज भी विवाह के योग्य हो जाने पर वह दुक्ष पुत्री का घर बैठे रहना न केवल उस युवती वरन् पूरे जनजीवन के लिए कलेश का कारण होता है। पूरे परिवार पर ही न्यौषावर स्वप्न से एक प्रश्न चिन्ह आरोपित हो जाता है। ऐसी जन्मजुल्मियत की समाप्ति के लिए या तो युवती स्वयं अद्वा उन्हें नाम का संकल्प कर उसका कोई भी रक्त सम्बन्धी यदि किसी ताम्रपात्र में 'मौलिमणि' स्थापित कर निम्न मंत्र का 61 चल जाए और वह मौलिमणि उस युवती की दाहिनी कलाई या बांह पर धारण कराएं तो शीघ्र ही सम्मानित परिवार से नुमोन्य कर के प्रस्ताव स्वतः आने की स्थितियां बनने लग जाती हैं।

मन्त्रः // ॐ जर्तौं जं ॐ गैरीपतयै नमः //

जब इन्होंने इच्छात् मौलिमणि को जल में विसर्जित कर दें।

न्यौषावर - 100/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

15. पूर्ण राजसी ऐश्वर्य की प्राप्ति हेतु

जीवन की श्रेष्ठता तो तभी संभव है, जब व्यक्ति का समाज में एक बच्चन्स्व हो, जहां उसकी बातों को ध्यान पूर्वक सुना जाता है, सम्मान पूर्वक ग्रहण किया जाता हो और वह सबके हृदय पर जासन करने में समर्थ हो। केवल रुपये पैसे के ढेर से ही कोई व्यक्ति इस स्थिति को नहीं प्राप्त कर सकता। लखपति-करोड़ती तो चारों ओर बिखरे हुए से मिल जाते हैं, किन्तु दो को छोड़ शायद तीसरे घर वाला ही उनका परिचय जानता हो। जलः आवश्यक है कि जीवन में ऐसे 'ऐश्वर्य' की प्राप्ति भी हो जाए। किसी ताम्रपात्र में चावलों की ढेरी पर 'कमलासन' रख उसका पूजन बिल्व पत्र, गुलाब के पुष्प एवं अक्षत से करें, निम्न मंत्र का 75 बार जप सम्पन्न करें -

मन्त्रः // ॐ श्रीं हर्णि हरिप्रियाय हर्णि श्रीं ॐ //

अगले दिन कमलासन को किसी देवी मंदिर में कुछ मेवे के

साथ रख दें। चावलों को घर के अन्न भंडार में रखें अन्न में मिला दें तथा कुछ अपनी तिजोरी में बिखेर दें।

न्यौछावर - 80/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

16. अनुपमेय सौन्दर्य प्राप्ति हेतु

सौन्दर्य केवल स्त्री का ही नहीं, पुरुष का भी स्वप्न होता है। ऐसा स्वप्न, जो आँखों में तैर कर सारे संसार को विषाद मुक्त कर सकता है। किसे आग्रह नहीं होता; जीवन में दैहिक सौन्दर्य प्राप्त करने का, फिर वही तो किसी अन्य को भी विषाद मुक्त करने और हृदय का सौन्दर्य बनने का आधार भी होता है। श्रावण मास को रस, सौन्दर्य एवं मधुर मास कहा गया है। पुनः सौन्दर्य को ही जन्म देने के लिए। इच्छुक साधक अथवा साधिका के लिए आवश्यक है कि वह 'कन्दर्प लावण्य यंत्र' को अपने समक्ष रखे किसी बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछाकर ताम्रपात्र में स्थापित करें तथा उस पर इत्र लगाकर निम्न मंत्र का 61 बार मंत्र जप सम्पन्न करें।

मंत्रः //ॐ ह्रीं कन्दर्पयत्ये प्रीत्यर्थे नमः //

गुटिका को अगले दिन किसी पवित्र सरोवर में विसर्जित कर दें।

न्यौछावर - 120/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

17. मुकदमेबाजी से छुटकारा पाने हेतु

प्रायः व्यक्ति को पैतृक संपत्ति के साथ-साथ मुकदमेबाजी भी पैतृक रूप से प्राप्त हो जाती है। अथवा कई ऐसी स्थितियां बन जाती हैं कि उसे चाहते न चाहते हुए भी इसमें उलझना पड़ता है, जिससे धन तथा समय की बर्बादी के साथ-साथ मानसिक शांति का भी सत्यानाश हो जाता है। श्रावण मास में ऐसी असहज स्थिति की समाप्ति का उपाय किया जा सकता है एक लघु प्रयोग से। साधक अपने समक्ष एक 'पाश' रख निम्न मंत्र का 36 बार जप करें -

मंत्रः //ॐ क्रीं नमः शिवाय क्रीं ॐ //

मंत्र जप के अगले दिन पाश को घर से दूर दक्षिण दिशा में फेंकने से शीघ्र ही ऐसी दुःसाध्य स्थिति से मुक्ति पाने में सक्षम होते देखे गए हैं।

न्यौछावर - 60/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

18. महाविद्याओं में सफलता हेतु

यह मिथ्या धारणा क्यों समाज में घर बना गई है कि शिव में से शक्तिरूपी 'इकार' निकाल दें तो वे शब हो जाते हैं - इस

बात की चर्चा फिर कभी की जाएगी, किन्तु जिस प्रकार शिव का आधार शक्ति है उसी प्रकार शक्ति का आधार शिव है। इसी चिंतन से ओतप्रोत होकर ही साधक उन महाविद्या साधनाओं में सफलता प्राप्त कर सकता है जो व्यक्ति को जीवन में उच्चतम स्थितियों का स्पर्श करवाने में समर्थ होती है। महाविद्या साधनाओं में प्रवृत्त होने से पूर्व शिव साधन में विशिष्टता प्राप्त करना आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी है और इस विशिष्टिता को प्राप्त करने का दिवस है। शिव शक्ति का पृथ्वी पर भ्रमण काल है श्रावण मास। साधक अपने समक्ष सफेद वस्त्र पर ताम्रपात्र में 'शिवयंत्र' रख उस पर दस महाविद्याओं की प्रतीक दस बिन्दियां लगाकर निम्न का 101 बार मंत्र जप करें -

मंत्रः //ॐ सकल भुवनेश्वर्ये नमः //

साधना के अगले दिन यंत्र को शिवालय में दान के साथ चढ़ा दें। श्रावण मास में शिव और शक्ति के भू-लोक पर भ्रमण काल में इस लघु प्रयोग का अपना ही एक महत्व है। महाविद्याओं में सफलता प्राप्त करने का यह एक विशेष प्रयोग है।

न्यौछावर - 240/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

19. प्रेम सम्बन्धों में सफलता प्राप्ति हेतु

प्रेम जीवन का एक स्पन्दन होता है। प्रेम जीवन की धड़कन होती है। प्रेम ही निकाल लें जीवन से, तो शेष रह ही क्या जाय? प्रेम तो जीवन की सबसे सहज घटना होती है, इसकी सहजता में ही उसका सौन्दर्य भी निहित होता है, किन्तु यह तब असहज हो जाती है जब सामाजिक अथवा किन्हीं अन्य कारणों से कोई पुरुष मनोवांछित स्त्री से अथवा कोई स्त्री मनोवांछित पुरुष से मिलने में प्रतिबंधित सी हो जाती है, किन्तु यह प्रतिबंध समाप्त होना ही चाहिए अन्यथा जीवन घुटकर रह जाता है।

श्रावण मास के सोमवार को रात्रि दस बंजे के आसपास किसी ताम्रपात्र में 'मुदमंगल गुटिका' रख कर निम्न मंत्र का 51 बार जप करें-

मंत्रः //ॐ ह्रीं ग्लौं अमुंकं सम्मोहय सम्मोहय फट//

अमुंक के स्थान पर सम्बन्धित प्रेमी अथवा प्रेमिका के नाम का उच्चारण करें, जिससे यदि रूठ जाने जैसी कोई बात हो गई हो, तो उसकी भी समाप्ति हो सके। अगले दिन गुटिका को नदी में विसर्जित कर दें।

न्यौछावर - 75/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

नाक्षत्री की बातें

व्रेष -

यद रखें कि दुविधा एवं अविश्वास के मन में रहते आप मनचाही सफलता अर्जित नहीं कर सकते। अपने मन को एकाग्र करके ही कोई निर्णय लें, अन्यथा स्वयं की हानि कर बैठेंगे। अधिकारियों एवं वरिष्ठ जनों से मधुर संबंध बनाए रखें। कार्य क्षेत्र में या नौकरी में कोई समस्या उत्पन्न हो जाए तो चिंतित या उत्तेजित होने की अपेक्षा शांत चित्त होकर उसका समाधान खोजें। परिवार में भी इस माह तनाव रह सकता है। आप 'शिव खप्पर साधना' (मार्च 2008) सम्पन्न करें। तिथियां - 7, 11, 18, 21, 27 हैं।

वृष -

यह माह विशेष अवसर लेकर प्रस्तुत होगा तथा आप नई उमंग एवं जोश के साथ अपने कार्य क्षेत्र में अग्रसर होंगे। अन्य लोग आपकी तीव्र प्रगति को देखकर अचंभित रह जाएंगे। धनागम के नए मार्ग स्वयं खुलने लगेंगे तथा पिछले कुछ समय से चली आ रही आर्थिक समस्याएं सुलझ जाएंगी। परिवार एवं मित्रों से पूर्ण सहयोग एवं प्रोत्साहन प्राप्त हो पाएगा। इस माह आपकी विदेश यात्रा अथवा तीर्थ यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। आप अनुकूलता प्राप्ति हेतु इस माह 'शाकम्भरी साधना' (मई 2008) अवश्य सम्पन्न करें। तिथियां - 5, 9, 19, 23, 26, 30 हैं।

मिथुन -

अगर आप नौकरी या व्यापार में कुछ परिवर्तन चाहते हैं तो इस माह विशेष अवसर अवश्य प्राप्त होंगे। नौकरी में उन्नति के साथ-साथ आय में भी वृद्धि के स्वर्णिम अवसर प्राप्त होंगे। इन अवसरों को चूकें नहीं; तथा समय रहते इनका लाभ उठा लें। कुछ नए मित्र एवं सहयोगी बनेंगे, जो भविष्य में आपके लिए सहायक सिद्ध होंगे। अगर आप विद्यार्थी हैं तो यह समय कड़े परिश्रम का है। थोड़ा भी समय व्यर्थ न जाने दें। महिलाओं के लिए यह माह बहुत अच्छा है, उनके मान-सम्मान में वृद्धि होगी। आप 'भाग्योदय साधना' (अप्रैल 2008) करें। तिथियां - 6, 13, 18, 21, 29 हैं।

कक्ष -

जीवन्यन्त्रियों पूर्णतः आपके प्रतिकूल हैं, अतः सावधान रहें। किसी भी विषम स्थिति में मौलिक सूझबूझ से ही निर्णय लेने वाले व्यक्तियों से तो सलाह न ही लें जो कि आपको सही नानाकूलन देने की अपेक्षा गुमराह कर सकते हैं। पैसे के लेन-देन में इस माह विशेष सावधान रहें। परिवार में भी चिंता का बलावन बना रहेगा। इस माह आप अपने स्वास्थ्य का ध्यान सख्त। अधिक से अधिक समय अपने इष्ट तथा गुरु के कार्य में व्यतीत करें। आप 'छिन्नमस्ता साधना' (फरवरी 2008) करें। तिथियां - 3, 14, 17, 24, 29 हैं।

सिंह -

बोक्सास व्यक्तियों के लिए आवश्यक है कि वे जी जान से प्रयत्न करें। इस माह कुछ अवसर प्राप्त हो सकते हैं परंतु लाभ तभी होना चाह आप पूर्ण क्षमता से प्रयत्न करें। कुछ पुराने मित्रों वा संबंधियों का साथ छूट जाने से दुःख होगा। जीवन साथी ने भी अनुकूल सहयोग न प्राप्त होने से मन में खिन्नता उत्पन्न हो सकती है। प्रेम प्रसंगों में सावधान रहें। बदनामी हो सकती है। दान्पत्य जीवन में कलह पूर्ण वातावरण रहेगा। कला कल के व्यक्तियों के लिए समय अनुकूल है। आप 'संसाहन ब्राह्मण वार्ताली साधना' (मई 2008) करें। तिथियां - 5, 11, 17, 19, 26 हैं।

कन्या -

आप अपने दिल की बात सब को बता देते हैं, ऐसा आपको नहीं कहना चाहिए। आप अपने अन्दर आत्मविश्वास पैदा करिए, जिसकी आप में कमी है। आप निराश मत हों। गुरु पर विश्वास रखें, वह आपके हर कार्य सफल करेंगे। इस कुल जाप अपने कार्य में ध्यान दें। नौकरी पैशा वर्ग के सहायक सिद्ध होंगे। अगर आप विद्यार्थी हैं तो यह समय कड़े व्यक्तियों के लिए समय मध्यम रहेगा तथा उनके कार्य बहुत विलम्ब के बाद पूरे होंगे। परिवारजनों से सहयोग आपके लिये होगी। आप 'इन्द्राणी शक्ति साधना' (मार्च 2008) सम्पन्न करें। तिथियां - 3, 10, 13, 20, 27 हैं।

तुला -

यह माह आर्थिक विषमताओं से भरा रहेगा। कभी लगेना आय बढ़ रही हो तो कभी व्यय अधिक होता प्रतीत होना। सोचे हुए कार्य इस माह सम्पन्न हो सकते हैं, परंतु अद्वय उत्पन्न हो सकती है। धैर्य रखें तथा संयम न खोएं। जो कार्य कर रहे उसी पर ध्यान देना बेहतर होगा। आपके शत्रु इस माह बहुत सक्रिय रहेंगे तथा आपको नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। इस माह आप सामाजिक एवं धार्मिक आयोजनों में भाग लेंगे। अनावश्यक व्यय करने से अवश्य बचें। आप 'पारद शंख साधना' (मई 2008) करें। तिथियां - 5, 8, 15, 22, 29 हैं।

वृष्टिंवक -

इस माह आपकी कोई लंबे समय से चली आ रही कामना अवश्य पूर्ण होगी, इस कारण आप फूले नहीं समाएंगे; परंतु स्वास्थ्य का ध्यान रखने की आवश्यकता है। लापरवाही से हानि होने का भय है। मित्रों एवं संबंधियों के आगमन से घर परिवार में चहल-पहल रहेगी तथा आप व्यस्त अनुभव करेंगे। बेरोजगारों के लिए विशेष अवसर उपस्थित होंगे तथा निश्चय ही अच्छी नौकरी प्राप्त होगी। दाम्पत्य सुखों में वृद्धि होगी तथा प्रेम-प्रसंगों में भी अनुकूलता प्राप्त होगी। आप 'महागणपति साधना' (फरवरी 2008) सम्पन्न करें। तिथियां - 1, 8, 12, 18, 24, 29 हैं।

घनु -

नया कार्य आरंभ करने के लिए यह समय अनुकूल है, पूर्ण जी जान से जुट जाएं, अवश्य ही सफलता हाथ लगेगी। पुराने अनुबंधों से लाभ होगा तथा नवीन अनुबंध भी लाभदायक ही सिद्ध होंगे। पार्टनरशिप में कार्य करते समय अपने पार्टनर के बारे में पूर्ण जानकारी प्राप्त कर लें तथा कानूनी रूप से सभी कागजात अवश्य तैयार करायें। इस माह नए संबंध बनेंगे, विशेषकर उच्चपदासीन अधिकारियों से, जो कि भविष्य में आपके लिए अनुकूल सिद्ध होंगे। आप पूर्ण लाभ प्राप्ति हेतु 'शिव व्याघ्र अनुष्ठान' (जनवरी 2008) अवश्य सम्पन्न करें। तिथियां - 4, 14, 17, 23, 30 हैं।

मकर -

किसी भी प्रकार के व्यर्थ धन के लेन-दने से बचें, परिवारजनों एवं मित्रों से धन को लेकर विवाद हो सकता है। व्ययभार में वृद्धि होगी। किसी के बहकावे में आकर कोई भी गलत कार्य न करें। राज्य कार्य आसानी से पूरे होंगे तथा पूराने अदालती मामलों में अनुकूलता प्राप्त होगी। अन्य व्यक्तियों के

योग: सिद्ध योग - 7, 25 जून / 1, 4, 9, 15 जुलाई ☆ सर्वार्थ सिद्ध योग - 4, 14, 27 जून / 12, 14, 19, 25, 28 जुलाई ☆ अमृत सिद्ध योग 27 जून / 25 जुलाई ☆ त्रिपुष्कर योग - 29 जुलाई ☆

लड़ाई-झगड़ों से स्वयं को दूर ही रखें, तथा बीच-बचाव अयवा मेल-मिलाप का प्रयत्न नहीं करें। परिवार में मन-मुठाव तथा कलह का वातावरण रहेगा। आप 'वसुधा लक्ष्मी साधना' (मार्च 2008) अवश्य सम्पन्न करें। तिथियां - 1, 3, 11, 14, 20, 28 हैं।

कुम्भ -

यह समय आपके लिए खुशहाली लेकर आ रहा है। घर में नये महेमान के आने से प्रसन्नता होगी। बहुत समय से रुका हुआ धन प्राप्त होगा। इस समय आपके जो भी कार्य रुके हुए थे, वो पूरे हो जायेंगे तथा नौकरी पेशा वर्ग के अधिकारी आपके कार्य से प्रसन्न रहेंगे। इस माह आपको साधना में सफलता के नये आयाम प्राप्त होंगे। आपको समय का उपयोग करते हुए अधिक से अधिक साधनाएं करनी चाहिए। जो भविष्य में आपके लिये लाभदायक सिद्ध होगी। आप 'कामदेव रति साधना' (जनवरी 2008) सम्पन्न करें। तिथियां - 1, 8, 13, 19, 23, 28 हैं।

मीन -

मानसिक रूप से आप तनाव की स्थिति से गुजर रहे हैं, परंतु आत्म विश्लेषण करेंगे तो पाएंगे कि इस तनाव का कारण आप स्वयं हैं। कुविचारों को अपने मन में घर न करने वे, फिर सभी समस्याओं का समाधान स्वयं ही निकल जाएगा। किसी की बातों में आकर गलत निर्णय न लें और न ही किसी अन्य के लिए कोई समस्या पैदा करने का प्रयास करें, क्योंकि ग्रह योग कुछ ऐसा है कि आप अपने बिछाए जाल में स्वयं ही फंस जाएंगे। बेरोजगारों के लिए माह का उत्तरार्द्ध अनुकूल होगा। आप 'हनुमान साधना सिद्धि' (मई 2008) करें। तिथियां - 2, 12, 18, 21, 24, 30 हैं।

इस मास के व्रत, पर्व इतिहास

29 जून	आषाढ़ कृ.	-11	रविवार	योगिनी एकादशी व्रत
30 जून	आषाढ़ कृ.	-12	सोमवार	सोम प्रदोष व्रत
03 जुलाई	आषाढ़ कृ.	-30	गुरुवार	अमावस्या
03 जुलाई	आषाढ़ कृ.	-30	गुरुवार	गुप नवरात्रि प्रा. / गुरु महाप्रयाण विवास
10 जुलाई	आषाढ़ शु.	-08	गुरुवार	दुर्गाष्टमी
13 जुलाई	आषाढ़ शु.	-11	रविवार	देवशयनी एकादशी
15 जुलाई	आषाढ़ शु.	-12	मंगल	प्रदोष व्रत
18 जुलाई	आषाढ़ शु.	-15	शुक्रवार	गुरु-पूर्णिमा

कैं

समय हैं

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामाजिक के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, वह वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुद्ध उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत 99.9% आपके भाग्य में अंकित हो जादेन।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है।



वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
सोमवार (जून 23, 29)	दिन 06:00 से 08:24 तक 11:36 से 02:48 तक
	रात 03:36 से 04:24 तक 06:48 से 10:00 तक
मंगलवार (जून 24)	दिन 12:24 से 02:48 तक 04:24 से 06:00 तक
	रात 02:48 से 03:36 तक
बुधवार (जून 25)	दिन 10:00 से 11:36 तक 04:30 से 06:00 तक
	रात 06:48 से 10:00 तक 12:24 से 02:48 तक
गुरुवार (जून 26)	दिन 05:12 से 06:00 तक
	रात 07:36 से 09:12 तक 12:00 से 02:48 तक
ब्रह्मवार (जून 27)	दिन 06:00 से 07:36 तक 10:00 से 11:36 तक
	रात 04:24 से 06:00 तक 09:12 से 11:36 तक
शुक्रवार (जून 28)	दिन 02:48 से 03:36 तक 07:36 से 09:12 तक
	रात 10:48 से 11:36 तक 01:12 से 02:48 तक
शनिवार (जून 29)	दिन 06:00 से 06:48 तक 07:36 से 10:00 तक
	रात 12:24 से 03:36 तक 07:36 से 09:12 तक
शनिवार (जून 30)	दिन 06:00 से 06:48 तक 10:30 से 12:24 तक
	रात 08:24 से 10:48 तक 02:48 से 03:36 तक
शनिवार (जूलाई 5, 12)	दिन 05:12 से 06:00 तक
	रात 05:12 से 06:00 तक

ਗੁਣ ਹੁਮਨੈ ਕਾਹੀਂ ਬਰਾਹਮਿਹਿਰ ਕੈ ਕਹਾ ਹੈ

ਕਿਸੀ ਭੀ ਕਾਰ੍ਯ ਕੋ ਪ੍ਰਾਰੰਭ ਕਰਨੇ ਸੇ ਪ੍ਰਤੀਕ ਵਾਤਿਕ ਦੇ ਮਨ ਮੈਂ ਸ਼ਸ਼ੀ-ਆਸ਼ਾਵ ਦੀ ਭਾਵਨਾ ਰਹਤੀ ਹੈ ਕਿ ਯਹ ਕਾਰ੍ਯ ਸਫਲ ਹੋਗਾ ਯਾ ਨਹੀਂ, ਸਫਲਤਾ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋਗੀ ਯਾ ਨਹੀਂ, ਵਾਧਾਏ ਤੋਂ ਉਪਰਿਥਿਤ ਨਹੀਂ ਹੋ ਜਾਂਗੇ, ਪਟਾ ਕਹੀਂ ਦਿਨ ਕਾ ਪ੍ਰਾਰੰਭ ਛਿਲ੍ਹ ਇਕਾਰ ਰੋਂ ਹੋਗਾ, ਦਿਨ ਦੀ ਸਮਾਜਿਕ ਪਰ ਵਹ ਖਾਂਚ ਕੋਂ ਤਨਾਵਰਹਿਤ ਕਰ ਪਾਯੋਗਾ ਯਾ ਨਹੀਂ? ਪ੍ਰਤੀਕ ਵਾਤਿਕ ਕੁਠ ਐਸੇ ਉਧਾ ਅਪਨੇ ਜੀਵਨ ਮੈਂ ਅਪਨਾਨਾ ਚਾਹਤਾ ਹੈ ਜਿਨ੍ਹੇ ਤੁਹਾਨ ਪ੍ਰਤੀਕ ਦਿਨ ਤੁਹਾਕੇ ਅਨੁਕੂਲ ਅਤੇ ਆਵਾਜ਼ੁਰ ਬਨ ਜਾਂਦਾ। ਕੁਠ ਐਸੇ ਹੈ ਉਧਾ ਆਪਕੇ ਸਮਝ ਪ੍ਰਸ਼ੰਸਨ ਹੈਂ ਜੋ ਬਰਾਹਮਿਹਿਰ ਦੀ ਵਿਵਿਧ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਿਤ-ਅਗਰਾਰਿਤ ਤੱਤੀਆਂ ਸੇ ਸਾਂਕਲਿਤ ਹੈਂ, ਜਿਨ੍ਹੇ ਯਹਾਂ ਪ੍ਰਤੀਕ ਦਿਵਸ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ ਪ੍ਰਸ਼ੰਸਨ ਕਿਯਾ ਗਿਆ ਹੈ ਤਥਾ ਜਿਨ੍ਹੇ ਸਮਝਾ ਕਰਨੇ ਪਰ ਆਪਕਾ ਪ੍ਰਾਨ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨੇ ਵਾਲੇ।

ਜੁਲਾਈ

1. ਨਿੰਮ ਸ਼ਲੋਕ ਕਾ ਪਾਂਚ ਬਾਰ ਜਪ ਕਰਤੇ ਹੁए ਹਨੁਮਾਨ ਜੀ ਦੇ ਰਖਾ ਕੀ ਪ੍ਰਾਰਥਨਾ ਕਰੋ।
2. 'ਖਲਮਿਚਲੇਚ ਦੀਕਸ਼ਿ: ਹਨੁਮਤ: ਸ਼ਤ੍ਰੁਦਾਰਿਣ: ਬੁਦ਼ੀ ਜ਼ਾਨਾਂ ਯਥਾ ਚੈਵ, ਸਰਵ ਸੌਮਾਨਿਧੀਹਤੇ।' ਰੁਦ੍ਰ ਪ੍ਰਿਯ ਗੁਟਿਕਾ' (ਨੌਛਾਵਰ 60/-) ਦੀ ਸਥਾਪਿਤ ਕਰ ਤੁਹਾਕੇ ਸਮਝ ਪਾਂਚ ਬਾਰ 'ਉੱਤੋਂ ਮਨ ਮਹੇਸ਼ਵਰਾਵ ਨਮ:' ਕਾ ਜਪ ਕਰੋ, ਫਿਰ ਸ਼ਿਵ ਮੰਦਿਰ ਮੈਂ ਚੜਾ ਆਏ, ਸ਼ੁਭ ਹੋਗਾ।
3. ਆਜ ਦੇ ਦਿਨ ਗੁਰੂ-ਸੇਵਾ ਕਾ ਸਕਲਧਾਰੀ ਲੈਂ।
4. 'ਪ੍ਰਭੁਕੁਰੰ ਯਮ ਸੂਰ੍ਯ ਪ੍ਰਯਾਪਤਿ ਰਸ਼ਮੀਨਸਮ੍ਭੂ ਤੇਜ਼ੋ ਯਨ੍ਤ੍ਰ ਰੂਪ ਕਲਿਓਣਤਮਾਂ ਤਤ੍ਤੇ ਪਥਾਮਿ ਯੋਤਸਾਵ ਸ੍ਰੋਤੁਲਬ: ਸ਼੍ਰੋਹਮਸਿਮ' ਮੰਤਰ ਕਾ ਪਾਂਚ ਬਾਰ ਜਪ ਕਰੋ।
5. ਘਰ ਦੇ ਨਿਕਲਾਂ ਸਮਝ ਪਛਲੇ ਦਾਹਿਨਾ ਪੈਰ ਬਾਹਰ ਨਿਕਾਲੋ।
6. ਸੂਰ੍ਯ ਦੇਵ ਕੋ ਅਧਰ੍ਘ ਦੇਕਰ ਹੀ ਭੋਜਨ ਕਰੋ।
7. 'ਉੱਤੋਂ ਹੀਂ ਸ਼ਙਕਰਾਵ ਨਮ:' ਮੰਤਰ ਕਾ 11 ਬਾਰ ਜਪ ਕਰੋ।
8. ਆਜ ਵਾਨਰਾਂ ਕੋ ਗੁਡ ਚਨਾ ਦੇ।
9. 'ਉੱਤੋਂ ਸ਼੍ਰੀ ਜਾਂ ਗਣਪਤਿ ਸ਼੍ਰੀ ਜਾਂ ਸਿਦਧਿ ਨਮ:' ਕਾ 11 ਬਾਰ ਜਪ ਕਰਤੇ ਹੁਏ ਗਣਪਤਿ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰੋ।
10. ਗੁਰੂ ਮੰਤਰ ਦੀ ਛਾਂ ਮਾਲਾ ਪ੍ਰਾਤ: ਅਵਸਥਾ ਜਪ ਕਰੋ।
11. ਭਗਵਤੀ ਮਹਾਲਕਸ਼ੀ ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰੋ ਤਥਾ 5 ਬਾਰ 'ਉੱਤੋਂ ਸ਼੍ਰੀ ਸ਼੍ਰੀ ਹੀਂ ਹੀਂ ਏਸ਼ਵਰੀ ਮਹਾਲਕਸ਼ੀ ਏਂ ਪੂਰ੍ਣ ਸਿਦਧਿ ਦੇਵਿ ਦੇਵਿ ਨਮ:' ਕਾ ਜਪ ਕਰੋ।
12. ਆਜ ਕਿਸੀ ਕਾਲੇ ਕੁਤੇ ਕੋ ਧੀ ਲਗਾ ਕਰ ਰੋਟੀ ਖਿਲਾਵੋ।
13. 'ਉੱਤੋਂ ਮੰ ਮੈਰਵਾਵ ਨਮ:' ਮੰਤਰ ਕਾ 18 ਬਾਰ ਜਪ ਕਰੋ। ਵਿਘਨ ਸ਼ਾਂਤ ਹੋਂਗੇ।
14. 'ਉੱਤੋਂ ਨਮ: ਸ਼ਿਵਾਵ' ਕਾ 51 ਬਾਰ ਉਚਾਰਣ ਕਰੋ।
15. ਪ੍ਰਾਤ: ਕਾਲ ਹਨੁਮਾਨ ਜੀ ਦੀ ਵਿਗ੍ਰਹ ਪਰ ਸਿਨ੍ਦੂਰ ਲਗਾਏ ਤਥਾ ਪਾਂਚ ਬਾਰ ਨਿੰਮ ਦੇਵ ਰਖਾ ਮੰਤਰ ਕਾ ਜਪ ਕਰੋ।
16. 'ਮੋਹਵਾ' (ਨੌਛਾਵਰ 60/-) ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰ ਕੁਕੂਮ ਦੇ ਲੇਪ ਕਰੋ, ਪਾਨ ਦੇ ਪਤੇ ਮੈਂ ਲਪੇਟ ਕਰ ਹਨੁਮਾਨ-ਮੰਦਿਰ ਮੈਂ ਚੜਾ ਆਏ, ਰਖਾ ਹੋਗੀ।
17. 'ਉੱਤੋਂ ਨਿਖਿਲੇਸ਼ਵਰਾਵ ਸਿਦਧਿ ਪ੍ਰਦਾਵ ਨਿੰ ਨਮ:' ਮੰਤਰ ਕਾ 21 ਬਾਰ ਜਪ ਕਰੋ।
18. ਗੁਰੂ ਪੂਰਿਮਾ ਦੀ ਅਵਸਰ ਪਰ ਪਤਿਕਾ ਮੈਂ ਦੀ ਗੈਈ ਵਿਧਿ ਅਨੁਸਾਰ ਵਿਸ਼ੇ਷ ਗੁਰੂ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰੋ।
19. ਆਜ ਪ੍ਰਾਤ: ਤੇਲ ਦੀ ਦੀਪਕ ਜਲਾ ਕਰ ਹਨੁਮਾਨ ਚਾਲੀਸਾ ਕਾ ਪਾਠ ਅਵਸਥਾ ਕਰੋ।
20. 'ਉੱਤੋਂ ਆਦਿਤਿਵ ਜਾਤਵੇਦੇਸੇ ਨਮ:' ਮੰਤਰ ਕਾ 21 ਬਾਰ ਜਪ ਕਰਤੇ ਹੁਏ ਸ਼੍ਰੂਦਿਵ ਦੀ ਪ੍ਰਣਾਮ ਕਰੋ।
21. ਆਜ ਗੁਰੂ ਜਨਮ ਦਿਵਸ ਪਰ ਨਿਖਿਲੇਸ਼ਵਰਾਨੰਦ ਸਤਵਨ ਦੀ ਪਾਠ ਕਰੋ। ਆਜ ਆਵਣ ਦੀ ਪ੍ਰਥਮ ਸੋਮਵਾਰ ਹੈ, ਪਤਿਕਾ ਮੈਂ ਲਿਖੀ ਵਿਧਿ ਅਨੁਸਾਰ ਅਭਿਵੇਕ-ਪ੍ਰਾਪਤ ਸਮੱਪਨ ਕਰੋ ਤਥਾ ਪੂਰੇ ਆਵਣ ਮਾਸ ਵਿਵਾਹ ਸਮੱਵਨਿਤ ਪ੍ਰਯੋਗ ਸਮੱਪਨ ਕਰੋ।
22. ਪ੍ਰਾਤ: ਹਨੁਮਾਨ ਜੀ ਦੀ ਗੁਡ, ਲੌਂਗ ਦੀ ਭੋਗ ਲਗਾਵੋ।
23. ਘਰ ਦੇ ਚਲਾਂ ਦੇ ਪੂਰ੍ਵ ਥੋੜ੍ਹਾ ਢਾਂਡੀ ਖਾ ਲੋ। ਸਫਲਤਾ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋਗੀ।
24. 'ਵਾਕੂਲੀ' (ਨੌਛਾਵਰ 60/-) ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰ ਕੁਕੂਮ ਦੇ ਲੇਪ ਕਰੋ, ਘਰ ਮੈਂ ਘੁਮਾਏ। ਫਿਰ ਘਰ ਦੇ ਬਾਹਰ ਦੱਖਿਣ ਦਿਸ਼ਾ ਮੈਂ ਫੈਂਕ ਦੋ, ਰੋਗ ਸ਼ੋਕ ਦੇ ਰਖਾ ਹੋਗੀ।
25. ਭਗਵਤੀ ਜਗਦੰਬਾ ਦੀ ਪਾਂਚ ਲਾਲ ਪੁ਷ਟ ਅਰਿੰਤ ਕਰੋ।
26. 'ਸਹਿ ਵਿਲੋਹੀ' (ਨੌਛਾਵਰ 75/-) ਦੀ ਪ੍ਰਾਪਤ ਸਿਨ੍ਦੂਰ, ਤੇਲ, ਕਾਲੇ ਤਿਲ ਦੇ ਕਰਕੇ ਪੀਪਲ ਦੇ ਵੱਡੇ ਰੱਖ ਮੈਂ ਕਾਣ ਕਰੋ।
27. ਆਜ ਕਿਸੀ ਨਾਲ ਵਾਤਿਕ ਦੀ ਪਤਿਕਾ ਕਾ ਕੋਈ ਅਨੁ ਭੈਟ ਕਰੋ।
28. ਮਹਾਮੁਤ੍ਯੁੰਯ ਮੰਤਰ ਕਾ 21 ਬਾਰ ਉਚਾਰਣ ਕਰੋ।
29. 'ਰਾਮ ਰਖਾ ਸਤੋਤ੍ਰ' (ਮਈ 2007) ਦੀ ਤੀਨ ਬਾਰ ਪਾਠ ਕਰੋ।
30. ਆਜ ਕਿਸੀ ਨਿਰਧਨ ਵਾਤਿਕ ਦੀ ਗੇਹੂਂ ਦਾ ਦਾਨ ਕਰੋ।
31. ਆਜ ਪ੍ਰਾਤ: ਗੁਰੂ ਆਰਤੀ ਅਵਸਥਾ ਸਮੱਪਨ ਕਰੋ।

क्या आप शक्ति साधनाएं सम्पद करना चाहते हैं
 तो आपके लिए शुभ अवसर आ गया है
 शक्ति साधना का तांत्रोक्त पर्व



गुप्त नवरात्रि

३ जुलाई २००८ से ११ जुलाई २००८

अक्षमोल तांत्रिक साधनाएं जो जीवन की

समस्याओं का समाधान कर सकती हैं, तो दंच खटी साधनाएं -

मूल रूप से गुप्त नवरात्रि ऐसे साधकों के लिए होती है जो साधना पर्व को उत्सव के रूप में कम और साधना कल्प के रूप में ज्यादा विचार कर रख दिनों विशेष साधनाएं सम्पद करते हैं। उच्चकोटि के योगी, संन्यासी बसन्त नवरात्रि ड्रॉट ज्ञानशील नवरात्रि में जहां आमजन के बीच रहकर उत्सव के साथ ज्ञान प्रदान करते हैं वही गुप्त नवरात्रि में वे स्वयं अपनी साधना में तल्लीन रहते हैं। उस समय उन्हें प्रकृति की तीव्रता भी झेलनी पड़ती है लेकिन वे साधना के द्वारा प्रकृति का प्रभाव अपने ऊपर नहीं पड़ने देते।

शक्ति पर्व - नवरात्रि

नवरात्रि पर्व शक्ति आराधना का पर्व है, यह शक्ति पर्व सामान्य जन्म में बसन्त क्रतु पूर्ण होने पर बासन्तीय नवरात्रि तथा शरद क्रतु में शारदीय नवरात्रि के रूप में सम्पन्न किया जाता है, नौ दिनों तक पड़ने वाली इन दोनों नवरात्रियों के सम्बन्ध में भगवती देवी दुर्गा ने स्वयं कहा है कि

शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी।
 तस्यां ममैतन्महारत्मयं श्रुत्वा भक्तिसमन्वितः ॥

शरद क्रतु में की जाने वाली महापूजा के अवसर पर तथा नवर्ष चैत्र के प्रारम्भ में जो साधक मेरी आराधना करता है, उसे मैं धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, चारों वर्ग प्रदान करती हूं। वास्तव में ये दो नवरात्रियां ज्ञात नवरात्रियां कही जाती हैं इन दोनों ही अवसरों पर फसल काट कर किसान घर में लाते हैं, व्यापारी अपना लेखा-जोखा ठीक करते हैं। क्रतु के अनुसार भी दोनों समय प्रकृति पूर्ण रूप से खिली हुई होती है। मन में प्रसन्नता का भाव उद्दित रहता है।

बासन्त में ज्ञन को नवरात्रियों को ज्ञात नवरात्रि कहा जाता है

लेकिन यूरोपी दर्शन में क्रतु परिवर्तन के साथ नवरात्रि पर्व आता है।

साल में हर तीन महीने के अंतराल में क्रतु परिवर्तन होता है,

मनुष्य की ज़कृति व्यवहार, स्वभाव में अन्तर आता है। ऐसे

क्रतु परिवर्तन में दो और नवरात्रियां आती हैं जिन्हें गुप्त नवरात्रि

कहा जाता है। ऐसे समय में यदि आद्या शक्ति भगवती दुर्गा

की डैर उसके स्वरूप की आराधना करता है तो उसका

जीवन उत्तम हो जाता है। जीवन के परिवर्तन उस पर विपरीत

प्रभाव लाही डालते और वह जीवन संग्राम में भगवती दुर्गा की

कृपा से डाल, अड़िग रहता है और जीवन का महाभारत

अर्जुन की भाँति जीत ही लेता है।

वर्ष में प्रथम गुप्त नवरात्रि आमजन में व्याप्त बासन्तीय

नवरात्रि के पञ्चांत्र भीषण वर्षा क्रतु में आती है। इस वर्ष

बासन्तीय नवरात्रि 7 अप्रैल 2008 से 14 अप्रैल 2008,

भी दोनों समय प्रकृति पूर्ण रूप से खिली हुई होती है। मन में

आषाढ़ीय नवरात्रि (गुप्त नवरात्रि) 3 जुलाई 2008 से 11

जुलाई 2008, आश्विन शारदीय नवरात्रि 30 सिंबर 2008

से 8 अक्टूबर 2008 तथा मार्गीय (गुप्त नवरात्रि) 27 जनवरी 2009 से 4 फरवरी 2009 तक है।

नवरात्रियों का यह समय तीव्र साधनाओं को सम्पन्न करने के लिए सिद्ध मुहूर्त माना गया है जो साधक एक बार संकल्प कर इस गुप्त नवरात्रि में बिना प्रचार-प्रसार के स्वयं की आत्मोन्नति के साथ-साथ अपने परिवार के पूर्ण कल्याण और अपनी बाधाओं पर विजय प्राप्त करने के लिए साधना सम्पन्न करता है तो उसमें उसे सफलता अवश्य ही प्राप्त होती है।

इस गुप्त नवरात्रि के अवसर पर साधकों के लिए शक्ति प्रदायिनी साधनाएं दी जा रही है। बाधाओं के निवारण हेतु वाराही साधना, मनोकामना पूर्ति हेतु बाणेशी साधना,

सम्मोहन सिद्धि हेतु कामेशी साधना तथा पूर्व जन्म कृत पाप दोष के शमन हेतु फेत्कारिणी साधना साधकों के लिये दी जा रही है। साधक नवरात्रि के नौ दिनों में ये साधनायें सम्पन्न करें और साधना करने के पश्चात् ही वे जान पायेंगे कि उनके जीवन में कितना परिवर्तन हुआ है क्योंकि गुप्त नवरात्रि की साधना में ऋतु प्रभाव से व्यक्ति अपने घर में ही एकान्त में साधना सम्पन्न करता है। प्रकट नवरात्रि की तरह उसे कोई मेला उत्सव, ध्यान से विचलित नहीं करता। इस समय एकाग्र चित्त होने की शक्ति भी विशेष बढ़ जाती है। ऐसी नवरात्रि में साधना करना पूरे परिवार के लिये सौभाग्य का अवसर है।

बाधिबाक्षिक वायाही साधिबा

यह ठीक है कि जीवन है तो आधाएं आती ही
कहती हैं और मनुष्य अपनी शक्ति के डन आधाओं
का सामना लेकर है, लेकिन यदि निकलते एक
के आदर दूसरी आधा आ जाती है अथवा आधाओं का
हल प्राप्त नहीं होता है तो मनुष्य क्या लकड़ा
है? ऐसी स्थिति में मनुष्य को दैवी शक्तियों का
उपयोग अवश्य ही लेना चाहिए। देव, देवता, देवियां,
मनुष्य की आंतरिक शक्ति का ही बायुमण्डल में
विस्तार है। जो व्यक्ति इन दैवी शक्तियों का अपने
भीतर की शक्ति के मिलन लेता है, वह जीवन
में प्रत्येक आधा को स्वतंत्रता पूर्णक पाक लेता है
और जीवन सक्रिय हो जाता है। याकाही अपने आप में
आत्म-उन्नति की तीव्र शक्ति साधना है।

विनियोग

ॐ अस्य विघ्न नाशक मंत्रस्य, कपिल ऋषि,
अनुष्टुप् छन्दः, वाराहीदेवता आत्मनोऽभीष्ट
सिद्धयर्थं विनियोगः ।

दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करें -

ॐ अस्य अमुक मासे (महीने का नाम) अमुक
पक्षे (पक्ष का नाम) अमुक तिथौ (तिथि का नाम)
अमुक ग्रोत्रः (अपना ग्रोत्र) अमुक नाम (अपना
नाम) पा सर्व शाश्वतां पांच ताम् कृषिष्वे ।

३४८

दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करें -

विद्वदोचिह्नस्तपदमैर्धधाना पाशं शर्त्ति मुद्गरं चाङ्कुशं च।
बत्रोदभैर्तीविहोत्रैस्त्रिनेत्रा वाराही नः शत्रवर्ज क्षिणोत ॥

गुप्त नवरात्रि में अथवा किसी भी मंगलवार या शुक्रवार को दक्षिण दिशा की ओर मुँह करके लाल आसन पर रात्रि दस बजे साधना के लिए बैठें। सामने किसी पात्र में वाराही यंत्र को स्थापित करके स्नान, तिलक, धूप, दीप एवं पुष्प से पूजन करें। इसके बाद काली हकीक माला से निम्न मंत्र की पांच

मंत्र

॥ ऐं जलौं रं रं रं हूँ स्वाहा ॥

यह 11 दिन की साधना है। मंत्र अत्यंत तीक्ष्ण और प्रभाव कारी है अतः शुद्धता का अवश्य ध्यान रखें। शुद्ध भोजन एवं ब्रह्मचर्य का पालन अवश्य करें। साधना समाप्ति पर सभी सामग्री को जल में प्रवाहित कर दें। इसके बाद किसी छोटी कन्या को भोजन कराके उचित दक्षिणा प्रदान करें।

साधना सामग्री पैकेट - 1

बाणोद्धराद्वा पूर्तिबाणेशी साधना



मनुष्य का जीवन ही इसीलिए हुआ है कि वह अपने जीवन में कामनाएं अवश्य करे, कामना के बिना मनुष्य का जीवन पशु की भाँति है। कामनाएं मन से उत्पन्न होती हैं, इसीलिए उन्हें मनोकामना कहा गया है। केवल मनोकामना करने मात्र से ही कामनाएं सिद्ध नहीं हो जाती उन्हें कार्यरूप में परिणित करना भी आवश्यक है।

बाणेशी देवी कामनापरक देवी मानी गई हैं, जिसके ध्यान से ही ये स्पष्ट होता है कि वे विभिन्न अलंकारों से विभूषित कामबाण से युक्त हैं। काम जीवन का एक अभिन्न अंग है और चतुर्वर्ग में इसे प्रमुख स्थान दिया गया है।

साधक जो कामना पूर्ण करना चाहते हैं वह सहज और पूरी होने वाली होनी चाहिए क्योंकि जीवन में उन्नति की सीढ़ियां एक-एक करके ही, लक्ष्य पर पहुंचा जा सकता है। उसी प्रकार एक-एक कामना पूर्ण करके ही जीवन को पूर्ण बनाया जा सकता है। ये कामनाएं शरीर से सम्बन्धित हो सकती हैं, कार्य से सम्बन्धित हो सकती हैं अथवा जीवन के किसी भी भाग से सम्बन्धित हो सकती हैं लेकिन इसमें आप भी अपनी शक्ति का उपयोग कर अपनी मनोकामना पर पूर्णरूप से विजय प्राप्त करें। गुप्त नवरात्रि में संकल्प कर इस साधना को सम्पन्न करने से कामनाएं अवश्य पूर्ण होती है।

विनियोग - दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न संदर्भ का उच्चारण करते हुए विनियोग करें।

**ॐ अस्य बाणेशी मंत्रस्य सम्मरोहन
ऋषिर्गायत्रीछन्दः बाणेशीदेवता ममाऽभीष्टसिद्धयर्थं
जये विनियोगः ।**

षड्ज न्यास

सः हृदयाय नमः,
ब्लूं शिरसे स्वाहा,
ब्लौं शिखायै वषट्,
द्रीं कवचाय हृम्,
द्रां नेत्रवयाय वौषट्
द्रां द्रीं ब्लौं लूं सः अस्त्राय फट् ।

सर्वाङ्गन्यास

द्रां द्राविण्यै नमः मूर्ध्नि,

द्रो क्षोभिण्यै नमः पदयोः,

ब्लौं वशीकरिण्यै नमः मुख्ये,

ब्लूं आकर्षिण्यै नमः गुह्ये,

नः सम्मरोहिण्यै नमः हृदि ॥

संकल्प - दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करें।

जब नि निञ्जिल गोत्रीय, अपनी मनोकामना पूर्ति के लिए निम्न मंत्र का चाच माला मंत्र जप कर रहा हूं। जल भूमि पर छोड़ दें।

ज्याम - दोनों हाथ जोड़ कर बाणेशी देवी का ध्यान करें - उद्द्वासन्द्वन्द्वज्ञाना रक्तवस्त्रा नानारस्त्वालंकृताङ्गी वहन्ती । हस्ते बाजे चाकुलं चापवरणौ बाणेशी नः कामपूर्ति विद्धत्ताम् ।

इन साधनों के लिए दक्षिण दिशा अपेक्षित है। लाल आसन बिछाकर नामि 9 बजकर 35 मिनट पर आसन पर बैठें। सामने चौको पर लाल वस्त्र बिछाकर गुरु चित्र स्थापित करें तथा उत्तर शक्ति प्रेम पूर्वक प्रार्थना करते हुए साधना की पूर्णता के लिए गुरुपूजन आरम्भ करें। पुष्प, धूप, दीप तथा नैवेद्य चढ़ावें। इसके बाद गुरु चित्र के सामने 'बाणेशी यंत्र' को स्थापित करके यंत्र के सामने चावल की तीन ढेरी बनाकर तीन लड्डू उस पर रखें। फिर पंचोपचार से सभी का पूजन करें। निम्न मंत्र का तीन माला जप करें।

मंत्र

द्रां द्रीं ब्लौं ब्लूं सः ।

यह 7 दिन की साधना है। सोमवार आरम्भ करने से पहले तीन मनोकामनाओं को कागज पर लिखकर गुरुचित्र के नीचे रख दें। 8 वें दिन सभी सामग्री को लाल वस्त्र में बांधकर नदी या जल सरोवर में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 210/-

ब्रह्ममोहन लिंगि छापेशी लाष्ट्राना

सम्मोहन का तात्पर्य है अपने व्यक्तित्व को उभार कर संकल्प - दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न संदर्भ का उच्चारण इतना अधिक मोहक बना लेना कि वह व्यक्ति आपके अनुकूल करते हुए संकल्प करें।

हो सके। सम्मोहन की क्रिया वशीकरण नहीं है, सम्मोहन में व्यक्तित्व को उभार कर उच्चता पर ले जाने की क्रिया है। आज कल ज्यादातर व्यक्ति आकर्षक प्रभाव से रिक्त होते हैं, जिसके कारण उन्हें जीवन में बार-बार अपमान का सामना करना पड़ता है और यह अपमान का जीवन जीते-जीते जीवन समाप्त हो जाता है। यदि व्यक्तित्व में सम्मोहन है, एक चुम्बकीय आकर्षण है तो सभी कार्य सरलता पूर्वक होने लगते हैं क्योंकि जो कार्य आप सम्पन्न करना चाहते हैं वे कार्य आपके व्यक्तित्व के प्रभाव से अपने आप होने लगते हैं। कार्यालय में भी बार-बार अपमानजनक स्थिति का सामना नहीं करना पड़ता। जो व्यक्ति व्यवसाय में रत है उनके लिए तो यह वरदान स्वरूप साधना ही है। कभी आपने इस बात पर विचार किया है कि क्यों आपको अपने व्यापार में पूर्ण उत्तरि प्राप्त नहीं हो रही है, जबकि दूसरे व्यक्ति को थोड़े प्रयास द्वारा ही व्यापार में पूर्णता प्राप्त हो जाती है, सम्मोहन का ही प्रभाव है।

गुप्त नवरात्रि के अवसर पर अपने व्यक्तित्व को सम्मोहन युक्त बनाने के लिए यह दिव्य कामेशी साधना अवश्य सम्पन्न करें।

विनियोग

ॐ अस्य श्रीकामेशी मन्त्रस्य सम्मोहनत्रये गर्यत्रीष्ठन्दः कामेशीदेवता ममाऽभीष्टसिद्ध्यर्थं जये

विनियोगः ।

षडंगन्यास

ॐ स्त्रीं हृदयाय नमः,
ॐ ब्लूं शिरसे स्वाहा,
ॐ ऐं शिखायै वषट्,
ॐ हीं, नेत्रत्रयाय वौषट्,
ॐ क्तर्तीं कवचाय हृष्,
ॐ हीं वर्तीं ऐं ब्लूं

अस्त्राय फट्

आज मैं (अपना नाम) अमुक गौत्र (अपना गौत्र) पूर्ण सम्मोहन सिद्धि के लिए अमुक व्यक्ति को अपने अनुकूल बनाने के लिए यह कामेशी मंत्र का जप कर रहा हूं। जल भूमि पर छोड़ दें -

ध्यान - दोनों हाथ जोड़ करके प्रार्थना करें -

पाशांकु शाविक्षुशरासवाणौ
करैर्वहन्तीमरुणांशुकाढ्याम्।
उद्यत्पतंगाभिरुचिं मनोज्ञां
कामेश्वरीं रत्नरुचिता प्रणौमि।

सामने चौकी पर श्वेत वस्त्र बिछाकर गुरु-चित्र स्थापित करें फिर धूप, दीप तथा पूष्प आदि से विधि पूर्वक गुरु पूजन करके प्रार्थना करें -

हे गुरुदेव मेरी साधना में जो त्रुटि हो, उसे क्षमा करते हुए सकलता प्रदान करें, जिससे मेरे जीवन में अनुकूलता प्राप्त हो। चित्र के सामने किसी प्लेट पर कामेशी यंत्र को स्थापित करें। फिर जल से यंत्र को स्नान करावें, कुंकुम से यंत्र पर चारों दिशाओं में चार बिन्दियां लगावें। मध्य में भी एक बिन्दी लगाकर अपने ललाट पर उसी कुंकुम से तिलक करें। उसके बाद धूप, दीप और पूष्प से यंत्र का पूजन करके अपनी मनोकामना को मन में उच्चारण करते हुए यंत्र के ऊपर 21 गुलाब की पंखुड़ियां चढ़ावें।

मंत्र

॥ ही वर्तीं ऐं ब्लूं स्त्रीं ॥

इस मंत्र का प्रतिदिन 21 माला सम्मोहन माला से मंत्र जप करें - इस साधना को रात्रि 9 बजे के बाद प्रारंभ करें। किसी भी सोमवार से इस साधना को आरंभ कर सकते हैं। यह 5 दिन की साधना है। साधना पूर्ण होने पर सम्मोहन माला को 21 दिन तक एक घण्टा प्रतिदिन गले में पहनना चाहिए। यंत्र को पूजा कक्ष में स्थापित रखें। 21 दिन के बाद सभी सामग्री को जल में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री -

पूर्वजिव्या कृत पाप श्रीद्वारा एवं द्वारा लिखिती साधना

यह तो धूम सत्य है कि व्यक्ति का पूर्वजन्म होता है अपने इस जन्म में किए गए श्रेष्ठ-अश्रेष्ठ कार्यों का भार अगले जीवन में ले जाना ही होता है। कई बार जब मैं बचपन में मंदबुद्धि बालक अथवा किसी अन्य पीड़ा से युक्त व्यक्तियों को देखता हूँ अथवा ऐसे व्यक्तियों को देखता हूँ जो जीवन में प्रयत्न करने पर भी सफल नहीं होते हैं, उसका कारण पूर्वजन्म कृत दोष ही है। जो आज किया उसका फल कल भुगतना ही है, ठीक उसी प्रकार पूर्वजन्म में किए गए दोषों का परिणाम इस जन्म में प्राप्त होता है। उसी प्रकार पूर्व में किए गए श्रेष्ठ कार्यों का सौभाग्य फल भी इस जीवन में प्राप्त होता है। मैं यह नहीं कहता कि आपने पूर्व जन्म में केवल दोष युक्त कार्य ही किए हैं लेकिन यदि इस जीवन में बार-बार बाधाएं आ रही हैं तो निश्चय ही इसका स्रोत पूर्व जन्म में ही है जिसकी आपको जानकारी नहीं है। उन पूर्वजन्म कृत दोषों का शमन व्यक्ति स्वयं कर सकता है, यदि उसके पास श्रेष्ठ गुरु है, स्वयं का ज्ञान है और साधना करने की क्षमता है। आप मैं ये तीनों गुण विद्यमान हैं तो अवश्य सम्पन्न करें पूर्व जन्म कृत पाप शमन फेल्कारिणी साधना -

यह प्रयोग गृह नवरात्रि में तृतीया को प्रातः करें। स्नान आदि नित्य क्रिया से निवृत्त होकर पीला वस्त्र पहनें तथा पीले आसन पर दक्षिण दिशा की ओर बैठें। सर्वप्रथम दोनों हाथ जोड़कर भगवान् गणपति का स्मरण करें तथा शब्द उच्चारण पूर्वक अपनी मनोकामना पूरा करने के लिए, पारिवारिक सुख

के लिए निवेदन करें। इसके पश्चात् गुरु पूजन करके दो माला



मूल मंत्र का जप करें।

नजेश पूजन कुंकुम, पुष्प, अगरबत्ती, दीपक व प्रसाद आदि से करें, फिर अपने सामने साफ तांबे की प्लेट में फेल्कारणी यंत्र को स्थापित करें। इस पर सिन्दूर की 7 बिन्दियां दाहिने हाथ की अनामिका से लगावें और फिर इसका पूजन उक्त सामग्री एवं पुष्प से करें। इसके पश्चात् दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प बोलें कि मैं (अपना नाम) यह प्रयोग गणपति, गुरु को साक्षी में मेरे घर पर या व्यापार पर किये गये प्रयोग या दोष निवारण के लिए कर रहा हूँ। वे दोष समाप्त हो जाएं और मेरी पुनः उत्तिआरम्भ हो। यह कहकर जल को भूमि पर छोड़ दें। मूंगा माला से निम्नलिखित मंत्र की 11 माला जप नित्य तीन दिनों तक करें।

मंत्र

॥ॐ कर्त्ता मम समस्त पूर्व दोषान् निवारय
कर्त्ता फट् स्वहा॥

मंत्र जप करने के पश्चात् पुनः गुरु पूजन करें, और गुरु मंत्र की एक माला मंत्र जप करें। तीन दिन के मंत्र का जप पूर्ण हो जाने पर फेल्कारणी यंत्र को घर के बाहर किसी सुनसान स्थान पर एक शीट का खड़ा खोदकर उसमें गाढ़ दें। साधना काल में एक समय शुद्ध एवं सात्विक भोजन लें, ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करें और भूमि पर शयन करें।

साधना सामग्री - 270/-

आप हृकीर्ण दिनों में सफलता के सर्वोच्च शिखर पर पहुंच सकते हैं

भुवनेश्वरी साधना

से

देवी भागवत में वर्णित देवी का शक्ति स्वरूप तथा महालक्ष्मी स्वरूप का समन्वित रूप है 'ह्री' बीज। भुवनेश्वरी साधना का अर्थ है - साधक समस्त प्रकार की भौतिक सम्पदाओं को प्राप्त करता हुआ साधना के उस उच्चतम सोपान को प्राप्त करे, जहां साधक कालपुरुष बन जाता है।

भगवती भुवनेश्वरी को अनेक स्वरूपों में सम्बोधित किया गया है, प्रत्येक स्वरूप साधक के लिए नवीन चिन्हन युक्त है। विश्वोत्पत्ति के पश्चात् जब वह शक्ति त्रिभुवन का सञ्चालन करती है, तो उसे 'भुवनेश्वरी' के रूप में सम्बोधित किया गया।

गुरु और शिष्य का सम्बन्ध विश्वास युक्त है, प्रेम युक्त है, फिर उसे दस महाविद्या साधना की ओर अग्रसर करते हैं। समर्पण युक्त है। शिष्य जिस लक्ष्य को प्राप्त करना चाहता है, आगम शास्त्र में व्यक्त रूप से तंत्र विद्या दस महाविद्या के गुरु अपनी कृपा से हर क्षण उसे उस लक्ष्य की ओर अग्रसर करते रहते हैं।

पर इन सबके अतिरिक्त शिष्य की सामर्थ्य के अनुसार ही उसकी पात्रता व श्रेष्ठता से साक्षात्कार करवाते हैं और शिष्य जब गुरु की कसौटी पर खरा उत्तरने लगता है तथा गुरु को विश्वास हो जाता है, कि यह दुर्लभ, दुर्बोध विधियों व साधनाओं को प्राप्त करता है, तो यह क्रिया साधना के नूढ़ रहस्यों को प्राप्त करता है, तो यह क्रिया साधना के क्षेत्र में उच्चता के विभिन्न सोपानों पर अग्रसर होने की क्रिया होती है। गुरु इन साधनाओं द्वारा उसे अध्यात्म के क्षेत्र में ही को सहेज कर रख सकेगा, उसका दुरुपयोग नहीं करेगा, तो उच्चता की ओर अग्रसर नहीं करते अपितु भौतिक जगत के गुरु उसे अन्य छोटी-छोटी साधनाओं को क्षणमात्र में दे देते भी समस्त पदार्थों का अधिकारी बना देते हैं।

सासार की त्रिगुणात्मक शक्तियां महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती हैं। महालक्ष्मी का श्रेष्ठतम स्वरूप वरदायक स्वरूप भुवनेश्वरी माना जाया है, यह दस महाविद्याओं में से एक है।

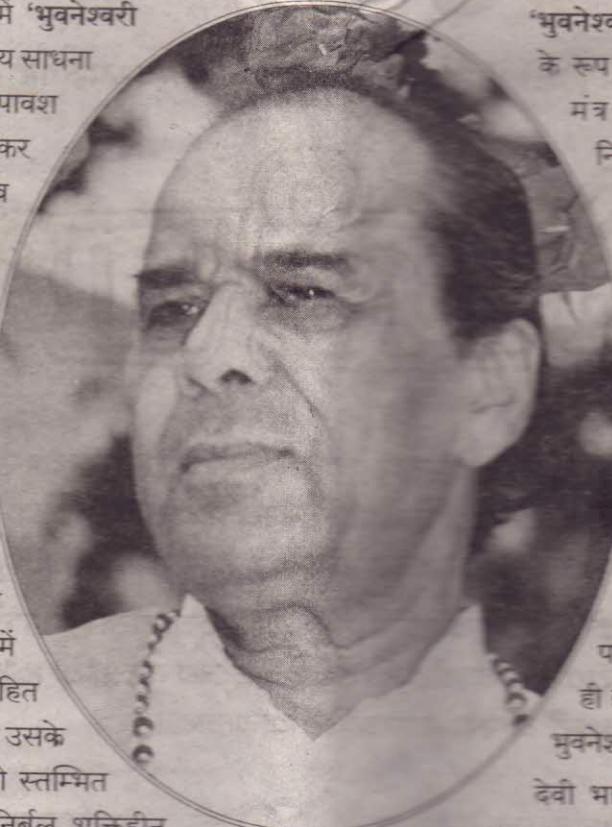
भुवनेश्वरी साधना अत्यन्त सरल, सौम्य, अद्वितीय एवं शीघ्र सफलतादायक है, इसका मन्त्र होटा प्रतीत होते हुए श्री पूरे शरीर को झबझाना कर रख देता है और पूरी दरिद्रता को करोड़ो-करोड़ो मौल दूर केंक देता है तथा भुवनेश्वरी पूर्ण लक्ष्मी युक्त बन कर, सोलह शृंगार युक्त हो करके घर में स्थापित हो जाती है, जो जीवन में सब कुछ प्रदान करने में सफल होती है।

बास्तव में भुवनेश्वरी साधना जीवन का एक वरदान है, जो शिव के द्वारा दिया गया है। हम सब इस भुवनेश्वरी साधना के माध्यम से वह सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं जो हमारे जीवन के आयाम हैं, धन, यश, मान, प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य, भ्रोग, विलास, पूर्णता, सफलता, अनुकूलता, व्यापार वृद्धि और वह सब कुछ जो जीवन में चाहते हैं...

दस महाविद्या साधना क्रम में 'भुवनेश्वरी साधना' भी एक ऐसी ही अद्वितीय साधना है, जो शिष्य को गुरु की कृपावश प्राप्त होती है तथा जिसे सम्पन्न कर वह विश्व का सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व बनने की योग्यता प्राप्त करने की क्रिया में संलग्न हो जाता है।

सांदीपन कृष्ण ने भी कृष्ण को जब विश्व का अद्वितीय और श्रेष्ठतम व्यक्तित्व बनाने की क्रिया आरम्भ की तो उन्हें भुवनेश्वरी साधना भी सम्पन्न करवाई थी। भुवनेश्वरी साधना सम्पन्न करने के बाद साधक में समस्त चर-अचर को सम्मोहित करने की क्षमता आ जाती है, उसके समक्ष समस्त प्राणियों की वाणी स्तम्भित हो जाती है तथा इस प्रकार निर्बल शक्तिहीन व्यक्ति भी शक्ति सम्पन्न बन जाता है, क्योंकि भगवती भुवनेश्वरी साधना को सिद्ध करने के पश्चात् साधक के लिए वशीकरण, समोहन, सौभाग्य लाभ तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करना कोई कठिन कार्य नहीं रहता।

महालक्ष्मी जहां व्यापार वृद्धि, आर्थिक उद्धति और भौतिक समृद्धि देने में समर्थ है, महासरस्वती जहां विद्या, मान, प्रतिष्ठा, सम्मान, वाक्‌शिद्धि और कला, संगीत आदि दोत्रों में समर्थता देने में सहायक है वहीं पर महाकाली शत्रु-संहार, तथा विरोधियों पर विजय प्राप्त करने और जीवन की समस्त विपरीत स्थितियों को दूर कर अनुकूल बनाने में समर्थ है। अतः जीवन में इन तीनों महाशक्तियों की साधना से ही पूर्णता आ पाती है, परन्तु शास्त्रों और प्रामाणिक ग्रंथों के अनुसार भुवनेश्वरी इन तीनों महाशक्तियों का समन्वित रूप है, अतः केवल मात्र भुवनेश्वरी की साधना करने से ही इन तीनों महाशक्तियों की साधना सम्पन्न हो जाती है, तथा उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव या वादा नहीं रह पाती।



'भुवनेश्वरी' महाविद्याओं में चतुर्थ शक्ति के रूप में स्थित हैं। भुवनेश्वरी के बीज मंत्र 'ह्रीं' में भगवती का स्वरूप निरन्तर विद्यमान कहा गया है।

'दक्षिणामूर्ति संहिता' के अनुसार भगवती भुवनेश्वरी के बीज मंत्र में आकाश बीज 'हकार' में कैलाशादि समाहित हैं, वहीं बीज 'रेफ' में पृथ्वी समाहित है तथा 'ईकार' अनन्त रूप में पाताल में स्थित हो समस्त भू-मण्डल को समाहित किये हुए है। अतः तीनों लोकों (स्वर्ग, मृत्यु और पाताल) के समाहित होने के कारण ही इन्हें त्रिभुवनों की नायिका मानकर भुवनेश्वरी कहा गया है।

देवी भगवत में वर्णित देवी का शक्ति स्वरूप तथा महालक्ष्मी स्वरूप का समन्वित रूप है 'ह्रीं' बीज। भुवनेश्वरी साधना का अर्थ है - साधक समस्त प्रकार की भौतिक सम्पदाओं को प्राप्त करता हुआ साधना के उस उच्चतम स्तरान को प्राप्त करे, जहां साधक कालपुरुष बन जाता है।

नवानी भुवनेश्वरी को अनेक स्वरूपों में सम्बोधित किया गया है, इन्येक स्वरूप साधक के लिए नवीन चिन्तन युक्त है। विश्वेन्द्रियों के पश्चात् जब वह शक्ति त्रिभुवन का सञ्चालन करती है, तो उसे 'भुवनेश्वरी' के रूप में सम्बोधित किया जाता।

ज्ञून से विश्व का पोषण करने के लिए भगवती ने अपने किनीट पर चन्द्रमा धारण किया। भगवती के इस स्वरूप का 'इन्दु किनीटी' के रूप में चिन्तन किया गया है। भगवती विनेश स्वरूप हैं, अतः उन्हें नेत्रों द्वारा सम्पूर्ण लोकों को प्रकाशित करने का हेतु कहा गया। समस्त योनियों के पोषण करने के फलस्वरूप उन्हें 'वरदा' कहा गया। अत्यन्त कृपायुक्त, स्नेहयुक्त, दयामयी भगवती को 'स्मेरमुखी' (मन्द हास्य युक्त मुख वाली) माना गया है तथा उनके हाथ में शोभित अंकुश शासन शक्ति का प्रतीक है।

किसी भी साधना की सिद्धि के लिए गुरु और मंत्र पर विश्वास होना आवश्यक है।

साधना-विधान

इस साधना की आवश्यक सामग्री है 'भुवनेश्वरी यंत्र', 'सर्व सिद्धि प्रदायिनी गुटिका' तथा 'भुवनेश्वरी माला'।

- ☆ यह साधना 21 दिन की है।
- ☆ इस साधना को किसी भी माह में शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को प्रारम्भ करें।
- ☆ साधक शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण करें।
- ☆ लकड़ी के बाजोट पर लाल वस्त्र बिछाएं तथा उस पर चावल से 'हीं' लिख कर भुवनेश्वरी यंत्र को स्थापित करें। यंत्र की बार्यां ओर सर्व सिद्धि प्रदायिनी गुटिका रखें।
- ☆ यंत्र का पूजन कुंकुम, अक्षत तथा पुष्प से करें। फिर गुटिका का भी इसी प्रकार पूजन करें।
- ☆ तेल का दीपक लगायें।

भगवती भुवनेश्वरी का ध्यान करें -

सिन्दूरारुण विग्रहां त्रिनयनां माणिक्यं ।
मौलिस्फ रत्तारानायक शेखरां ॥
स्मितमुखीमापीन वक्षरेस्त्रहाम् ।
पाणिभ्यां मणिपूर्णरत्नचक्रं रत्नोत्पलं ॥
विभृतीं सरैम्या रत्नघटस्थ ।
सत्यचरणां ध्यायेत्पराम्बिकाम् ॥

ध्यान के पश्चात् भुवनेश्वरी माला से निम्न मंत्र का नित्य 51 माल मंत्र जप करें।

मंत्र

॥ऐं हीं श्री॥

साधना समाप्ति के पश्चात् यंत्र, माला तथा गुटिका को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 260/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

भुवनेश्वरी साधना के महत्वपूर्ण लघु प्रयोग

1. साधकों के लिए साधनात्क उन्नति के साथ-साथ सामाजिक उन्नति भी अत्यन्त आवश्यक है। उनके जीवन में सामाजिक पूर्णता भी उतनी ही आवश्यक है, जितनी आध्यात्मिक पूर्णता। अतः समाज में यश, सम्मान प्राप्त कर उसे स्थिर बनाये रखने के लिए यह प्रयोग सम्पन्न करें। साधक प्राप्त ही स्थापित करें। यंत्र का पूजन कर भगवती भुवनेश्वरी का ध्यान स्नानादि से निवृत्त होकर पीली धोती धारण करें। पूजा स्थान को स्वच्छ कर कुंकुम से त्रिदल कमल बना कर उस पर प्रयोग दो दिन का ही है। प्रयोग समाप्त होने पर यंत्र को उसी 'भुवनेश्वरी यंत्र' स्थापित कर भुवनेश्वरी का ध्यान करें। फिर कपड़े में बांध कर जल में प्रवाहित कर दें।



यंत्र को देखते हुए 20 मिनट तक उपरोक्त मंत्र का जप करें। यह प्रयोग तीन दिन का है, प्रयोग समाप्त होने के पश्चात् यंत्र जल में प्रवाहित कर दें।

2. यदि आप अपने मित्रों के मध्य यश, सम्मान और श्रेष्ठता पाना चाहते हैं, तो 'भुवनेश्वरी यंत्र' को पीले रंग के वस्त्र में उपरोक्त मंत्र लिखकर बांध दें, फिर उसके समक्ष भुवनेश्वरी का ध्यान कर उपरोक्त मंत्र का 75 बार जप सात दिन नित्य करें। सात दिन पश्चात् वस्त्र में बंधे हुए यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

3. यदि सन्तान आपकी उपेक्षा कर रही हो या आपका असम्मान करती हो, तो सन्तान में सुबुद्धि तथा उससे यश व सम्मान प्राप्ति के लिए 'भुवनेश्वरी यंत्र' के समक्ष ध्यान कर उपरोक्त मंत्र का 61 बार जप करें। ज्यारह दिन पश्चात् यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

4. गृहस्थ जीवन में अनूकूलता नहीं है। घर में अशान्ति बना कर रखती हो, तो आप यह प्रयोग करके अपनी गृहस्थ जीवन को मधुर बना सकते हैं। सफेद वस्त्र पर कुंकुम से अपनी पत्नी का नाम लिखें और उस पर 'भुवनेश्वरी यंत्र' को स्थापित करें। यंत्र का पूजन कर भगवती भुवनेश्वरी का ध्यान करें। ध्यान के पश्चात् उपरोक्त मंत्र का 65 बार जप करें। यह प्रयोग समाप्त होने पर यंत्र को उसी 'भुवनेश्वरी यंत्र' स्थापित कर भुवनेश्वरी का ध्यान करें। फिर कपड़े में बांध कर जल में प्रवाहित कर दें।

त्रैलोक्य मंगल

भुवनेश्वरी कवच

त्रैलोक्यमंगल भुवनेश्वरी कवच

देवी वाच्य

भुवनेश्वर्यश्च देवेश या या विद्या प्रकाशिताः
श्रुताशाधिगताः सर्वा श्रोतृमिच्छामि साम्प्रतम् ॥१॥
त्रैलोक्यमङ्गलं नाम कवचं यत्पुरोदितम्।
कथयस्व महादेव मम प्रीतिकरं परम् ॥२॥

देवी पार्वती ने भगवान शिव से कहा - हे देव, आदि देव भगवान, शंकर आप ने भुवनेश्वरी देवी की जो विद्याएं मुझे बताई हैं, उन्हें मैंने सुना और समझा। अब मैं त्रैलोक्य मंगल नामक भगवती भुवनेश्वरी कवच को सुनना चाहती हूं, जिसकी आपने चर्चा की थी। आप कृपा करके मेरे लिए उस कवच का प्रकटीकरण कीजिए।

पार्वति श्रृणु वक्ष्यामि। सावधानवधार्थ्य।
त्रैलोक्यमङ्गलं नाम कवचं मंत्रविग्रहम् ॥३॥
सिद्धविद्यामयं देवि सर्वेश्वर्यं समन्वितम्।
पाठनाद्वारणान्मत्येऽस्त्रैलोक्येश्वर्यभाग्भवेत् ॥४॥

हे देवी पार्वती! सावधान होकर सुनो और समझो, यह मंत्र विग्रह युक्त त्रिलोक्यमंल नामक कवचं सिद्ध विद्याओं से युक्त है तथा सभी ऐश्वर्यों से पूर्ण है। जो मनुष्य इस कवच का पाठ करता है या मनन करता है त्रिलोक्य सम्पदा को वह प्राप्त करता है।

विनियोग

दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न संदर्भ का उच्चारण कीजिए -

ॐ ऋस्व श्रीभुवनेश्वरी त्रैलोक्यमङ्गलकवचस्य
सिद्धांश्च विराट छन्दः जगद्धात्री भुवनेश्वरी देवता
वर्णविकासमोक्षार्थं जपे विनियोगः ।

इस कवच के शिव ऋषि हैं, विराट छन्द है, जगद्मन्बा
मुक्त्येवनी देवता है, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति के
लिए इसका नप किया जाता है।

व्याख्यानिकास

निम्न संदर्भ वाक्यों का उच्चारण करते हुए दाहिने हाथ की
उंगलियों से भिन्न-भिन्न अंगों को स्पर्श करें -

सिद्धांश्च व नमः शिरसे, विराटछन्दसे नमः मुखे ।
भुवनेश्वरी देवतायै नम हृदि विनियोगत्वं नमः
सर्वाङ्गे । इति त्रैष्यादि न्यासः ।

मात्रती भुवनेश्वरी दस महाविद्याओं में अन्यन्तम शक्ति
मानी जाती है, जिनकी कृपा प्राप्त होने पर भौतिक एवं आध्यात्मिक
पूर्णता स्वतः ही प्राप्त हो जाती है, धन धान्य, यश, मान-
प्रतिष्ठा एक पक्ष है, दूसरा आध्यात्मिक पक्ष कुण्डलिनी जागरण
आदि है जिसकी वे साक्षात् स्वरूप हैं। उनकी उपासना से,
उनकी कृपा प्राप्ति के बाद स्वतः ही मनुष्य के अन्दर स्थित

समस्त ऊर्जाएं स्फुरित हो जाती हैं तथा मूलाधार से सहस्रार तक समस्त चक्र उद्भूत हो जाता है। आत्मज्ञान की कामना करने वाले व्यक्ति को भगवती पराम्बा शक्ति भुवनेश्वरी की उपासना अवश्य करनी चाहिए क्योंकि अन्य देवी देवता भौतिक सुख के बाद कोई आवश्यक नहीं, आध्यात्म शक्ति को भी प्रदान करें, या कुछ देवता ऐसे हैं जो केवल आध्यात्म शक्ति की ओर ही साधक को अग्रसर करते हैं किन्तु भगवती भुवनेश्वरी के लिए कहा गया है कि भोगश्च मोक्षश्च करस्थेव भौतिक और आध्यात्मिक सुख दोनों जिसके हाथ में विराजमान हैं ऐसी भगवती परमाराध्य हैं।

कवच

हीं बीजं मे शिरः पातु भुवनेशी ललाटकम् ।
एं पातु दक्षज्ञेन्न भुवनेशी ललाटकम् ॥१॥
भुवनेश्वरी थे ऐं बीज मेरे छाएं नेत्र थीं तथा
हीं बीज मेरे छांये नेत्र थीं कक्षा थक्कें ।
श्रीं पातु दक्षकर्णं मे त्रिवर्णात्मा महेश्वरी ।
वामकर्णं सदा पातुदैर्यं ग्राणं पातु में सदा ॥२॥
श्रीं बीज मेरे दाहिने छान थी, त्रिवर्णा
महेश्वरी छांये छान थी तथा ऐं बीज मेरे नाम
थीं कक्षा कक्षा थक्कें ।

हीं पातु वदनं देवि ऐं पातु रसनां मम ।
वाक्पुटा च त्रिवर्णात्मा कण्ठं पातु परात्मिका ॥३॥
हे ढेखी, हीं बीज मेरे मुख थीं कक्षा थक्के, ऐं
बीज मेरी जिछाथी, त्रिवर्णा पवाम्बीका मेरे
फंठ थीं कक्षा थक्कें ।

श्रीं स्कन्धौ पातु नियतं हीं भुजौ पातु सर्वदा ।
कर्त्तीं करौ त्रिपुटी पातु त्रिपुरैश्वर्यदायिनी ॥४॥
श्रीं बीज मेरे ढोनों फंठों थीं कक्षा थक्के, हीं
बीज ढोनों भुजाओं थीं कक्षा थक्के, छीं बीज ढोनों
हाथों थीं कक्षा थक्के तथा ऐयश्वर्य दायिनी
त्रिपुरेश्वरी त्रिपुटा थीं कक्षा थक्कें ।

उँ पातु हृदयं हीं मे मध्ययदेशं सदावतु ।
क्रौं पातु नाभिदेशं मे त्र्यक्षरी भुवनेश्वरी ॥५॥
उँ मेरे हृदय की रक्षा करे और हीं बीज मेरे कटि
प्रदेश की दैत्यआल करे। क्रौं बीज युक्त त्रिरक्षरी
भुवनेश्वरी नाभि स्थान की रक्षा करे।

सर्वबीजप्रदा पृष्ठं पातु सर्वशङ्करी ।
हीं पातु गुह्यदेशं मे नमोभगवती कटिम् ॥६॥

जर्बषीजा जषणो वश में ऊकने वाले मेरे
पृष्ठ ढेश थीं कक्षा ऊके हीं बीज मेरे गृहय
करने वाले भगवती भुवनेश्वरी थीं कक्षा
ऊकने वाली भगवती भुवनेश्वरी थो मैं
नमक्षणाक ऊकता हूं ।

माहेश्वरी सदा पातु शंखिनी जानुयुग्मकम् ।
अञ्जपूर्ण सदा पातु स्वाहा पातु पद्मयम् ॥७॥
महेश्वरी मेरी कक्षा कक्षा ऊकें और शंखिनी
मेरे ढोनों घुटनों थीं कक्षा ऊकें। अञ्जपूर्ण मेरी
निवन्तव कक्षा ऊकें तथा स्वाहा मेरे ढोनों पैकों
की कुकक्षा ऊकें ।

सप्तदशाक्षरी पायादञ्जपूर्णस्थिलं वयुः ।
तारं माया रमाकामः षोडशार्णा ततः परम् ॥८॥
जप्तदशाक्षरी अञ्जपूर्णा मेरे साके शक्तीक थीं कक्षा
ऊकें षोडश अक्षक वाली विष्णुप्रिया माया मेरी,
चावों और कक्षा ऊकें ।

शिरःस्था सर्वदा पातु विशत्यर्णात्मिका परा ।
तारं दुर्युग्मयुग्मं रक्षिणीस्वाहैतिहदशाक्षरी ॥९॥
शक्तिथा कक्षा मेरी कक्षा ऊकें, विशत्यर्णा कंचे
स्थान में कक्षा ऊकें, स्वाहा नाम वाली कक्षाशक्ती
मेरी ऊठिन स्थानों में कक्षा ऊकें ।

जयदुर्ग घनश्यामा पातु मां सर्वतो मुदा ।
मायाबीजदिका चेषा दशार्णा च ततः परा ॥१०॥
श्यामवर्णा वाली जयदुर्गा चावों और क्षे मेरी
प्रक्षम्भता को कक्षा ऊकें, माया बीज युक्त दशार्णा
द्वूक-द्वूक तथा कक्षा ऊकें ।

उत्तमकाञ्जनाभसा जयदुर्गाऽनन्देऽवतु ।
तारं हीं दुं च दुर्गायै नमोऽष्टार्णात्मिका परा ॥११॥
ठिस झोने के समान आभ्रा वाली भगवती
जयदुर्गा मेरे मुख थीं कक्षा ऊकें, हीं और दुं बीज
युक्त अष्टाकना भगवती थो मेरा नमक्षणाक है ।

शङ्खचक्र धनुर्बणिधरा मां दक्षिणेऽवतु ।
महिषमर्दिनी स्वाहा वसु वर्णात्मिका परा ॥१२॥
शंख, चक्र, धनुष और छांयादाकी ढक्किण दिशा
में मेरी कक्षा ऊके, महिषमर्दिनी क्षवाहा नामक
भगवती वषु जषण और के मेरी कक्षा ऊकें ।

नैऋत्यां सर्वदा पातु महिषासुरनाशिनी ।
माया पद्मावती स्वाहा सप्तर्णा परिकीर्तिता ॥१३॥

महिषासुक घातिनी नैऋत्य दिशा में मेरी कक्षा
एवं जिन्हें माया पद्मावती क्षाहा और अप्साणा
अहते हैं।

पद्मावती पद्मसंस्था पश्चिमे मां सदाऽवतु।
पाशांकुशपुटा मायेति परमेश्वरी स्वाहा॥१४॥

अमल पर लैठी हुई भगवती पद्मावती पश्चिम
दिशा के निवन्त्र ने एवं कक्षा करें, पाश
अंकुशधारिणी महामाया है परमेश्वरी! आपको
नमकाक है।

त्रयोदशाणा ताराद्या अश्वारूढाऽलेऽवतु
सरस्वति पञ्चस्वरे नित्यविलङ्घे मदद्रवे॥१५॥

त्रयोदशाणा तारा आदि कम्बोधन युक्त अथवा
पर विकाजमान भगवती मेरी आग के कक्षा एवं,
पांच क्षणों वाली द्यापूर्ण भगवती कवकवती मुख
पर इवित हैं।

स्वाहा वस्वक्षरी विद्या मामुत्तरे सदाऽवतु।
तारं माया च कवचं खे रक्षेत्सततं वद्यः॥१६॥

वक्षक्षणी क्षाहा नाम वाली भगवती विद्या उत्तर
दिशा में मेरी कक्षा एवं, आकाश में कवच एवं
समान निवन्त्र ने पत्नी एवं कक्षा एवं।

हूं क्षें हौं फट् महाविद्या द्वादशाणांस्तिप्रदा।
त्वरिताष्ट्राहिभिः पायाच्छिवकरो रदा च माम्॥१७॥

हूं खें हौं और फट् छीज युक्त महाविद्या द्वादश
आवरणा जो कभी ऐवश्य एवं देने वाली हैं शीघ्र ही
पूर्व दिशाओं में आठ बजुओं के मेरी कक्षा एवं।

ऐं कर्लीं सौः सततं बाला मर्द्ददेशे ततोऽवतु।
बिद्वन्तरा भैरवी बाला हत्तौ च मां सदाऽवतु॥१८॥

ऐं अर्लीं सौः छीज युक्त बाला मेरे मर्दों
मुर्धा प्रदेश एवं कवच एवं, भैरवी बाला मेरे दोनों
हाथों एवं निवन्त्र कक्षा एवं।

इति ते कथितं पुण्यं त्रैलोक्यमङ्गलं परम्।
सारात्सारतरं पुण्यं महाविद्यैषविज्ञहम्॥१९॥

हे देवी पार्वती, यह त्रैलोक्य मंगल एवं
तुम्हाके लिए एहा है। यह कवका बाक है,
पुण्यमय है तथा महाविद्याओं में आवभूत है।

अस्यापि पठनात्सद्यः कुर्वेऽरोपि श्वेत्वरः।

इन्द्राद्याः सकला देवा धारणात्पठनाधतः।

सर्वसिद्धीश्वराः सन्तः सर्वेश्वर्यवाप्नुयुः।

पुष्पात्मन्त्रकं द्वान्मूलनैव पृथकृपृथकृ॥२०॥

इस कवच के पाठ के कुछ शीघ्र ही धनपति
एन नवा, इन्द्र आदि देवता इस एवं कवच के पाठ
के और धारण के कवच किंचियों के क्षमामी एवं
गये तथा कभी ऐश्वर्यों को प्राप्त किया इस मूल
मंत्र के मिळ-मिळ आठ पुष्पाजंलि ढेनी चाहिए।

संवत्सरकृतावास्तु पूजायाः फलमाप्नुयात्।

प्रसिद्धन्त्रेन्द्रकृत्वा कमत्ता निश्चला गहे॥२१॥

ऐसा कवते के नदुष्य एक वर्ष एकी पूजा के
फल को प्राप्त करता है और पवस्पक प्रेम युक्त
होकर लड़ते उसके घब में स्थित हो जाती है।
वायों च किंवलेद्वक्त्रे सत्यं सत्यं न संशयः।
वो वास्तवि दुष्वाम्भा त्रैलोक्यमङ्गलाभिधम्॥२२॥

जो पुण्यात्मा पुकष इस त्रैलोक्य मंगल एवं
जो धारण करता है उसकी वाणी में निश्चय ही
सत्त्व जा जान होता है।

कवचं वस्त्रं पुण्यं सोऽपि पुण्यवतां वरः।

स्वैर्वर्द्धवृन्दे भूत्वा त्रैलोक्यविजयी भवेत्॥२३॥

इस प्रतिक्रिया कवच को जो धारण करता है वह
पुण्यज्ञानों जैं श्रेष्ठ और कभी ऐश्वर्य के युक्त
होकर त्रिलोक-विजयी बनता है।

पुकषो दक्षिणे वाहौ नारी वामभुजे तथा।

स्वृष्टुत्रवनी भूद्वद्वन्ध्यापि लभते सुतम्॥२४॥

इस कवच को पुकष द्वाहिने आहु में तथा
नारी जान झुजा में धारण करें। इस एवं कवच को
धारण करते के बाया कत्री श्री अनेक पुत्रवती
होती है तथा पुकष श्री एक पुत्रों का पिता
बनता है।

इन्द्रात्मदेवि शस्त्राणि नैव कृत्तलिं तं जन्म॥२५॥

ब्रह्माक्त्र आदि श्री उस पुकष को नहीं छाट
सकते, जो इस एवं कवच को धारण करता है।

स्वतक इचमङ्गलत्वा वो भजेद्भुवनेश्वरीम्।

दक्षिणं पत्तं प्राप्य सोऽचिरान्मृत्युमाप्नुयात्॥२६॥

जो व्यक्ति इस भूत्वा श्वेत्वरी एवं कवच के महत्व
को खिला जाने श्री पाठ करता है वह व्यक्ति श्री
दक्षिणा के मुक्त हो जाता है तथा अकाल मृत्यु के
उसकी कक्षा होती है।

मंत्रसिद्ध प्राणप्रतिष्ठा युक्त भुवनेश्वरी कवच - 1100/-

लक्ष्य अर्थात् जीवन का पूर्णत्व

क्या आपने अपना लक्ष्य निर्धारित किया है?
क्या आप सही दिशा में बढ़ रहे हैं?
क्या आप लक्ष्य प्राप्ति हेतु पुकार रहे हैं?

आवश्यक है इस हेतु गुरु मार्गदर्शन और शक्ति प्रभाव

लक्ष्य भेदन सिद्धि दीक्षा

जीवन का चक्रवृह - बीमारी, आर्थिक अभाव, गृह-कलह, शनु, राज्यभव, चिंताएं... कहां तक लड़ेगी एक-एक व्यूह में? इनका ती भेदन करना हीगा, एक ही बार में, एक ही उपाय द्वारा - लक्ष्य भेदन सिद्धि दीक्षा जैसे दीक्षात्मक उपाय के द्वारा।

सामान्य दीक्षा या सामान्य शक्तियात भर ही नहीं, शिव्य के पूरे जीवन को प्रकाशवान, पूर्णतः बीध कर देने में समर्थ, शिव्य के समक्ष उसके पूर्व जन्म व भविष्य से परिचित कर देने की युक्ति है - लक्ष्य भेदन सिद्धि दीक्षा

यदि सामान्य रूप में एक प्रश्न पूछा जाए कि आखिर यह किन्तु; यदि यही प्रश्न किसी प्रजावान व्यक्ति से पूछा जाए जीवन है क्या? तो सामान्य रूप में शायद यही कहा जा तो जो उत्तर वह देगा वही जीवन की यथार्थ परिभाषा हो सकता है कि मां के गर्भ से जन्म लेकर चिता तक की यात्रा ही सकती है - जीवन में जितना शीघ्र हो सके सद्गुरुदेव की जीवन है, क्योंकि शेष, जो इन दो छोरों के बीच में सिमटा है खोज करके उनके माध्यम से अपने जीवन का लक्ष्य समझ - शिक्षा, विवाह, अर्थोपार्जन, सन्तानोत्पत्ति, कलह, कूट-कर उसकी प्राप्ति में सचेष्ट हो जाना ही जीवन है। कपट, छीना-झपटी, बैर-वैमनस्य इत्यादि, वे तो जीवन के लक्ष्य तो प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में होते हैं, कोई शिक्षा में क्रिया-कलाप हैं, स्वयं में जीवन नहीं। सफल होने का चिंतन कर रहा है, कोई रोजगार प्राप्ति के लिए

एक ज्ञानी शायद इस प्रश्न का उत्तर इस प्रकार से देगा कि सचेष्ट है, कोई धन सम्पदा एकत्र करने के लिए प्रयासरत है, जीवन का ब्रह्म में लय हो जाना जीवन है, तो वहीं किसी भक्त तो कोई किसी खास स्त्री से विवाह रचाने के लिए... की दृष्टि में प्रभु का स्मरण करना जीवन का पर्याय होगा। लेकिन क्या इन्हें जीवन का लक्ष्य कहा जा सकता है?

इन्हें शायद जीवन के लक्ष्य कहना अधिक उचित न होगा क्योंकि ये वास्तव में व्यक्ति के लक्ष्य न होकर, उसकी तात्कालिक आवश्यकताएं, उसकी कामनाएं या उद्देश्य भर ही होते हैं और किसी एक कामना की पूर्ति को तो सम्पूर्ण जीवन का लक्ष्य नहीं कहा जा सकता है क्योंकि येन केन प्रकारेण व्यक्ति यदि एक कामना की पूर्ति कर भी ले तो क्या उससे जुड़ी चार अन्य बातें तुरंत ही व्यक्ति के सामने नहीं आ जातीं? या एक कामना के पूर्ण होते ही क्या मन में दूसरी कामनाएं नहीं आ जातीं?

सद्गुरुदेव ने एक अवसर पर प्रवचन में कहा है - जिस व्यक्ति को अपने भूतकाल के जीवन का स्मरण नहीं है, जिसे अपने भविष्यकाल का ज्ञान नहीं है, उसका जीवन काल की ठोकरें खाकर इधर से उधर यूँ लुढ़कता रहता है, ज्यों सड़क पर पड़ा कोई पत्थर जो व्यक्ति की ठोकरों से लुढ़कता रहता हो।

गुरु-वचन शाश्वत तो होते ही हैं साथ ही उनके एक से अधिक अर्थ भी होते हैं। पूज्यपाद गुरुदेव ने उपरोक्त वचन यद्यपि काल-ज्ञान से सम्बन्धित साधना के संदर्भ में कहे थे किन्तु इनसे क्या यह भी स्पष्ट नहीं होता कि जब तक व्यक्ति को अपने भूतकाल व भविष्य का ज्ञान नहीं है अर्थात् उसे यह पता ही नहीं है कि उसका जीवन किस परम्परा से आता हुआ किस ओर गतिशील होने के लिए पैदा हुआ है, वह किन अधूरे कार्यों, किन अधूरी साधनाओं को करने के लिए जन्मा है, तब तक वह अपने जीवन में कोई लक्ष्य निर्धारित करेगा भी तो कैसे?

तब तक तो वह केवल अपनी तात्कालिक समस्याओं के हल, तात्कालिक उद्देश्यों की पूर्ति को ही अपने जीवन का लक्ष्य मान कर चलता रहेगा और सदैव संतप्त रहेगा क्योंकि यदि जीवन है तो कामनाएं भी रहेंगी और समस्याएं भी।

कमरे में बैठ कर व्यक्ति पूरी दृश्यावली नहीं निहार सकता है, पूरे क्षितिज को देखने की कामना हो तो कमरे से निकल कर ऊँचाई पर, घर की छत पर जाना पड़ता है। कामनाओं और समस्याओं में लिपट कर पूरे जीवन का सौन्दर्य नहीं समझा जा सकता, उसके लिए इनसे कुछ परे होने की क्रिया करनी पड़ती है, उस व्यक्तित्व के चरणों में बैठने की क्रिया करनी पड़ती है जिसे शास्त्रों में सद्गुरुदेव कहा गया है।

...क्योंकि जीवन के प्रति सम्पूर्ण दृष्टि केवल सद्गुरुदेव के पास होती है और वे ही अपने शिष्य को ऐसी दृष्टि से युक्त करने में समर्थ होते हैं। जब तक शिष्य के पास दृष्टि नहीं शिष्य के जीवन में भौतिक पक्ष की उसकी विविध समस्याएं,

होंगी तब नहीं उसे किस लक्ष्य का बोध हो सकेगा?

इतिहास साक्षी है कि संसार में जो भी महान् पुरुष हुए हैं उन्होंने कहीं न कहीं से अपने जीवन में गुरु की दृष्टि-प्राप्ति की है और इनमें केवल भगवत्पाद आद्याशंकराचार्य, भगवान् कृष्ण, जैसे दुन पुरुष, श्री केशवराव हेडगेवार, वीर सावरकर जैसे ऋति के जगद्गुरु, एकलव्य जैसे शिष्य ही नहीं वरन् अनेक इतिहास-प्रसिद्ध, विश्व विजयी योद्धा भी हुए हैं। प्रतापी सम्राट् चंद्रगुरु जौर और उनके गुरु चाणक्य की कथाओं से कौन नहीं परिचित होगा जिनके संयुक्त प्रयासों से तत्कालीन सशस्त्र नद व्याप का समूल नाश हो गया। जिस चंद्रगुरु के काल को व्याप्तिवाले इतिहास का स्वर्णिम युग कहा जाता है, उसके नूल के द्वारा चंद्रगुरु के गुरु चाणक्य का ही मुख्य योगदान था।

विश्व विजयी सिक्कन्दर के विषय में तो यह स्पष्ट हो चुका है कि वह अन्त में विजय की लालसा को लेकर नहीं, अपितु किसी व्येष्य नूल से मिलने व उनके माध्यम से अपने जीवन का लक्ष्य समझने की कामना लेकर ही आया था।

इस विजयवाले दर्शनिक हुआ है नीत्ये, जिसने कौटिल्य के दर्शन पर ज्ञानित ज्ञाना दर्शन (Philosophy) निर्मित किया और उसमें उन्ने कहा कि जो वीर पुरुष होते हैं उन्हें बांसुरी के स्वर में नहीं, तत्त्वारों की ज्ञानज्ञनाहट में संगीत सुनाई देता है। उसी के दर्शन को आधार बना कर जर्मनी में सामने आया था एकोलक हिक्कर। एक बार इस तथ्य को विस्मृत कर दें कि उन्हें उनके कार्यों का औचित्य क्या था तब भी इस बात में तो कोई स्वेच्छा नहीं कि वह अद्वितीय योद्धा हुआ है और अपने देश के लिए वह समर्पित व्यक्तित्व था ही। उसने अपने देश के स्वामिनान को गौरवशाली स्थिति में पहुंचाने के लिए जो लक्ष्य निर्मित किया था, वह उसी दिशा में गतिशील हुआ, लेकिन उन्हका तरीका बिल्कुल गलत रावण जैसा था।

यहाँ इन बातों का उल्लेख करने का औचित्य मात्र इस बात को स्पष्ट करना है कि लक्ष्य अन्ततोगत्वा गुरु के माध्यम से निर्मित होने हैं और ज्ञान को भी गुरु ही कहा गया है।

बन्तुः गुरु की दृष्टि में न तो कोई बात विशेष महान् होती है और न ही अत्यधिक न्यून, और ऐसी समदर्शिता से युक्त गुरुदेव ही समझ सकते हैं कि कब उनके शिष्य को वास्तव में क्या आवश्यक है? गुरु की दृष्टि में यह तो सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता है कि उनका शिष्य आध्यात्मिक उन्नति को प्राप्त करे किन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं कि उसकी दृष्टि में कहीं से भी

कामनाएं न्यून होती हैं। ...और जो जीवन के इन दोनों यक्षों का सामंजस्य कर सकते हैं, वे ही शिष्य को उसके जीवन का लक्ष्य भी बता सकते हैं।

लक्ष्य भेदन सिद्धि दीक्षा

जीवन का लक्ष्य किसी रटी-रटाई परिभाषा में नहीं बांधा जा सकता है क्योंकि प्रत्येक शिष्य की अलग-अलग पृष्ठभूमि होती है और इसी कारणवश प्रत्येक शिष्य के लक्ष्य भी पृथक होते हैं।

यह बात तो प्रत्येक भारतीय जानता है कि ईश्वर में लीन हो जाना जीवन का परम लक्ष्य है किन्तु वह लक्ष्य कैसे प्राप्त होगा, उस पथ पर चलने के लिए ऊर्जा कहां से प्राप्त होगी - इसे केवल सद्गुरुदेव ही व्यक्त कर सकते हैं।

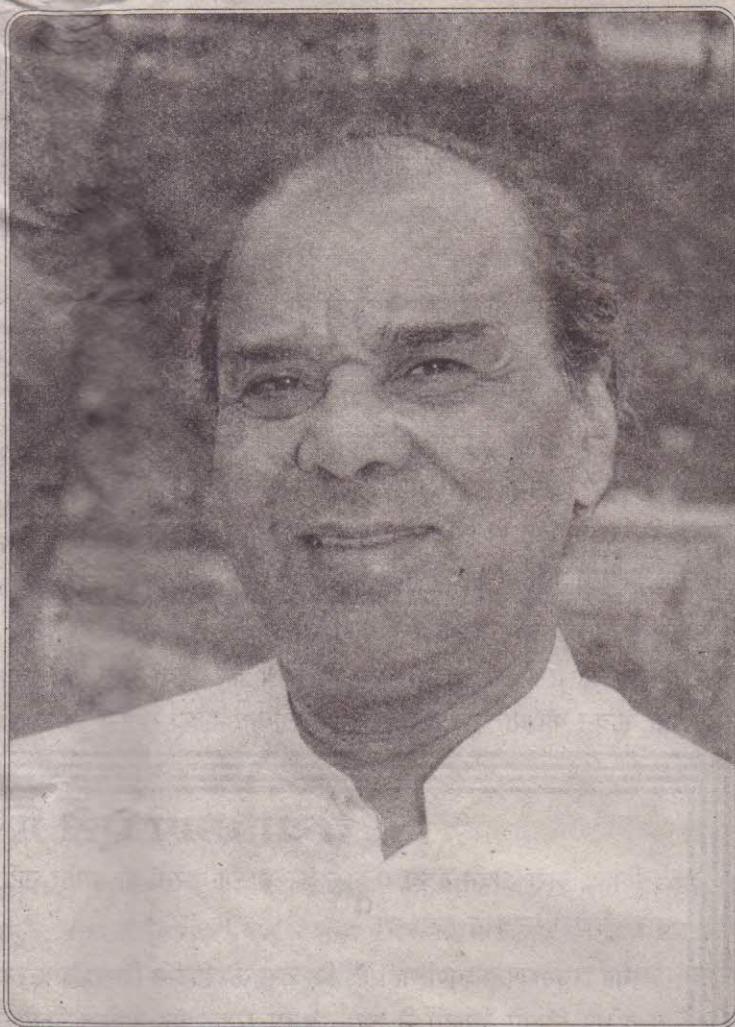
शिष्य के मानस में प्रतिक्षण सद्गुरुदेव अभिव्यक्त हो सके, इसे ही दीक्षात्मक उपाय के रूप में लक्ष्य भेदन सिद्धि दीक्षा की संज्ञा दी गयी है।

लक्ष्य भेदन सिद्धि दीक्षा अपने सूक्ष्म रूप में शिष्य को उसके पूर्व जन्मों से परिचित कराते हुए उसके समक्ष उसका भविष्य स्पष्ट कर देने की पूज्यपाद गुरुदेव की ओर से प्रारम्भ की गयी एक चेतना होती है।

शिष्य के जीवन का जो बाह्य स्वरूप है वह तो बना ही रहता है किन्तु जब शिष्य को प्रामाणिकता से इस संशय, बेचैनी या छटपटाहट नहीं रह जाती क्योंकि तब उसके समक्ष जीवन कोई रहस्य नहीं रह जाता। जहां कोई रहस्य नहीं रह जाता वहां किसी भी भय के उत्पन्न होने का कोई प्रश्न शेष नहीं रह जाता।

वास्तव में प्रत्येक व्यक्ति अपनी ऊर्जा अनुसार अपने लक्ष्यों को (चाहे वे भौतिक हों या आध्यात्मिक) पूर्ण रूपेण व प्राप्त करने की दिशा में सचेष्ट रहता है किन्तु काल या भविष्य के एक अज्ञात भय से घिरा रहने के कारण उसकी ऊर्जा का एक बहुत बड़ा भाग केवल संकल्प-विकल्प में ही निकल जाता है।

मैं इस कार्य को ऐसे कर लूं, मैं यदि ऐसे न करके ऐसे कर सैकड़ों संकल्प-विकल्प के विचारों से प्रत्येक व्यक्ति अपने



जीवन में घिरा होता है क्योंकि समाज में रहकर कोई भी डंडों का प्रारम्भ होता है।

लक्ष्य भेदन सिद्धि दीक्षा ऐसी ही स्थिति में शिष्य को भयमुक्त करके, उसमें स्वयं में निहित शक्तियों से परिचित कराकर एक आत्मविश्वास देती है तथा जीवन में आत्म विश्वास का उदय होना ही गति का आधार बनता है।

लक्ष्य भेदन सिद्धि दीक्षा का तात्पर्य यह नहीं है कि शिष्य अपनी किसी मनोकामना को लेकर गुरुदेव के समक्ष जाए और कहे कि वह इस दीक्षा के माध्यम से अपने जीवन के इस लक्ष्य को प्राप्त करना चाहता है। इस दीक्षा के माध्यम से लक्ष्य का निर्धारण तो गुरुदेव करते हैं, न कि शिष्य।

लक्ष्य भेदन सिद्धि दीक्षा इस बात का भी दावा नहीं करती कि शिष्य का घाटे में चल रहा व्यवसाय एकदम से दिन दूना रात चौगुना हो, बढ़ने लगेगा या दिन-रात कलह करने वाली पत्नी रातों-रात आजाकारी बन जाएगी।

यह दीक्षा इस बात का आभास अवश्य देती है कि शिष्य के जीवन में ऊर्जा का एक ऐसा अजेय प्रवाह अवश्य प्रारम्भ हो जाएगा जिससे वह अपने भौतिक जीवन की समस्याओं से मुक्ति पाता हुआ जीवन के वास्तविक लक्ष्य की ओर बढ़ सकेगा।

भेदन शब्द का एक गूढ़ संकेत है और वह यह कि लक्ष्य की प्राप्ति में जो कुछ भी बाधक बन रहा हो - चाहे वह शिष्य की शारीरिक दुर्बलता हो अथवा मानसिक दुर्बलता, आर्थिक अभाव हों अथवा पारिवारिक कलेश या कोई अन्य बाधा, किसी भी ऐसी बाधा का अस्तित्व नहीं रहने देना है। जिस प्रकार से तीर अपने लक्ष्य को बेघ कर रख देता है उसी प्रकार से समस्याओं से सदैव के लिए मुक्ति प्राप्त कर लेना है क्योंकि इसी में जीवन की श्रेष्ठता है।

इस जीवन को इतने हल्के ढंग से नहीं लिया जा सकता कि इसे विविध बाधाओं से लड़ने में यू ही व्यर्थ कर दिया जाए और जो जीवन का वास्तविक उद्देश्य, वास्तविक लक्ष्य है उस

तक पहुँचने में झेंक वर्ष, व्यतीत कर दिए जाएं।

जो जीवन में शिव संकल्पों से युक्त हो एवं अपने जीवन में लक्ष्य निर्मित करते हुए उसे प्राप्त कर लेने की दिशा में गतिशील हो - ऐसे शिष्टों-साधकों के लिए पूज्यपाद गुरुदेव की ओर से ऐसी दीक्षा का सुलभ होना वास्तव में गुरुदेव के किसी वरदान से कम नहीं है।

अन्त में एक बात कहना शायद अप्रासंगिक न होगा कि जीवन में नुक के आनन्द का वास्तविक अर्थ अध्यात्मिक अर्थात् ज्ञान्य ज्ञानिक होता है।

यह नुक की ज्ञान्यतम कृपा होती है कि वे अपने शिष्य के भौतिक जीवन में जा रही बाधाओं को इस कारण से दूर करने के लिए (ज्ञानी अहेतु की कृपा के वशीभूत होकर) तत्पर हो जाने हैं जिससे शिष्य की आध्यात्मिक गति बढ़ित न हो सके। इसके लिए गुरु को विवश नहीं किया जा सकता है क्यन्तु उनसे विनम्र होकर प्रार्थना करने की आवश्यकता होती है।

क्या आप ऐसे शिष्य हैं ?

शिष्य द्वारा अपने हृदय में गुरु को धारण करना ही पर्याप्त नहीं है, ज्ञानित यह तो प्रारम्भ मात्र है, जैसा कि एक बार पूज्य गुरुदेव ने कहा था -

‘यह उतना महत्वपूर्ण नहीं है, कि गुरु को कितने शिष्य याद करते हैं? वह भी उतना महत्वपूर्ण नहीं है, कि ‘गुरु’ शब्द को कितने शिष्यों ने अपने हृदय-पटल पर अंकित किया है? वह भी उतना महत्वपूर्ण नहीं है, कि कितने शिष्य गुरु सेवा करने की कामना अपने दिल में रखते हैं? यह भी ज्ञाना महत्वपूर्ण नहीं है, कि कितने शिष्य गुरु की प्रसन्नता हेतु सचेष्ट हैं?’

- ‘अपितु अत्यधिक महत्पूर्ण यह है, कि गुरु कितने शिष्यों को याद करता है’
- ‘अपितु अत्यधिक महत्वपूर्ण यह है, कि गुरु के होठों पर कितने शिष्यों का नाम आता है।’
- ‘अपितु अत्यधिक महत्वपूर्ण यह है, कि कितने शिष्यों के नाम नुक के हृदय पटल पर खुदे हुए हैं।’
- ‘अपितु अत्यधिक महत्वपूर्ण यह है, कि गुरु ने किसी शिष्य की सेवा स्वीकार की है।’
- ‘अपितु अत्यधिक महत्वपूर्ण यह है, कि गुरु किस शिष्य पर प्रसन्न हुआ है।’

और गुरु के होठों पर शिष्य का नाम उच्चरित हो, गुरु के हृदय पटल पर शिष्य का नाम अंकित हो, गुरु सेवा का अवसर प्राप्त हो तथा शिष्य के कार्यों से गुरु प्रसन्न हो, वह शिष्य-जीवन का परम सौभाग्य है तथा प्रत्येक शिष्य की यही प्राथमिक इच्छा होती है। जिस शिष्य को ऐसा दुर्लभ सौभाग्य प्राप्त होता है, वह देव तुल्य हो जाता है, उसके जीवन से सभी पाप, दुःख, पीड़ा, समस्याएं आदि दूर हो जाती हैं, अणिमादि सिद्धियां उसके सामने नृत्य करती हैं, उसका व्यक्तित्व करोड़ों सूर्य से भी ज्यादा तेजस्वी हो जाता है। गुरु-सेवा, कोई आवश्यक नहीं है, कि शारीरिक रूप से गुरु गृह में रहकर ही सम्पन्न की जाय, ज्ञानित महत्वपूर्ण गुरु-सेवा यह है, कि शिष्य कितना अधिक गुरु द्वारा प्राप्त ज्ञान से लोगों को लाभान्वित करता है तथा कितने अधिक लोगों को गुरु से जोड़ने का कार्य करता है, निःस्वार्थ, निष्कपट भाव से; लेकिन दोनों ही सेवाएँ निःस्वार्थ भाव से होनी चाहिए।

बल, बुद्धि, शौर्य, निडरता प्राप्ति हेतु
भूतप्रेत, निर्बलता, भय अंतिष्ठि निवारण हेतु

हनुमान सिद्धि यंत्र



यह सत्य है, कि जीवन सीधा-सादा नहीं है, जीवन में तो सैकड़ों परेशानियां हैं, संकट हैं, सैकड़ों अड़चने हैं, पग-पग पर शत्रु हम पर वार करने के लिए तैयार हैं; वे जो हमें ऊंचा उठा देखकर पीठ पीछे से सैकड़ों प्रकार के घड़्यंत्र तैयार कर लेते हैं और हमारा सारा जीवन विषाद, तनाव, बाधाओं, अड़चनों और परेशानियों से जूझते हुए व्यतीत होने लगता है... और हम जीवन में जो कुछ करना चाहते हैं, वह नहीं कर पाते, और वह यदि नहीं कर पाते तो जीवन एक साधारण जीवन बन करके रह जाता है।

फिर किस प्रकार इस जीवन में तेजस्विता, उत्साह, प्रफुल्लता और जोश आये? कौन सा ऐसा माध्यम है, जिसके माध्यम से हम दिखा सकें कि एक सामान्य परिवार में उत्पन्न होकर भी बहुत कुछ कर सकते हैं - यह बहुत कुछ कर देने की क्षमता 'हनुमान सिद्धि' के माध्यम से संभव है।

साधक मंगलवार को लाल रंग के आसन पर 'हनुमान सिद्धि यंत्र' स्थापित करें एवं स्वयं भी लाल रंग के वस्त्र धारण कर लाल रंग के ही आसन पर दक्षिण की ओर मुङ्ह करके बैठें। सामने तेल का दीपक जलायें एवं गुड़ का भोग (धी में सान कर) लगायें तथा मूँग की सिद्ध माला से निम्न मंत्र का 11 माला जप करें।

// ॐ नमो हनुमन्ताय आवेश्य आवेश्य स्वाहा //

इस प्रकार नित्य प्रति रात्रि में ही (दस बजे के बाद) 11 दिन तक करें। प्रतिदिन जो भोग लगाएं रात में मूर्ति के सामने ही रहने दें एवं दूसरे प्रातः यह भोग हनुमान के भक्तों में वितरित कर दें तथा स्वयं भी ग्रहण करें। यह अनुष्ठान 11 दिनों का है। बारहवें दिन यंत्र को किसी हनुमान मंदिर में दक्षिणा सहित अर्पित कर दें। साधना काल में साधक पूर्ण ब्रह्मचर्य धर्म का पालन करें।

जीवन का सर्वश्रेष्ठदान - 'ज्ञानदान'

ज्ञान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मंदिरों में, अस्पतालों में, समारोहों में, मंगल कार्यों में, अपने मित्रों को, धार्मिक परिवारों को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस श्रेष्ठ ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर सकते हैं, जो अभी तक इससे वंचित हैं। इस क्रिया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को साधनात्मक ज्ञान की शीतलता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

क्या करें आप?

आप केवल एक पत्र (संलग्न पोस्टकार्ड क्रमांक 3) भेज दें, कि "मैं यह अद्वितीय उपहार प्राप्त करना चाहता हूं एवं 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूं। आप निःशुल्क मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित 'हनुमान सिद्धि यंत्र' 390/- (20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाओं का शुल्क 300/- + डाक व्यय 90/-) को वी. पी. पी. से भिजवा दें, वी. पी. पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धन राशि देकर छुड़ा लूँगा। वी. पी. पी. छूटने के बाद मुझे 20 पत्रिकाएं रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दें", आपका पत्र आने पर हम 300/- + डाक व्यय 90/- = 390/- की वी. पी. पी. से मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित 'हनुमान सिद्धि यंत्र' भिजवा देंगे, जिससे कि आपको यह दुर्लभ उपहार सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके।

सम्पर्क :- अपना पत्र जोधपुर के पते पर भेजें।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342031, (राजस्थान)

फोन - 0291 - 2432209, 2433623 टेलीफैक्स - 0291 - 2432010

गुरुकृष्णाम् जोधपुर

जिस भूमि पर सैकड़ों प्रयोग और असंख्य दीक्षाएं
सम्पन्न हो चुकी हैं, उस सिद्ध चैतन्य दिव्य भूमि

पर ये विष्य साधनात्मक प्रयोग

सभस्त साधकों एवं शिष्यों
के लिए यह योजना प्रारंभ हुई
है। इसके अन्तर्गत विशेष
दिवसों पर जोधपुर 'सिद्धाश्रम'
में पूज्य गुरुदेव के गिरेशन में
ये साधनाएं पूर्ण विधि-विधान
के साथ सम्पन्न कराई जाती हैं,
जो कि उस दिन शाम 6 से 8
बजे के बीच सम्पन्न होती हैं।
यदि श्रद्धा व विश्वास हो, तो
उसी दिन से साधनाओं में सिद्धि
का अनुभव भी होने लगता है।

शुक्रवार, 25-07-08

किसी भी व्यक्ति का चेहरा उसके व्यक्तिगत का दर्पण होता है। यदि आपके मुख पर
तेजस्विता है, आकर्षण है, तो स्वतः सम्मने वाला व्यक्ति आपसे प्रभावित होगा ही। शरीर
यदि दुर्बल भी हो, परंतु यदि मुख पर जाता है, सौन्दर्य है तो कोई भी आपसे बात करने
को लालायित होता है। सौन्दर्योन्तन्ना प्रयोग, जहाँ स्त्रियों के सौन्दर्य में गजब का निखार
आने लगता है, काया कंचन हो जाती है, वहाँ पुरुषों के मुखमण्डल पर तेजस्विता और
रौब आ जाता है। बड़े-बड़े नेताजों, जनसेनारों, सुन्दरियों में यह गुण प्राकृतिक रूप से
व्याप होता है। यदि आप व्यापारी या कर्मचारी हैं और सामने वाले से अपनी बात मनवाना
चाहते हैं, या आप इण्टरव्यू में या जनसत्त्व के सम्मने घबराते हैं, तो इस प्रयोग के माध्यम
से स्वयं अपने चेहरे पर आकर्षण और अद्देहन ला सकते हैं। ऐसे व्यक्ति को हर किसी
से अनुकूलता ही प्राप्त होती है। इसके साथ ही आपके व्यक्तित्व में निखार आता है, और
सौन्दर्य प्राप्त होता है।

शनिवार, 26-07-08

सूर्य साधना प्रयोग

इस समाज में केवल उन्हीं व्यक्तियों का मान-सम्मान होता है, जो ऊर्जा से युक्त होते हैं और जो अपने कार्यों द्वारा दूसरों
को प्रकाशवान बनाते हैं। जब समाज में व्यक्ति को उचित स्थान प्राप्त नहीं होता है तो वह स्वयं को समाज के अलग
समझने लगता है। सूर्य साधना और गायत्री साधना में कोई
अन्तर नहीं है, क्योंकि गायत्री मंत्र भी सूर्य की तेजस्विता को
अपने भीतर धारण करने की साधना है। इसलिये सूर्य-साधक
नियमित रूप से यज्ञ भी सम्पन्न करते हैं।

सूर्य साधना प्रयोग एक उच्चकोटि का प्रयोग है, जिसके
पूर्ण करने पर व्यक्ति के तेज और आकर्षण में वृद्धि होती है,
व्यक्ति के आत्मबल में अभिवृद्धि होती है। जिसके कारण वह
अपने कार्यक्षेत्र में ऊर्जायुक्त होकर कार्य करता है एवं उसके
बल, बुद्धि, साहस में वृद्धि होती है।

रविवार, 27-07-08

काल भैरव प्रयोग

यदि व्यापार नहीं चल रहा हो, या दुश्मन ने आपका
व्यापार कांप दिया हो, दुकान पर कोई तांत्रिक प्रयोग
करका दिया हो, जिससे बिक्री कम हो गयी हो, फैक्टरी
में हड्डाल या बाधाएं बराबर बनी रहती हों। व्यापारिक
जांच नहीं मिल रहे हों। स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता हो।
कोई कार्य प्रयत्न करके भी सफल नहीं हो रहे हों। घर में
सुन्दर जबड़ हो रहा हो या स्लपयों पैसों की बरकत नहीं
हो रही हो, राज्य बाधा या राज्य संकट की आशंका हो
तो, इन सभी प्रकार की समस्याओं को काल भैरव
प्रयोग के माध्यम से समाप्त किया जा सकता है। काल
भैरव सिद्ध होने पर न केवल अपने साधक की रक्षा
करते हैं बल्कि उसका अहित चाहने वाले व्यक्तियों को
दिनभ्रमित भी कर देते हैं।

इन तीनों दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे

1. आप अपने किन्हीं दो मित्रों अथवा स्वजनों को (जो पत्रिका के सदस्य नहीं हैं) मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर जोधपुर, गुरुधाम में सम्पन्न होने वाले किसी एक प्रयोग में भाग ले सकते हैं। पत्रिका की एक सदस्यता का वार्षिक शुल्क रुपये 240/- है, जबकि आपको दो सदस्यों का शुल्क मात्र रुपये 460/- ही जमा करवाना है। प्रयोग से सम्बन्धित विशेष मंत्रसिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठित सामग्री (यंत्र गुटिका, आदि) आपको निःशुल्क प्रदान की जाएगी।

2. यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं तथा अपने किसी एक मित्र के लिए पत्रिका की वार्षिक सदस्यता प्राप्त कर उपरोक्त किसी साधना में भाग ले सकते हैं।

3. पत्रिका-सदस्य बनाकर आप किसी एक परिवार को ऋषि-परम्परा की इस पावन साधनात्मक ज्ञान-धारा से जोड़कर एक पुनीत एवं पुण्यदायी कार्य करते हैं। यदि आपके प्रयास से एक परिवार में अथवा कुछ प्राणियों में ईश्वरीय चिन्तन, साधनात्मक चिंतन आ पाता है तो यह आपके जीवन की सफलता का ही प्रतीक है। उपरोक्त प्रयोग तो निःशुल्क हैं और गुरु-कृपा द्वारा ही वरदान स्वरूप साधक को प्राप्त होते हैं। प्रयोगों की न्यौछावं-राशि को अर्थ के तराजू में नहीं तोल सकते।

गुरुधाम में दीक्षा व साधना का महत्व

शास्त्रों में वर्णन आता है कि मंदिर में मंत्र-जप किया जाए तो अति उत्तम होता है, उससे भी अधिक पुण्यदायी होता है; यदि नदी के किनारे करें, उससे भी अधिक समुद्र टट, और उससे भी अधिक पर्वत में करें तो, और पर्वत में भी यदि हिमालय में किया जाए तो और भी कई गुना श्रेष्ठ होता है। इन सबसे भी श्रेष्ठ होता है, यदि साधक गुरु चरणों में बैठकर साधना सम्पन्न करें; और यदि गुरुदेव अपने आश्रम; अर्थात् गुरुधाम में ही यह साधना प्रदान करें तो इससे बड़ा सौभाग्य तो और कुछ होता ही नहीं।

कुछ ऐसे स्थान होते हैं, जहां दिव्य शक्तियों का वास सदैव रहता ही है। जो सद्गुरु होते हैं, वे सूक्ष्म रूप से अथवा सशरीर प्रतिपल अपने धाम में अवस्थित रहते हुए प्रत्येक गतिविधि का सूक्ष्म रूप से संचालन करते ही रहते हैं। इसलिए यदि शिष्य गुरुधाम में पहुंच कर गुरु से साधना, मंत्र एवं दीक्षा प्राप्त करता है और गुरु चरणों का स्पर्श कर उनकी आज्ञा से साधना प्रारम्भ करता है तो उसके सौभाग्य से देवेगण भी ईर्ष्या करते हैं।

तीर्थ-स्थल पुण्यप्रद हैं पर शिष्य अथवा साधक के लिए सभी तीर्थों से भी पावन तीर्थ गुरुधाम होता है। जिस धाम में सद्गुरुदेव का निवास स्थान रहा हो, ऐसे दिव्य स्थान पर गुरु-चरणों में उपस्थित होकर गुरु-मुख से मंत्र प्राप्त करने की इच्छा ही साधक में तब उत्पन्न होती है जब उसके सत्कर्म जाग्रत होते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए साधकों के लाभार्थ गुरुदेव की व्यस्तता के बावजूद भी जोधपुर गुरुधाम में तीन दिवसों में तीन साधनात्मक प्रयोगों की श्रृंखला निर्धारित की गई है।

योजना के बाबत इन 3 दिनों के लिये 25-26-27 जलाई

किन्हीं पांच व्यक्तियों को वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क $240 \times 5 = \text{Rs.} 1200/-$ जमा करा के या उपरोक्त राशि का बैंक डाप्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर सदस्यों के डाक पते लिखवाकर उपहार स्वरूप ये दीक्षा आप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

यदि दीक्षा फोटो द्वारा प्राप्त करना चाहें तो निर्धारित तिथियों के पूर्व ही अपना फोटो एवं पांच सदस्यों की सदस्यता शुल्क की राशि का ड्राप्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर जोधपुर कार्यालय के पते पर भेजें। आपका फोटो, पांच सदस्यों के नाम, पते एवं ड्राप्ट हमें उपरोक्त तिथि से पूर्व ही प्राप्त हो जाने चाहिए। पत्र विलम्ब से मिलने पर दीक्षा संभव न हो सकेगी। यदि राशि मनीआर्डर से भेजना चाहें तो फोटो एवं मनीआर्डर जोधपुर कार्यालय भेजें।

* दीक्षा आज के युग में एक प्रामाणिक उपाय है। सफलता की ऊँचाईयों को प्राप्त कर लेने का, जीवन के अभाव को, अध्येत्यन को दूर कर देने का, जीवन में अनुलनीय बल, साहस, पौरुष एवं शौर्य प्राप्त कर लेने का, साधना में सिद्धि प्राप्त कर लेने का ...।

* गुरु-प्रदन शक्तिपाल द्वारा शिष्य जिस कार्य हेतु वह दीक्षा प्राप्त करता है, उसमें निमुणता प्राप्त कर लेता है, क्योंकि वह सफलता और श्रेष्ठता प्राप्त करने का एक लंघु उपाय है ...

* दीक्षा में भाग लेने वाले साधकों को जल से अमृत-अभिषेक करने के उपरान्त विशेष शक्तिपाल प्रदान किया जाएगा। यह दीक्षा द्वन्द्वों में संयोग और प्रदान की जाएगी।

शक्तिपात युक्त दीक्षा

त्रिपुर सुन्दरी दीक्षा

त्रिपुर सुन्दरी दीक्षा प्राप्त होने के आद्याशक्ति त्रिपुरा शक्ति शक्तीव एकी तीन प्रमुख नाड़ियां - इड़ा, सुषुम्ना और पिंगला जो मन छुड़ि और वित एक नियंत्रित अवृत्ती हैं, यह शक्ति जाग्रत होती है। भ्रू भ्रुवः क्षवः ये तीनों इक्षी महाशक्ति के उद्भव हुए हैं, इसलिए इक्षे त्रिपुर सुन्दरी अहा जाता है। इक्ष दीक्षा के माध्यम के जीवन में चारों पुक्षार्थी की प्राप्ति तो होती ही है, काथ ही काथ आद्यात्मिक जीवन में भी अम्पूर्णता प्राप्त होती है, और भी क्षाधना हो, चाहे आद्यका क्षाधना हो, देवी क्षाधना हो, शैव क्षाधना हो, वैष्णव क्षाधना हो, यदि उक्षमें सफलता नहीं मिल कही हो, तो उक्षों पूर्णता के क्षाथ बिष्ट अवृत्त अवृत्त एवं यह महाविद्या क्षमर्थ है। यदि इक्ष दीक्षा को पहले प्राप्त कर लिया जाये तो क्षाधना में शीघ्र सफलता मिलती है।

Tripur Bheiravi

Free From FEAR

Any and every circumstance in life that creates apprehension is a fear and in the long journey of life such circumstances keep appearing every moment. The form of these problems might change, but not their onslaught which continues unabated till the very last moments of life. What more, physical fitness or money power does not assure a life free of fears.

Sudden mishaps in life, accidents, kidnappings, physical attacks, robbery leave physical or money power futile. And with the ever escalating crime rate, today the feeling of insecurity goes on becoming stronger in spite of safeguard measures like personal bodyguards, watch dogs, life insurance etc.

Such measures in fact bring out one's fear more in the open and they cannot be the means of getting rid of one's apprehensions and fears. For really banishing them there is but one sure way and that is attaining care-freeness of a Yogi. And once this happens, once the mind is free from tensions and worries, the hidden talents start to blossom making one more creative, artistic and concentrated in one's work.

But such an achievement is impossible through the commonly known means. One might raise a fortress of brawn and wealth around oneself. Yet it won't really keep worries at bay. For true fearlessness and contentedness one should be ever drifting in a sea of serenity. Only then can an inner confidence emerge. But how?

The Shastras unanimously point towards one means - divine power - with which one can form a link only by performing some Sadhana. And such a Sadhana can be had by supplicating to the Guru to gift some Sadhana related to the various supreme powers.

One of such amazing rituals is Tripur Bheiravi Sadhana whose foremost boon is instilling total care freeness into the Sadhak so that he could face all challenges of life with a relaxed mind, with calmness and composure. The powerful Mantra of the ritual neutralises all adverse forces in one's present life and continues to do so even in the future.

The fact that Tripur Bheiravi is one of the ten foremost forms of Goddess Shakti known as the ten Mahavidyas, it self is an indication of the tremendous power packed into the ritual. That Sadhanas of this Goddess are not so popular could be because her propitiation leads to a release of

explosive power in the Sadhak's mind, body and soul. But as is generally believed this power can never harm the Sadhak, more so when he or she has a Sadguru of the high spiritual stature of Swami Nikhileshwaranand

It is more common for Sadhaks to opt for Baglamukhi Sadhana, another of the Mahavidyas, when he faces adversities in life. But there is a subtle difference between these two powers, for Baglamukhi is a vanquisher of all one's foes, Tripur Bheiravi takes care of all circumstances which could cause fear, tensions, worries, accidents and disputes.

The Sadhana works wonders in cases where one feels that some evil eye has ruined one's business or happy family life. Some Sadhaks fear that the Goddess has a fearsome form. But this is only for one's enemies. For the Sadhak she appears in a captivating motherly form.

Saturday is the best day for this Sadhana. On this day after 10 pm have a bath and get into red robes and sit facing South on a woollen mat. On a wooden seat spread a red cloth and on it place a picture of the Goddess (देवी का चित्र). On nose petals place the **Tripur Bheiravi Yantra** (त्रिपुर भैरवी यन्त्र). On the right hand side of the Yantra make a mound of black sesame seeds and on it place a **Maithunopen Rudraksh** (मधुसूपण रुद्राक्ष). For total success in the Sadhana first pray to Lord Bheirav, the divine consort of the Goddess. For this offer red flowers on the Rudraksh and chant thus.

*Dhyayenneelaadri-Kaantim Shashishakal Dharam
Mundinaalam Mahesham. Digvaastram Pinglaaksham
Danrumath Srinnim Khadag Shoolaamyaani.
Naagam Ghantaam Kapalam Kar Sarsiru
Heirvikratam Bheem Danshtram. Sarpaakalpam
Trinetrum Mannimay Vilasat Kinkinni Noopuraadyam*

Next light a mustard oil lamp and offer a fruit to the Goddess. Put a mark of vermillion on the Yantra and then chant 11 rounds of this Mantra with a white Hakeek rosary (चांदेर हकीक माला).

Hasein Has Kareem Hasein

॥हसैं हसैं करीं हसैं ॥

Place the picture of the Goddess permanently in your worship place. Tie the rest of the articles in the red cloth and drop it in a river or pond.

Sadhana Articles: 500/-

A total life!

Any Thursday

Annapoorna Sadhana

The most easy of all Sadhanas are the Sadhanas of Goddess Lakshmi, the deity who blesses one with wealth and prosperity. And there is a good reason for this. Not only the common man but even the saints and the ascetics need wealth for their altruistic ventures. For the householder in fact Lakshmi Sadhana is the most important ritual.

The most benevolent form of Lakshmi is Shree Sundari or Annapoorna. In this Avatara the Goddess banishes all the problems from the lives of her devotees and blesses them with everlasting prosperity and comforts.

Shree Sundari or Annapoorna is none other than Goddess Parvati, the divine consort of Lord Shiva. She is a Goddess who not only helps one to attain pleasures and riches but also Moksha or spiritual success. The ancient texts in fact state that not just one but 108 boons can be had from the Sadhana of Goddess Mother Annapoorna.

It is impossible to list all but the most important boons that can be had are a disease free healthy body, a house, sons and daughters, a good spouse, enough wealth, mental peace and presence of the divine gods in one's house.

This Sadhana is not just powerful rather it is also quick acting. If one obtains the blessings of one's Guru and follows the rules prescribed for the Sadhana then there is no chance that the ritual could fail.

This amazing Sadhana can be started on any **Thursday** night after 9 pm and it has to go on for 14 days at the same place. Have a bath and wear pure yellow clothes and sit facing the North on a yellow mat.

Cover a wooden seat with a red cloth and on it make a mound of unbroken rice grains. On the mound place an **Annapoorna Shankh** (special Mantra energised

conch shell).

Light two lamps one filled with mustard oil and the other with ghee. First of all chant **Om Gam Ganpataye Namah** eleven times and pray to Lord Ganesh for success. Then offer prayers to the Guru and chant one round of Guru Mantra.

Next make eight marks with saffron on the Annapoorna Shankh representing the eight forms of Lakshmi. Each time chant one of the following Mantras.

Om Dhan Lakshmyei Namah, Om Dhaanya Lakshmyei Namah, Om Dharaa Lakshmyei Namah, Om Keerti Lakshmyei Namah, Om Aayu Lakshmyei Namah, Om Yash Lakshmyei Namah, Om Putra Lakshmyei Namah, Om Vaahan Lakshmyei Namah.

Offer rice grains, flowers and vermillion on the Shankh and then chant thus.

Om Mahaalakshmyei Namah, Om Shivaayei Namah, Om Annapoornaayei Namah

Next with a **Hakeek or rock crystal (sfatik) rosary** chant 11 rounds of the following Mantra.

Om Ayeim Hreem Shreem Annapoornnaay Shivaayei Namah

Do this daily for 14 days. After the completion of the Sadhana drop rosary in a river or pond. Tie the Shankh in a red cloth and place it in your safe or the place where you keep your valuables. Offer food and gifts to eight small girls.

Without doubt this Sadhana manifests its wonderful results very soon provided that it is tried with full faith and devotion.

Sadhana Articles – 360/-

29 जून 2008

अष्ट महालक्ष्मी साधना शिविर, कटूआ
शिविर: कटूआ, जिला- पठानकोट (जम्मू एवं कश्मीर)
भायोजक: कटुआ: सतपाल शर्मा - 094191-50472 ○परवीन
शर्मा - 094191-50536 ○लब्बा चौधरी - 094691-45095 ○जय
सोंकार सिंह - 094192-07377 ○चरणजीत सिंह - 01922-
36046 ○नरेन्द्र शर्मा - 099063-86912 ○देवेन्द्र सिंह - 094196-
99827 ○राजबाग: शाम लाल शर्मा ○चण्डीगढ़: के.एल.शर्मा.
094173-11701 ○जम्मू: मन्जुल राजयादा - 094192-13141 ○कुर्दा
साद दत्ता - 094191-97409 ○पी.एस. चौधरी - 094191-
4188 ○अश्विनी शर्मा - 094191-97436 ○विजय खनूरिया -
094191-36734 ○आर.के.पंडिता- 0191-2591709 ○बी.एस.राठौर
094191-03665 ○सुरेश शर्मा - 094198-50002 ○ओम प्रकाश -
191-262576 ○कृष्ण लाल शर्मा - 099063-65926 ○नीलम
मन्माल ○बी.एम. शर्मा ○विमल शर्मा ○ज्ञान चंद - 099063-
5926 ○नरेन्द्र सिंह ○एस.के.नाग्याल - 094191-
8030 ○पठानकोट: राजीव शर्मा - 094175-45867/099146-
6659 ○अविनाश शर्मा - 094637-17018 ○पुष्कर महाजन -
93175-10704 ○अजय नैयर - 094173-76514 ○प्रवीन अरोड़ा -
94174-21288 ○विपन महाजन ○राजेश भरत ○साम्बा:
पशोक कुमार ○राजेन्द्र कुमार (पंडित) ○नूरपूर: कमलेश
कुमारी ○नगरोटा सूरियां: ओम प्रकाश ○कुशल सिंह
खनूलेरिया ○पालमपुर: आर.एस. मिन्हास ○गुरुदासपुर: सुनीता
शर्मा - 098764-23969 ○अमृतसर: रवि शर्मा - 098884-
0561 ○बटाला: धर्मवीर - 098890-02045 ○टांडा: बापू जी -
98159-86613 ○बलविन्द्र सिंह - 01883-276888 ○जस्सूर:
गोताम्बर दत्त - 098166-81884 ○जालन्थर: सुरेन्द्र शर्मा -
94170-20854 ○विजय शर्मा - 094170-60121 ○घुमारवी: सोहन
लाल शर्मा ○होशियारपुर: सुभाष चन्द्र बजाज - 01882-221769 ○

6 जुलाई 2008
शिव सायुज्य महामृत्युंजय साधना
शिविर, ममई

शिविर: ठाकुर हॉल, ठाकुर सिनेमा के पीछे, ठाकुर विलेज, कांदिवली (पूर्व), मुम्बई (महाराष्ट्र)
आयोजक: मुम्बई: दिलीप शर्मा - 098678-38683 ○ तुलसी महतो - 099671-63865 ○ जय श्री बेन ○ मानवेन्द्र एवं पियुष बने - 093217-88314 ○ देवेन्द्र पंचाल एवं अलका पंचाल ○ नागसेन - 098197-49566 ○ अजय - 099204-05717 ○ योगेश मिश्रा - 098696-

38717 ○ बुद्धिमत्त पाण्डेय - 098190-00414 ○ राहुल पाण्डेय -
 098925-56363 ○ ज्ञानोक सोनी - 093226-09995 ○ पुष्पा पाण्डेय
 ○ राकेश तिवारी - 098203-44819 ○ बसंत पुरबिया ○ अमरजीत
 - 099676-73807 ○ संतनाल पाल - 092210-70322 ○ मनीर -
 092246-28895 ○ सुहासिनी ○ द्विवेदी जी - 098211-81782 ○ कुंजू
 बेन ○ उमीदवाल सिंह - 099200-84165 ○ अनिल कुंभारे - 098199-
 27898 ○ जगन्नाथ भट्टरा - 098202-77411 ○ अशोक - 098692-
 34397 ○ ज्ञानोक मास्टर ○ रत्नाकर ○ दशरथ ○ धनाजी
 ○ कैलाजा एवं मीना कब्रे - 092241-07898 ○ गुरुप्रीत ○ हर्ष
 ○ जमदंगा चतुर्भुज ○ कमला बेन ○ श्री लोबी ○ नटुभाई - 093200-
 90040 ○ माहूक जी - 094233-69984 ○ राज पोखरे ○ सतीश
 मिश्रा ○ सतीश ○ श्रीलेश - 099875-10263 ○ सुशीला बेन
 ○ श्रीनम - 093226-01979 ○ विलास ○ विश्वकर्मा ○
 ♦♦ ♦♦ ♦♦ ♦♦ ♦♦ ♦♦ ♦♦ ♦♦ ♦♦ ♦♦ ♦♦ ♦♦ ♦♦ ♦♦ ♦♦ ♦♦ ♦♦ ♦♦ ♦♦

16-17-18 जुलाई 2008

गुरु पूर्णिमा महोत्सव एवं साधिना शिविर, ॐकारेश्वर

स्लिपिस्ट अंकलरेफ्टर (टीर्थ क्षेत्र), जिला - स्वाणदवा (म.प.)
आपोकाळ: मुख्य आयोजन मण्डल : पूर्णश चौबे - 094250-
90260 ० कुलदीप सिंह - 099260-18445 ० सुधीर कुमार वाधेला
- 094254-15363 ० विष्णु पाटीदार - 098262-31345 ० यतिन्द्र
सर्कार - 094250-59293 ० विजय सिंह पंवार - 094251-02123
० भानुन्द चाटोडार - 094250-74801 ० संतोष पठारे - 072724-
00915 ० मनुकुन्द पटेल - 094250-92456 ० मनोहरसिंह वर्मा -
094250-33343 ० सरदार सिंह ठाकुर - 093001-18019 ० अशोक
प्रजापति - 094250-74794 ० महावीर मण्डलोई - 098262-13639
० महुमाई चन्द्राया - 094259-42649 ० ओमप्रकाश सोनी - 098937-
56651 ० सुरेश चन्द्र पंवार - 093937-23262 ० इन्दौर :
एम.के.सोनी - 094250-81006 ० शिव वर्ण - 093032-04689
० ज्ञानेन्द्र पूर्णेहित - 098260-25081 ० गणेश मोदिया - 098260-
31845 ० जनदीप बैरामी - 099263-95578 ० गीपाल वशिष्ठ -
098270-09021 ० इंद्रकर देवडा - 092294-41938 ० भास्कर बागडे
- 099070-49710 ० जी.पी.परसाई - 094254-37814 ० कुंवर सिंह
राजकूल - 093010-60305 ० मुकेश जैन - 093013-00030 ० रूपेश
लक्ष्मी - 099267-76821 ० जे.एल. नरवरिया - 098263-85148
० स्वामीवल्य निखिल - 098260-91488 ० आनन्द शर्मा - 098273-
10811 ० दिलीप कुमार वैध - 098270-62400 ० रामसिंग राजपूत
- 094254-00822 ० राजेश शर्मा - 098267-06458 ० मांगीलाल
देवडा - 098939-26821 ० ललित जोशी - 093260-88920

○ प्रीतमसिंह राजपूत - 093295-87389 ○ राकेश यादव - 098260-52059 ○ अर्जुन सिंह - 098260-22297 ○ डॉ. राजेन्द्र शर्मा - 099266-68712 ○ नितिन नंदवाल - 099072-48256 ○ संतोष दयमा - 098938-93838 ○ गणेन्द्र कौशिक - 098273-48100 ○ भगतसिंह नरवरिया - 093004-96135 ○ कुंवरजी बिजोलिया - 098273-17510 ○ रघुराजसिंह मेहदेले - 0731-2571847 ○ सुरजसिंह सूर्यवंशी - 099264-50278 ○ गंगाप्रसाद जायसवाल - 093294-21573 ○ संजय साहुकार - 093013-94303 ○ विजय दीक्षित - 099260-84405 ○ कु. डिम्पल मलिक ○ शांतिलाल जोशी - 0731-2497782 ○ डॉ. आर.एल.मिश्रा - 098272-23168 ○ प्रतापसिंह वर्मा - 093032-35147 ○ अमित शर्मा - 098266-62425 ○ सुभाष थौलपुरे - 098260-62121 ○ अशोक वर्मा - 094253-46195 ○ धार: बागसिंह - 098268-60921 ○ जितेन्द्र सिंह पंवार - 099776-49501 ○ शोभाराम पाटीदार - 098935-01090 ○ भगवान पाटीदार - 07297-266238 ○ डॉ. वाम.के.गाँवशिन्दे - 099260-75943 ○ रमेश चौहान - 099775-74312 ○ श्यामलाल गावस्कर - 099072-35002 ○ गुलाब सिंह दरूबार - 098931-94068 ○ शिवलाल पाटीदार - 07297-266238 ○ एल.डी.राणावत - 07292-236861 ○ देवास: प्रवीण सिंह जादौन - 099260-60642 ○ संतोष पाटीदार - 099931-33870 ○ अ.स.सी.रघुवंशी - 07272-221523 ○ ब्रजमोहन चौहान - 094259-37279 ○ मांगीलाल रामपुरिया - 07272-220479 ○ बापूसिंह अमोदिया - 098268-53598 ○ बृजमोहन भाटिया - 098273-79716 ○ राजेन्द्र यादव - 07272-227640 ○ पियुष शर्मा - 098930-24716 ○ विमल चौधरी - 098930-69761 ○ रमेश चौहान - 099934-63737 ○ रामनारायण लुनिया - 098265-11101 ○ प्रवीण जाट - 099770-51225 ○ पुखराज प्रजापति - 093016-10370 ○ मनोहरलाल देतलिया - 099260-13320 ○ अंकरेश्वर: गैरवसिंह दरबार - 099936-84371 ○ स्वामी सचिंदानंद - 099260-69655 ○ शिवलाल ठेपड़ा - 099260-54626 ○ खण्डवा: मनोज तिवारी - 098933-38539 ○ जितेन्द्र सिसोदिया - 098273-94688 ○ राजेश बिल्लौर - 098936-18026 ○ कमलसिंह चौहान - 093011-09020 ○ बड़वानी: राजेन्द्र सिंह चौहान - 094250-90233 ○ विजय जोशी - 098939-20977 ○ ओमप्रकाश शर्मा - 07290-223766 ○ एल.डी.गिरासे - 07290-224028 ○ मोहन निगम - 098937-22585 ○ सुशील कुमरावत - 098933-38253 ○ आर. के. भण्डारी - 094245-33603 ○ दयाराम पाटीदार - 099931-15873 ○ शिव राठौर - 098936-18728 ○ सुरेश खाण्डे - 099931-20912 ○ राकेश शर्मा - 094254-15460 ○ भूवनेश्वर कानूनगो - 094254-50074 ○ अभय जोशी - 094250-90191 ○ पं. महेश शर्मा ○ कैलाश चन्द्र जोशी - 094254-50211 ○ संजय ठक्कर - 094810-77556 ○ कुक्षी: दीपक पाण्डे - 097550-69191 ○ महेश 'निखिल' - 098938-75121 ○ विवेक सिसोदिया - 098938-01913 ○ बाबूलाल हम्मद - 093298-83696 ○ अमरसिंह सिसौदिया - 098930-69680 ○ बाबूलाल मोटा - 098934-53464 ○ दिनेश एस्के - 098935-41294 ○ राजेश भायल - 098933-83700 ○ नारायण प्रसाद शर्मा - 099813-93072 ○ महेन्द्र प्रताप सिंह - 098934-28703 ○ स्वयं प्रकाश कुशवाह - 099933-56659 ○ विनोद राय - 098939-05725 ○ दीपक जोशी - 098935-41220 ○ राजाराम कोचले - 093011-49520 ○ निर्मल जाट पुरिया - 098939-65151 ○ मधुभाई भार्गव - 234183 ○ सरपंच निर्भयसिंह चौहान ○ सरपंच जितेद्र बघेल ○ डोगरभाई पाटीदार - 07297-266231 ○ पुरुषोत्तम पाटीदार - 07297-260022 ○ कैलाश पाटीदार - 098272-72649 ○ देवेन्द्र व मनीष शर्मा - 07294-262209 ○ बलवाड़ी: सचिन पालीवाल - 07281-262404 ○ गौतम पंवार - 094248-79781 ○ नारायण - 094245-85491 ○ मोहन वाघ - 094248-41165 ○ हितेश कानूनगो (सेधवा) - 099260-68925 ○ मन्दसौर: भंवरलाल मांगरिया - 094240-41915 ○ गणेश राम आर्य - 098266-37925 ○ संजय जैन - 098262-67781 ○ दिलीप सिसौदिया - 097541-67735 ○ खरगोन भैयालाल मांगरिया - 094240-41915 ○ रितेश कृष्ण पाटीदार - 099260-30578 ○ के.एल.वर्मा - 099267-37450 ○ उम्मेद सिंह जादौन - 098263-94727 ○ धन्नालाल प्रजापति - 094240-97758 ○ जगदीश जुनवाल - 093296-71095 ○ शैलेन्द्र महाजन - 098936-18606 ○ सुनील बिरला - 098268-23192 ○ त्रिलोक सिंह पंवार - 099771-13078 ○ धामनोद: आर.पी.सिंह - 098268-43051 ○ धनश्याम पाटीदार - 094240-02591 ○ करण सिंह सोलंकी - 099931-14293 ○ एन.के.सिजेरिया - 094240-11686 ○ शांति लाल शर्मा - 099260-75876 ○ महेश्वर: ओमप्रकाश सोनी - 07283-273298 ○ ललित जायसवाल - 093009-28990 ○ कमलेश पाटीदार - 098263-92535 ○ भवानी राम पाटीदार - 099267-32705 ○ कमलेश डालके - 098939-52429 ○ उज्जैन: भगवान सिजेरिया - 099931-48234 ○ दीपक कोडपे - 098930-68968 ○ डॉ. मनीष कुरील - 093016-15909 ○ बड़वाह: नरेन्द्र सोलंकी - 099260-19352 ○ बलराम शाह - 098265-26601 ○ डॉ. रामकरण सोनारे - 098263-83192 ○ दिम्मत पटेल - 098265-14074 ○ मुकेश पटेल - 099776-65056 ○ चिन्ताराम पटेल - 099260-94603 ○ अरुण मोरानिया - 098267-84151 ○ मनीष नरीया - 098268-62231 ○ आलिराजपुर: ओमप्रकाश थेपडिया - 093008-51586 ○ यतिन्द्र वाघेला - 94254-85635 ○ लक्ष्मीनारायण गौराना - 094254-80846 ○ महेन्द्र राठौर - 099989-93893 ○ सुभाष मालवीया - 094254-85757 ○ रमेश पंवार - 200084 ○ रमेशचन्द्र बारिया ○ गोपाल

वर्मा ○ कैलाश चन्द्र शर्मा ○ लोकेन्द्र परिहार - 094240-63592 (जानीत) - 099176-66670 ○ ईश्वर दयाल (गंगोह) - 094127-
 ○ देवेन्द्र किराडे - 07394-265011 ○ राजेश वारिया - 07394-265010 ○ बाग: सरपंच पर्वतसिंह मण्डलोई - 094245-77680 89280 ○ ईश्वर सिंह ○ डॉ. मदन ○ श्रीपाल निखिल - 097588-
 ○ यशवंत विश्वकर्मा - 094245-79936 ○ अशोक पंवार - 094245-98726 ○ सत्यनारायण राजावत - 267245 ○ जितेन्द्र सेन 49813 ○ रम याज्ञ (गंगोह) - 097586-08459 ○ डॉ. रणकुमार -
 ○ नरेन्द्रसिंह सोलंकी - 094240-83804 ○ डेहरी: नरेन्द्र वर्मा - 094129-04612 ○ सुश्री हिली कपूर - 094123-04116 ○ मनोज
 07297-267595 ○ टिकम प्रजापति - 07297-267616 ○ डॉ. दीपक वर्मा - 094108-88757 ○ बास्तबल सिंह - 097194-72096 ○ विकास
 पंवार - 094245-48302 ○ सुखलाल सोलंकी - 098276-55655 नगर: डॉ. जल्जा कुमार चौधे - 094120-32833 ○ सुधीर गुप्ता -
 ○ दीपक भोपे- 07297-267404 ○ लैंगसरी: महेश मालवीया - 094115-87585 ○ नाथेश्याम कर्णवाल - 01360-222406 ○ हरिद्वार:
 093011-70241 ○ अखिलेश पंवार - 094245-80244 ○ रामसिंह एस्के - 098272-09991 ○ महिपाल मालवीया - 07297-267586 08188 ○ जेनेक सुदेश चन्द्र कैनीवाल - 094127-49214 ○ यमुनानगर:
 ○ सरपंच प्रेमसिंह एस्के - 99812-67129 ○ पूरा: राधेश्याम पाटीदार - 07297-266251 ○ रजनीश पाटीदार - 094254-50489 हरिजा चड्ढा - 0983548-45858 ○ श्याम सुन्दर गंभीर - 098120-42738
 ○ कुलदीप पाटीदार - 094245-98622 ○ राजेश प्रधान - 099776-47861 ○ नारायण सिंह सक्तावत - 260324 ○ इन्द्रसिंह सोलंकी 098990-25416 ○ युज्ञाव: प्रद्वन शर्मा - 099582-98837 ○ शाहबाद:
 - 07397-288092 ○ सरदारपुर: शशीबाला खराड़ी - 099771-75030 ○ सावीत्री बाई गौराना ○ कु. कविता गौराना ○ नरसिंहगढ़: अशोकर न्युटन - 094160-84960 ○ सरहिन्द: अशोक शर्मा
 ○ अरुण कुमार मेहता - 094254-45137 ○ गोविंद सिंह - 094254-45073 ○ जगदीश गुप्ता - 98269-97723 ○ मांगीलाल शर्मा - 09896-51405 ○ शाहजहांपुर:
 094256-27909 ○ झाबुआ: कु. प्रियंका गुप्ता - 07392-244175 ○ कस्तल: लक्ष्मीन्दर अरोड़ा - 098236-50378 ○
 ○ मुकानसिंह सोलंकी - 07392-24477 ○ सत्यवीर वसुनिया - 094250-02418 ○ मनोज अग्रवाल - 098276-78341 10 अगस्त 2008
 ○ आई.डी.कुमरे - 094253-04226 ○ जे.एल.मवासे - 094253-61761 ○ विदिशा: एन.के.श्रीवास्तव - 094251-49852
 ○ होशंगाबाद: सरनामसिंह ठाकूर - 094256-87263 ○ भोपाल: मनिन्द्र पाण्डे - 098934-24249 ○ आर.एन.वर्मा - 093031-08299
 ○ आई.एम. पदाम - 099939-52682 ○ मोहन भाई - 098276-57066 ○ लक्ष्मीन्दर समाज हाँल, कस्तूरबा हाँस्पिटल के
 शिविर: राजपूत समाज हाँल, कस्तूरबा हाँस्पिटल के
 पास, वलसाड (गुजरात)
 आनेक: जेनेक पंचाल - 099988-74612/93762-25004 ○ शंकर
 भाई प्रजापति - 099781-96517 ○ जयाबेन भंडारी - 093279-51341 ○ युनन भाई भंडारी - 098241-97278 ○ जयेश पंचाल -
 094274-79275 ○ जयेश बलसारा - 098984-77861 ○ संजय शर्मा - 098241-31909 ○ अखिलेश सिंह - 093774-16105 ○ ईश्वर आर्ट
 - 098252-62272 ○ प्रवीण भाई भंडारी - 093748-66635 ○ पी. जे.

◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆
27 جولائی 2008

शाक्तभूती शिवत्व साधना शिविर, सहारनपुर

शिविर: तैश्य अग्रवाल धर्मशाला, गौशाला रोड, पुल
खुमराजान, सहारनपुर (उ.प्र.)

आयोजक: सहारनपुर : प्रवीण शर्मा - 094560-25752 ○ गैरव
सागर - 092195-00297 ○ अनिल गुप्ता - 094112-96139
○ राजकुमार शार्मा - 093193-99296 ○ रामपाल - 0132-2662075
○ विकास सिंह - 099271-79067 ○ भूवनेश्वर दीक्षित - 093581-
20587 ○ मांगेराम - 099271-20654 ○ शिवेन्द्र - 097196-19620
○ विकास धीमान (नानौता) - 097196-06142 ○ गोवर्धन दास

प्रा-०९६७१७-२०३६८ ○
◆◆ ◆◆ ◆◆ ◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆
27 अगस्त 2008
कृष्ण घैतन्य लक्ष्मी साधना शिविर, आगरा
शिविर स्थल : महाराजा अग्रसेन भवन, लोहा
मण्डी, शाहगंज मार्ग, आगरा

27 अगस्त 2008

जून' 2008 संच-तंत्र-यंत्र विज्ञान '86'

ज्ञान और वेतना की अनमोल कृतियां

पूज्य गुरुदेव 'डॉ. नारायण दत श्रीमाली जी'

द्वारा रचित ज्ञान की गरिमा से युक्त
सम्पूर्ण जीवन को जगमगाने वाली
अनमोल कृतियां



मूलाधार के भहस्त्र तक	150/-
फिक दूक ऊहीं पायल खबनछी	150/-
गुरु गीता	150/-
ज्योतिष औक आल निर्णय	150/-
हक्तवेद्वा विज्ञान औक पंचागुली ज्ञाना	120/-
निबिलेश्वरवानन्द शतवन	120/-
विश्व ऊ श्रेष्ठ दीक्षाएं	96/-
ध्यान धारणा औक ज्ञानाधि	96/-
निबिलेश्वरवानन्द भहस्त्रनाम	96/-
विश्व ऊ औकिन्द्र ज्ञानाएं	96/-
श्री निबिलेश्वर शतानम्	75/-
लक्ष्मी प्राप्ति	60/-
अमृत छुँद	60/-
निबिलेश्वरवानन्द चिन्तन	40/-
निबिलेश्वरवानन्द वहक्य	40/-
किञ्चाश्रम ऊ योगी	40/-
प्रत्यक्ष हनुमान किञ्चि	40/-
मातंगी ज्ञाना	40/-
भैक्ष ज्ञाना	40/-
खण्डिम ज्ञाना भूत्र	40/-



→ → → → → → → → सम्पर्क :- ← ← ← ← ← ← ←
मंत्र-यंत्र-तंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)

फोन : 0291-2432209, 2433623, फैक्स : 0291-2432010



COLLECTION OF VARIOUS

- HINDUISM SCRIPTURES
- HINDU COMICS
- AYURVEDA
- MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

[creator of
hinduism
server]

रजिस्ट्रेशन नं- 35305/81

A.H.W

With Registrar Newspapers of India
Posting Date 06-07 every Month

Postal No. RJ/WR/19/65/2006-08

Licence to post Without pre payment

Licence No. RJ/WR/PP04/2006-08

माह : जुलाई में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

पूज्य गुरुदेव निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे
व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों
पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।
निर्धारित दिवसों पर यह दीक्षाएं प्रातः 11 से 1 बजे के
मध्य तथा सायं 5 बजे से 7.30 बजे के मध्य प्रदान की जाएंगी।

स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)

दिनांक
11-12-13 जुलाई

वर्ष - 28

स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)

दिनांक
25-26-27 जुलाई

अंक - 06